इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

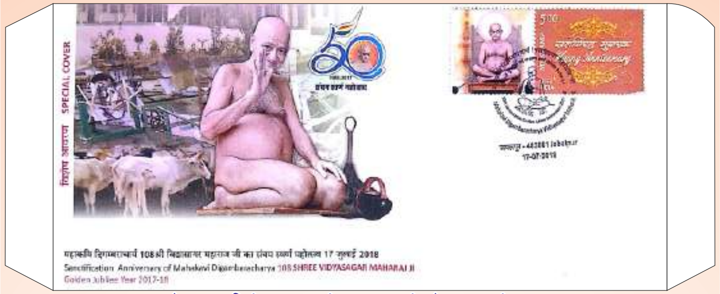

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		फरवरी 2022	
16	बुधवार	पूर्णिमा	आश्लेषा
17	गुरुवार	प्रतिपदा	मघा
18	शुक्रवार	द्वितीया	पूर्वाफाल्गुनी
19	शनिवार	तृतीया	उत्तराफाल्गुनी
20	रविवार	चतुर्थी	हस्त
21	सोमवार	पंचमी	चित्रा
22	मंगलवार	षष्ठी	स्वाती
23	बुधवार	सप्तमी	विशाखा
24	गुरुवार	अष्टमी	अनुराधा
25	शुक्रवार	नवमी	ज्येष्ठा
26	शनिवार	दशमी/एकादशी	मूल
27	रविवार	द्वादशी	पूर्वाषाढ
28	सोमवार	त्रयोदशी	उत्तराषाढ़ श्रवण
		मार्च 2022	
1	मंगलवार	चतुर्दशी	धनिष्ठा
2	बुधवार	अमावस	शतभिषा
3	गुरुवार	प्रतिपदा	पूर्वाभाद्रपद
4	शुक्रवार	द्वितीया	उत्तराभाद्रपद
5	शनिवार	तृतीया	रेवती
6	रविवार	चतुर्थी	अश्विनी
7	सोमवार	पंचमी	भरणी
8	मंगलवार	षष्ठी	कृत्तिका दि./रा.
9	बुधवार	सप्तमी	कृत्तिका
10	गुरुवार	अष्टमी	रोहिणी
11	शुक्रवार	नवमी	मृगशिरा
12	शनिवार	नवमी	आर्द्रा
13	रविवार	दशमी	पुनर्वसु
14	सोमवार	एकादशी	पुष्य
15	मंगलवार	द्वितीया	आश्लेषा

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः फरवरी-21,24 मार्च-4,10,14
मशीनरी प्रारंभ : फरवरी-21,24 मार्च-14
वाहन खरीदनेः मार्च-5,14

तीर्थंकर कल्याणक

20 फरवरीःभगवान पद्मप्रभ मोक्ष कल्याणक
22 फरवरीःभगवान सुपार्श्वनाथ ज्ञान कल्याणक
23 फरवरीःभगवान सुपार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक
23 फरवरीःभगवान चन्द्रप्रभ ज्ञान मोक्ष कल्याणक
25 फरवरीःभगवान पुष्पदन्त गर्भ कल्याणक
26 फरवरीःभगवान आदिनाथ ज्ञान कल्याणक
26 फरवरीःभगवान श्रेयांसनाथ जन्म तप कल्याणक
27 फरवरीःभगवान मुनिसुव्रतनाथ मोक्ष कल्याणक
01 मार्चः भगवान वासुपूज्य जन्म तप कल्याणक
05 मार्चः भगवान अरनाथ गर्भ कल्याणक
07 मार्चः भगवान मल्लिनाथ मोक्ष कल्याणक
10 मार्चः भगवान संभवनाथ गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

03 मार्चः सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष प्रारंभ
10 मार्चः रोहिणी व्रत
10 मार्चः अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ

सर्वार्थ सिद्धि

20 फरवरी : 06/55 बजे से 16/42 बजे तक।
23 फरवरी : 14/41 बजे से ता. 24-13/31 बजे तक।
27 फरवरी : 08/49 बजे से 28-29/19 बजे तक।
04 मार्च : 25/52 बजे से 30/45 बजे तक।
06 मार्च : 06/44 बजे से 27/51 बजे तक।
08 मार्च : 06/42 बजे से ता.9-30/40 बजे तक।
13 मार्च : 20/06 बजे से ता. 14-22/08 बजे तक।
15 मार्च : 06/36 बजे से 23/33 बजे तक।

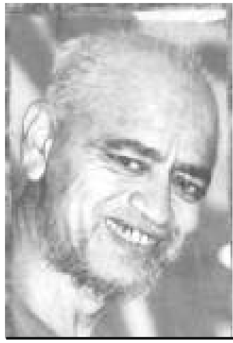

संस्कार सागर

• वर्ष : 24 • अंक : 275 • फरवरी 2022
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2078 • शक सं. 1942

लेख

• समयसार में प्रतिपादित जीव तत्व का वैशिष्ट 08
• और हम खड़े-खड़े- कारवां गुजर गया गुबार देखते रहे 10
• नरक गति में चौबीस स्थान विवेचना 15
• आचार्य एलाचार्य बालाचार्य और पट्टाचार्य 17
• नारी शिरोमणि काललदेवी के बाहुबली 19
• भगवज्जिनसेनाचार्य एवं उनका पार्श्वाभ्युदम् 21
• तपस्वी आचार्य वर्धमान सागर 36
• जैन न्याय परम्परा के संवाहक आचार्य 39
• वरिष्ठ नागरिकःमृत्यु का इंतजार करना मूर्खता है 41
• चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर जी की प्रथम सम्मेदशिखर यात्रा 47
• गागर में सागर का आभास कराती- बड़े भैया की पाती 51
• जैन समाज में तालिबानी कौन ? 54
• पित्ताशय पित्त पथरी शूल के नियंत्रण उपाय 56
• नियमसागर में प्रतिपादित जीव तत्व 60

बाल कहानी

• भूल स्वीकार करो और लौट चलों 59

कविता

• देवता 09
• जिंदगी की सच्चाई 14
• आदीवर के द्वारे 34
• हे महासंत विद्यासागर 42
• संयम स्वर्ण महोत्सव 49
• जीवन का सार 53

कहानी

• सोने की बाली 43

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
चलो देखें यात्रा : 20 • आगम दर्शन :25 • माथा पच्ची : 26 • पुराण प्रेरणा : 27 • कैरियर गाइड : 28
दुनिया भर की बातें : 29 • इसे भी जानिये: 34 •दिशा बोध : 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 39
वरिष्ठ नागरिक : 41 • हमारे गौरव : 50 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 62 • समाचार : 63

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का

बाकी सदस्यता शुल्क

जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 00410501357S (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर – 10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों सुप्रीम कोर्ट ने अतिक्रमण पर चिंता करते हुये कहा कि हमारे बड़े शहर झुग्गी बस्तिओं में परिवर्तित होते जा रहें हैं इससे सहमत होना कठिन है। अतिक्रमण का ये सिलसिला 75 वर्षों से लगातार चलता आ रहा है। यह एक कष्ट प्रद कहानी हैं हमारे नीति निर्माता महानुभावों को समझना होगा कि शहरों के संचालन में सहायक बनने वाली इस आबादी के लिये आवासीय योजनायें बनायें। आवासी योजना के बिना झुग्गी बस्तियों से मुक्ति मिलना संभव नहीं हैं अधिकारियों के भ्रष्टाचार और प्रशासन की गलत नीतियों से तथा राजनेताओ के तुष्टकरण नीति भी शहरों को झुग्गी बस्तियों को बदलने में अपनी भूमिका निभाती हैं।

श्री राजेश जैन इंदौर

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों से जगह-जगह धर्म के नाम पर भीड़ हिंसा कर चुकी हैं पाकिस्तान में भीड़ ने एक श्री लंका के नागरिक की हत्या कर दी। ईस निन्दा का यह बहुत बड़ा दुरुपयोग ही हुआ है। भारत में भी कई बार धर्म के नाम पर भीड़ हिंसा को उतारू हो जाती है। जातिवाद और पंथवाद के नाम पर लोग कट्टर बन जाते हैं परन्तु विचारणीय ये है कि क्या धर्म हमें हिंसा का पाठ पढ़ाता है ? जब तक हम दिखावा करते रहेंगे तब तक धर्म के नाम पर हिंसा रोकना कठिन काम होगा। सभी धर्मों में कुछ न कुछ प्रेरणात्मक सूत्र अवश्य होते हैं। हमें अपने धर्म के प्रति आस्था रखना चाहिये किन्तु किसी दूसरे धर्म का उपहास नहीं करना चाहिये किसी की श्रद्धा का मजाक नहीं बनाना चाहिये सब धर्मों की अपनी अपनी उपासना पद्धति होती है। एक ही धर्म में भी कई उपासना पद्धति होती है। उपासना पद्धति देखी जाती है उपासना पद्धति पर आक्षेप नहीं करना चाहिये सामाजिक सौहार्द का यही आधार है।

श्री अभिनव जैन, अहमदाबाद

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के विगत अंक में भारत के संविधान में संस्कृति और शांति के संदेश शीर्षक से लेख पढ़ा। लेख की विषय वस्तु देखकर हृदय से लेखक को धन्यवाद भारतीय संविधान की मूल प्रति में अनेक प्रकार के सांस्कृतिक चित्र दिये गये उनमें भगवान महावीर का भी चित्र बनाया गया इस चित्र को देखकर सभी भारतीय जन यह तय करते हैं कि भगवान महावीर का संदेश संवैधानिक पृष्ठ भूमि में अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है संविधान निर्माताओं ने भगवान महावीर के संदेशों को भारतीय संविधान में समाहित करते हुये समानता और करूणा को आत्मसात करके अहिंसा की भावना का सम्मान किया है यदि यह अहिंसा की भावना व्यावहारिक रूप से आ जाये तो भारत फिर से विश्व गुरु बन जायेगा।

श्रीमती रजनी जैन, दिल्ली

• सम्पादक महोदय, पिछले अंक में संस्कार सागर पत्रिका ने डॉ. दरबारी लाल कोठिया पर केन्द्रित एक लेख प्रकाशित किया प्रस्तुत लेख में दरबारी लाल कोठिया के उस व्यक्तित्व को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जिसे लोग भूल चुके थे माननीय डॉ. दरबारी लाल कोठिया का जैन धर्म के संबंध में महान योगदान है जिसे भुला देना हमारी कृतघ्नता होगी । लेकिन संस्कार सागर ने दरबारी लाल कोठिया का लेख प्रकाशित करके अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है ऐसे ही अन्य जैन विद्वानो का संस्कार सागर लेख प्रकाशन करती रहेगी तो भूले बिसरे सांस्कृतिक पक्ष भी सजीव हो जायेंगे।

श्रीमती पुष्पा जैन, राहतगढ़

भक्ति तरंग
देखो भाई आतमराम

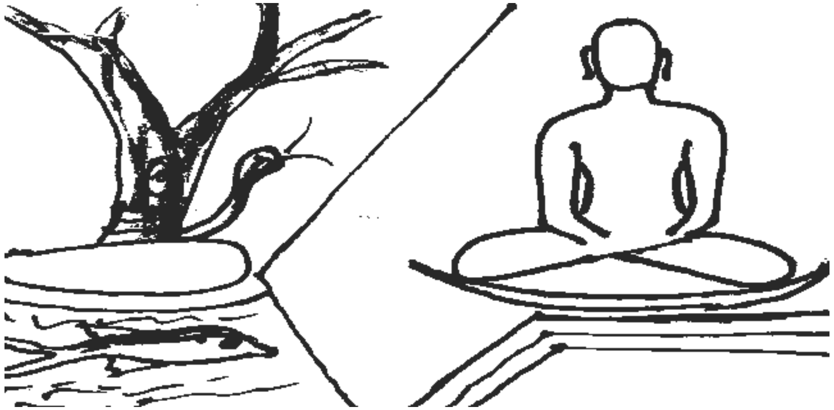

देखो भाई आतमराम विराजै ।

छहों दरब नव तत्व ज्ञेय हैं आप सुज्ञायक छाजै ।
अर्हत सिद्ध सूरि गुरु मुनिवर,पाँचौ पद जिहिमाहीं ।
दरसन ज्ञान चरन तप जिहिमें,पटतर कोऊ नाहीं ।।1।।
ज्ञान चेतना कहिये जाकी, बाकी पुद्गल केरी ।
केवलज्ञान विभूति जासुकैं,आन विभौ भ्रमचेरी ।।2।।
एकेन्द्रिय पंचेन्द्री पुद्गल,जीव अतीन्द्री ज्ञाता ।
द्यानत ताही शुद्ध दरब को,जानपनो सुखदाता ।।3।।

हे साधक ज्ञाता दृष्टा होकर अपने स्वरूप को देखो। देखो आत्मा किस प्रकार विराजित है। यह सबका ज्ञायक हैं, सबको जानने वाला है। छह द्रव्य व नौ तत्व सब इसके ज्ञेय हैं।

अर्हत सिद्ध आचार्य उपाध्याय व साधु ये पांच पद आत्मा में ही हैं इनमें दर्शन ज्ञान आचरण व तप की उत्कृष्ट स्थिति होती है। ये अतुल्य हैं इनका कोई दूसरा प्रतिरूप नहीं है।

इस आत्मा में तो केवलज्ञान चेतना ही है, जो इसकी सम्पदा है इसके अतिरिक्त शेष सब तो पुद्गल है। पुद्गलजन्य है। इन्हीं के चरणों में केवलज्ञान रूपी संपदा लौटती है। यह विद्या अन्य जनों में नहीं है अर्थात् अन्य जनों में तो इसका भ्राम रूप ही है अर्थात् इसकी समझ ही भ्रमपूर्ण है।

चाहे एकेन्द्री से पंचेन्द्री तक हों, चाहे पुद्गल हो, इन सबको ज्ञाता तो केवल जीव है, जो अतीन्द्रिय ज्ञान का ज्ञाता है द्यानतराय कहते हैं कि ऐसे ही शुद्ध जीवद्रव्य के स्वरूप को जानो। उसका बोध ही सब सुखों का दाता है। सुख प्रदान करने वाला है।

संस्कार प्रवाह

महिमा कुंडलपुर की

आचार्य यतिवृषभ जी ने शताब्दियों पूर्व कुंडलपुर से मोक्ष पधारे सिद्ध प्रभु श्रीधर केवली का वर्णन नाम उल्लेख किया है। कुंडलपुर मध्यप्रदेश के दमोह जिले का एक प्रसिद्ध तीर्थ है। यह तीर्थ हजारों वर्षों से विद्यमान है। महाराज छत्रसाल ने इस तीर्थ का जीवन उद्धार करके जैनों के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया था। जैन धर्म और दर्शन के प्रति अपनी अगाध आस्था व्यक्त की थी। कुंडलपुर के बड़े बाबा के रूप में चौथी शताब्दी के गुप्तकालीन सम्राटों द्वारा निर्मित एक अति मनोज्ञ मूर्ति विराजमान है। यह बड़े बाबा की मूर्ति जन जन के हृदय में अपना अलग ही आकर्षण बनाये हुये है। यह तीर्थ संतों की साधना का केन्द्र रहा है, परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी का जब सन् 1976 में प्रथम पदार्पण और वर्षायोग स्थापित हुआ तब से यह तीर्थ निरंतर प्रगति कर रहा है।

बड़े बाबा आदिनाथ भगवान की मूर्ति और मंदिर की जो भव्यता आज हम सब लोगों को दिखाई दे रही है वह परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम पुण्य प्रताप का परिणाम है तथा उनकी तपस्या से ही यह कार्य फलीभूत हुआ। उनके दृढ़ संकल्प से ही बड़े बाबा की मूर्ति नये मंदिर में अनंत संघर्ष के उपरांत विराजमान हुई। यह आचार्य श्री का तीर्थों के प्रति जो वात्सल्य है उसका ही परिणाम है कि यह महान कार्य मूर्त रूप ले रहा है। तीर्थों के प्रति वात्सल्य उनके संरक्षण और सुरक्षा का शुभ भाव परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की चेतना में जो प्रगट हुआ है वह हम सब भव्य जीवों के अति पुण्य का प्रकटीकरण है।

मार्च-अप्रैल माह में होने वाले पंचकल्याणक में संपूर्ण भारत की जैन समाज का संगठित रूप कुंडलपुर में परिलक्षित होगा तथा परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का स्वप्न वर्षों बाद साकार रूप लेगा। इस पंचकल्याणक का आयोजन वे ही देख पायेगें जिन्होंने पूर्व जन्म में अत्यंत पुण्य का संचय किया होगा, यह पंचकल्याणक जहां साधु समागम का ऐतिहासिक उदाहरण बनेगा वहीं पर कई पीढ़िया इस पंचकल्याणक को वृहद धार्मिक आयोजन के रूप में सैकड़ों वर्ष तक याद करती रहेंगी कोरोना के विषम काल में भी यह आयोजन होना अपने आप में सबसे बड़ा अतिशय है किन्तु हम श्रावकों के भी कुछ कर्त्तव्य हैं उन कर्त्तव्य में कोविड-19 के नियमों की गाईडलाइन का पालन करना मास्क लगाना, सोशल डिस्टेंस तथा वैक्सीन लगवा कर ही आयोजन में जाना हमारी अपनी स्वय की व्यवस्था है इसका पालन करने से जहां हमारी खुद की सुरक्षा होगी वही धर्म प्रभावना भी अबाधित होगी।

समयसार में प्रतिपादित जीव तत्व का वैशिष्ट

❊ ऐलक सिद्धांतसागर जी महाराज ❊

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने समयसार ग्रंथ की रचना को आगे बढ़ाते हुये **जीवतत्व** पर विचार किया है उन्होंने सर्वप्रथम शुद्धनय से जीव का स्वरूप निश्चित किया है तदोपरांत अप्रतिबुद्ध और प्रतिबुद्धजीव का स्वरूप निर्धारित किया है आत्मा निश्चय से निजभाव तथा व्यवहार से परभाव का कर्ता है यह व्याख्या सम्पन्न करने के उपरांत संमूढ़ और असंमूढ़ जीव की व्याख्या की है स्तवन की मीमांसा करते हुये आचार्य श्री ने शिष्य की आशंका को समाधान में बदलते हुये कहा है कि व्यवहार नय से शरीर का स्तवन करने से आत्मा का स्तवन होता है किन्तु यह निश्चय की दृष्टि से व्यवहार स्तवन ठीक नहीं है एवं ज्ञान ही प्रत्याख्यान है इस तत्त्व को उल्लेख सदृष्टांत पूज्यपाद कुन्दकुन्द देव ने प्रस्तुत किया है अंत में आचार्य श्री ने शुद्धात्मा को उपादेय बताते हुये जीव अधिकार का उपसंहार किया है जीव अधिकार में कुल मिलाकर अट्ठाईस (28) गाथायें हैं।

शुद्धनय से आत्मा को बन्ध रहित, पर के स्पर्श से रहित, अन्यत्व चलाचल विशेष अन्य के संयोग से रहित अवलोकन करता है वह शुद्धनय हैं शुद्धनय का विषय शुद्धात्म होने से और शुद्ध अभिप्राय रूप परिणित होने से उस पुरुष को ही शुद्धनय समझना चाहिये ऐसा जीव संयमी होता है।

जो आत्मा को अबद्धस्पृष्ट अनन्य अविशेष रूप से अनुभव करता है वह द्रव्यश्रुत और भावश्रुत मय संपूर्ण जिनशासन का जानकार होता है ऐसी शुद्धात्मा को जानने वाला मिथ्यात्व रागादि विभाव भावों को दूर करके शुद्धात्मा की भावना करता है। आचार्य जयसेन जी ने अपनी टीका में स्पष्ट किया है कि मिथ्यात्व शब्द से दर्शन मोह और रागादि शब्द से चारित्र ग्रहण करना चाहिये ऐसा सर्वत्र अर्थ ग्रहण करना उचित है।

आत्मा में ही मेरे दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्रत्याख्यान संवर और ध्यान के समय में आत्मा ही आत्मा होता है तथा ज्ञानी इस प्रकार विचार करके शुद्धात्मा की भावना करता है इसी आशय को आगे बढ़ाते हुये आचार्य अमृतचन्द्र देव ने शुद्धात्म तत्व की विशेष व्याख्या की है किन्तु उनकी टीका के अंतर्गत **आदा खुमज्झणाणे** यह गाथा ग्रहण नहीं की गई है किन्तु जयसेन आचार्य श्री ने अपनी संक्षिप्त टीका लिखते हुये निर्विकल्प समाधि पर सामायिक और परम ध्यान को योग का पर्यायवाची माना है तथा यह कहा है कि उस पर समाधि भोगा-कांक्षा निदानबंध, शल्य आदि भाव से शुद्धात्मा का ध्यान करने पर सम्यग्ज्ञान आदि की प्राप्ति होती है।

भेदाभेद रत्नत्रय की विवेचना- आचार्य कुन्दकुन्द देव ने दर्शन ज्ञान चारित्र को साधक भाव के रूप में स्वीकार किया है उन्होंने कहा है साधु को दर्शन-ज्ञान चारित्र का हमेशा सेवन करना चाहिये क्योंकि ये तीनों निश्चय नय से आत्मा के ही जानो ? अपनी इसी बात को पुष्ट

करने के लिये पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि जैसे कोई भी पुरुष धन प्राप्त करने के लिये राजा को जानकर उसकी श्रद्धा करता है उसका अनुचरण या उसकी सेवा करता है ठीक इसी तरह से मोक्ष के इच्छुक पुरुष को जीव रूपी राजा को जानना चाहिये फिर उसी का श्रद्धान करना चाहिये फिर उसी का अनुचरण करना चाहिये।

आचार्य अमृतचन्द्र देव ने इन तीन गाथाओं की टीका करते हुये कहा है कि यह आत्मा जिस भाव से साध्य और साधन हो उसी भाव से वह सेवन करने योग्य है इस आत्मा का व्यवहार से दूसरों को भी उपदेश करना चाहिये।

आचार्य जयसेन जी ने अपने विशेष अर्थ को टीका में समाहित करते हुये कहा हैं पंचेन्द्रियों के विषय और क्रोधादि कषायों से रहित निर्विकल्प समाधि है, उसमें ही सम्यग्दर्शन ज्ञान और चारित्र ये तीनों होते हैं। हम संसारी आत्माओं को भेदाभेद रत्नत्रयात्मक भावना रूप परमात्म चिंतन के द्वारा इष्ट सिद्ध हो जाता है फिर इधर-उधर के विकल्प जाल में फंसने से क्या प्रयोजन है अतः मुमुक्षुजन को संसार की सारी बातें भूलकर केवल एक शुद्धात्मा की बात जानना पहचानना चाहिये।

कविता

देवता

❊ श्रीमती सुनीता कठरया, बं

आपके गुणों ने मुझे श्रद्धा दी।
मैनें भावों की अंजुलि भरकर
अर्घ्य समर्पण कर दिया।
किसी को कुछ भी पता न चला
क्या आपने मुझको दिया
क्या मैंने आपको दिया।
यह कोई भौतिक पदार्थ नहीं
किसी को नजर में आ नही सकता।
भक्ति श्रद्धा प्रेम विश्वास है
साधारण नहीं कुछ खास है।
मोल ये बिकता नहीं
तराजू पर तुलता नहीं
जिस हृदय में है समर्पण बस उसी को
द्वार ये सबके लिये खुलता नहीं
समर्पण स्वयं को कर देने वाला
भवों भवों में रूलता नहीं।

और हम खड़े-खड़े- कारवां गुजर गया गुबार देखते रहे

❊ डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर ❊

आज प्रसिद्ध हिंदी कवि गोपालदास नीरज की एक कविता बहुत याद आ रही है, उसकी प्रारंभिक पंक्तियाँ निम्न प्रकार हैं।

स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से, लुट गये सिंगार सभी, बाग के बबूल से।
और हम खड़े-खड़े बहार देखते रहे, कारवां गुजर गया, गुबार देखते रहे।

एक समय था जब गिरनार मात्र जैनों का तीर्थ हुआ करता था, अब वह सबों का हो गया, हाल ही में (दिनांक 24 अक्टूबर 2020 को) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गिरनार पर्वत पर रोपवे का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि गिरनार पर्वत पर माँ अंबे भी विराजती हैं, गोरखनाथ शिखर भी है, गुरु दत्तात्रेय का शिखर है और जैन मंदिर भी हैं, और इसके साथ ही उन्होंने अपना फैसला भी सुना दिया कि जैन लोग चुप रहें, गिरनार पर तुम्हारी बपौती नहीं है, यहाँ वही होगा जो बहुसंख्यक वर्ग चाहेगा। कानून-बानून कुछ नहीं होता है। अपने पास रखे रहो उस कानून को जिसके अनुसार 15 अगस्त सन् 1947 को जो तीर्थ जिन धर्माबलंबियों के अधिकार में हैं वे उनके ही रहेंगे, उस पर दूसरे धर्म वाले कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकेंगे, और इस तरह हमारे देखते-देखते गिरनार हमारे हाथों से निकलने की इतिश्री हो गई। यह सब तो तब हुआ जबकि गुजरात का मुख्यमंत्री जैन है। इसके लिये जिम्मेदार कौन हैं- जैन समाज के हमारे नेता, संत या हम सब ? क्या आज भी कोई इस पर चिंतन करेगा ? किसी ने व्हाट्सअप पर सही लिखा था कि अभी तो लाइन में केसरिया जी और शिरपूर का अंतरिक्ष पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र हैं और फिर उसके बाद शिखर जी भी इतना सब होने के बावजूद भी क्या हमारे जैन नेता और संत अपनी भूमिकाओं पर पुनर्विचार करेंगे ?

घर को आग लगी घर के ही चिराग से जिस देश में बहुसंख्यकों की इच्छाओ को ध्यान में रखकर निर्णय लिये जाते हों, कानून में दर्ज अल्पसंख्यकों के हितों /अधिकारों की अवहेलना की जाती हो, वहाँ जैनों को न्याय की उम्मीद रखना व्यर्थ ही है। दुःख इस बात का है कि अब भी जैन लोग यह नहीं समझ पा रहे हैं कि बहुसंख्यक लोग कभी जैनों के हित की बात नहीं सोच सकते हैं। वे तो जैन धर्म को निगलने के लिये तैयार बैठे हैं, वे जैन धर्म को अलग धर्म के रूप में स्वीकार ही नहीं करते हैं, जैन तीर्थों को भी हिन्दू तीर्थ मानकर अपना अधिकार बताते हैं। कुछ जैन बंधु यह कहते मिल जाते हैं कि उनसे हमारी संस्कृति बहुत मिलती हैं , हम अल्पसंख्यक हैं, हम अकेले कुछ नहीं कर सकते, अतः हमें उनके साथ मिलकर ही रहना है, अजैन लोगों के साथ न रहो, हम यह कहाँ कह रहे हैं, साथ तो रहेंगे ही शाकाहार और अहिंसा जैसे मुद्दों पर सभी धर्मों के शाकाहारी बंधुओं के साथ मिलकर ही अपने आवाज भी उठाएंगे, शाकाहारी मुसलमानों और

ईसाईयों के साथ मिलकर भी लेकिन जहाँ तक अपने धर्म और तीर्थों की रक्षा की बात आयेगी तो इस पर भी मंथन तो करना ही होगा।

हमारे बहुत से संत भी यह कहते मिल जाते हैं कि हम हिन्दू धर्म का हिस्सा हैं, वे हिन्दू त्योहारों को बहुत धूमधाम से मानने के लिये श्रावकों को एक प्रकार से प्रेरित भी करते हैं, कई बार यह समझ में नहीं आता है कि वे जैन धर्म के संत हैं या हिन्दू धर्म के मुझे देखकर बहुत पीड़ा होती है जब कुछ प्रभावक संत भी बहुसंख्यकों के एजेंडों कार्यों को ही आगे बढ़ाने में अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं, वे यह नहीं समझ पा रहे हैं कि उसके पीछे उनका क्या उद्देश्य छिपा है यदि जानते भी हैं तो उस बात को नजरअंदा कर देते हैं और यह देखते हैं कि स्वयं उनका या उनकी मान्यता का प्रचार तो हो ही रहा है, जैन धर्म का नहीं हो रहा रहा तो क्या विभिन्न राजनीतिक स्वार्थ के कारण हमारे नेता भी जाने अनजाने में जैन धर्म का नुकसान कर रहे हैं वे यह हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं कि यदि जैन धर्म/तीर्थस्थानों का बहुसंख्यकों द्वारा नुकसान हो रहा है तो हम उनके अपना विरोध दर्ज करायें।

जैन धर्म की विभिन्न मान्यताओं में श्वेताम्बर-दिगंबर, तेरहपंथ-बीसपंथ, स्थानकवासी-मंदिरमार्गी आदि के भेद तो थे ही, अब और भी भेद हो गये हैं। मेरा संत-तेरा संत, मेरी बिरादरी का-तेरी बिरादती का इस प्रकार हमने अपने आप की शक्ति को और अधिक क्षीण कर लिया है। कुछ लोगों का मानना है कि श्वेताम्बरों का गिरनार तीर्थ पर पहली टोंक से ही संबंध रहा है, वहीं उनका मंदिर है, जबकि दिगंबरों का संबंध वहाँ की सभी पाचों टोंको से है, दिगंबर तो पांचवी टोंक से ही भगवान नेमिनाथ का निर्वाण होना मानते हैं अतः गिरनार की लड़ाई में श्वेताम्बरों ने दिगम्बरों के साथ नहीं दिया और एक प्रकार से उन्होंने हिन्दुओं का पक्ष ही लिया, इसी कारण मुख्यमंत्री (श्वेताम्बर) जैन होते हुये भी जैनों का विरूद्ध निर्णय का हिस्सा बन गये, यदि ऐसा है तो यह आत्मघाती सोच है, जैन धर्म के हित में सभी को मिलकर लड़ना होगा नहीं तो हम कहीं के नहीं रहेंगे।

अनेक संत नये तीर्थ तो खूब बनवा रहे हैं, लेकिन पुरानों की उपेक्षा करते हैं, यदि बीसपंथी मंदिर है तो तेरहपंथी यह कहकर उपेक्षा कर देते हैं कि वह बीसपंथियों का है, इसी प्रकार बीसपंथी करते हैं। संतों ने अपनी अलग पहिचान बनाने के लिये अपने सिद्धांत बना लिये हैं और उसके अनुरूप नये मंदिरों का निर्माण कर रहे हैं, फिर हमारे पुराने तीर्थों की रक्षा कैसे हो ? कुछ अजैन लोगों का कटाक्ष उचित ही है कि जैन नये तीर्थ हिन्दुओं के लिये ही बना रहे हैं। जब तक संत हैं तक तक ये नये तीर्थ उनके हैं उनके बाद जैनों का आना स्वतः ही कम हो जायेगा और ये मंदिर उनके ही हो जायेंगे। वैसे भी जैन लोग तो आपस में लड़-लड़ कर स्वयं ही समाप्त हो लेंगे, किसी बाहरी को कुछ करने की आवश्यकता ही क्या है।

बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना- एक नया ट्रेंड चला है, हम अपने जैन तीर्थों और

अपनों के नुकसान होने पर तो निष्क्रिय बने रहे हैं और विधर्मियों के तीर्थों को लेकर बहुत सक्रिय /ऊर्जावान हो जाते हैं। उनके समर्थन में आगे बढ़-बढ़ कर नारे लगाते हैं, उनके पक्ष में मुकदमें करते हैं। और जब विधर्मियों की जीत होती है तो कूद-कूदकर नाचते गाते हैं। हम सभी जानते हैं कि अयोध्या से हमारे बीस तीर्थंकर मोक्ष गये। लेकिन कभी किसी जैन ने अपनी बात को जोर देकर नहीं कहा। बाबरी मस्जिद की खुदाई में उनके जैन पुरातात्विक महत्त्व के शिलाखण्ड और मूर्तियाँ प्राप्त हुई जो इस बात का प्रमाण थीं कि वहाँ कभी कोई जैन मंदिर था। किसी ने भी इस बात की सुध नहीं ली और हिन्दुओं की लय मिलाकर जय श्री राम का नारा लगाते रहे। आज जैन पुरातात्त्विक अवशेष कहाँ हैं, कुछ भी स्पष्ट नहीं है। जब राम मंदिर का शिलान्यास हो रहा था तब हमारे प्रतिनिधि भी मौतूद थे। उनकी उपस्थिति में प्रधानमंत्री और उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री ने अपने भाषण में एक बार भी यह नहीं कहा कि इसी अयोध्या में जैनों के बीस तीर्थंकरों का जन्म हुआ था गिरनार रोपवे के उद्घाटन के समय प्रधानमंत्री ने अजैन मंदिरों को जिस प्रकार गिनाया उस प्रकार यहाँ कुछ नहीं कहा।

कुछ समय पहले दिनांक 1 अक्टूबर 2020 को समाचार पत्रों में से एक समाचार प्रकाशित हुआ था कि कृष्णजन्म भूमि पर सिविल याचिका को मथुरा सिविल कोर्ट ने खारिज कर दिया है। अदालत ने माना कि ये याचिका सुनवाई योग्य नहीं है याचिका में मंदिर के पास बनी ईदगाह को हटाने की मांग की गई थी। वादी पक्ष की तरफ से विष्णु जैन, हरिशंकर जैन और रंजन अग्निहोत्री ने अपना पक्ष रखा था। आगे समाचार यह भी था कि पिछले साल 9 नवंबर को अयोध्या पर फैसलार सुनाते हुये सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की बेंच ने ऐसे मामलों में काशी मथुरा समेद देश में नई मुकदमेबाजी के लिये दरवाजा बंदर कर दिया था हालांकि इस संबंध में वकील विष्णु शंकर जैन के माध्यम से हिंदू समूह ने पहले की सुप्रीम कोर्ट में कानून की वैधता को चुनौती दी है। मुकदमें लड़ना वकीलों का पेशा हैं। लेकिन क्या जैन वकील जैन तीर्थों के लिये जैन-के-हितों के लिये कभी कोई मुकदमा नहीं लड़ सकते हैं ? यह सोचने की बात है।

मुसलमानो का हौवा- बहुसंख्यकवादी विचारधारा वाले लोगों को देखा है कि वे जैन लोगों को मुसलमानों का खौफ दिखाकर पार्टी विशेष के पक्ष में करते रहते हैं वे अक्सर कहते हुये मिल जाते हैं कि मुसलमानों की आबादी बढ़ रही है, यदि तुम अमुक पार्टी का वोट नहीं दोगे तो पूरे देश में उनका शासन हो जायेगा। पहली बात तो यह है कि ऐसा कुछ भी होने की कोई संभावना नहीं है, आज तो उनकी पार्टी का ही शासन है, तो उन्होंने जैनों का क्या भला/ निहाल किया वोट पाने के लिये सिर्फ गुमराह किया वैसे भी इतिहास गवाह है कि जैन धर्म का जितना नुकसान कट्टरपंथी हिन्दू उन्मादियों ने किया उतना मुसलमानों ने उतना नहीं किया। दक्षिण के अनेक मंदिरों को बलात हिन्दू (शैव आदि) मंदिरों में परिवर्तित कर दिया गया, जैन ग्रंथों की होली जलाई गयी हमारा मानना है कि जैनों को अल्पसंख्यक का दर्जा भी तभी तक है जब तक मुसलमान

अल्पसंख्यक वर्ग में मौजूद है यदि वे न हों तो जैनों का अलग अस्तित्त्व भी समाप्त हो जायेगा।

जैन कार्यक्रमों में नेता- अक्सर देखा गया है कि कोई राष्ट्रीय स्तर का जैन कार्यक्रम होता है तो आयोजकों को किसी न किसी बड़े नेता को बुलाने का मोह रहता है। हम सोचते हैं कि हमारे कार्यक्रम की शोभा बढ़ रही है। लेकिन नेताओं के ऐसे कार्यक्रमों में आने का ही एक ही उद्देश्य रहता है कि जैन लोगों के वोट पाना। हमारे संत भी उनको पास बुलाने के लिये लालायित रहते हैं। एक समय था जब प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति हमारे आचार्यों के पास अपने आप आते थे, वे उन्हें बहुत इज्जत देते थे। जूते उतार कर आते थे, संत उच्चासन पर विराजते थे और वे स्वयं जमीन पर चटाई पर बैठते थे। लेकिन अब हमारे वह साख खो दी है। उनकी कुर्सी हमारे आचार्यों और संतों के समकक्ष रखी जाती है हमने स्वयं का स्तर गिराया है। जब नेता आते हैं हमारे संत उनसे यह भी नहीं पाते कि वे मासांहार छोड दें।

अंत में निवेदन- जैनों की कुल जनसंख्या देश की कुल आबादी का 0.4% से भी कम है, यानि कि एक हजार आबादी में मात्र चार जैन दूसरी ओर हमारी जनसंख्या वृद्धि दर मात्र 1.2% है। इस प्रकार यह तय है कि यदि समुचित कदम नहीं उठाये गये तो कुछ वर्षों में जैन धर्मावलंबी नहीं रहेंगे, जब जैन धर्मावलम्बी नहीं होंगे तो जैन धर्म भी नहीं रहेगा। ऐसी स्थिति में क्या यह उचित नहीं होगा कि बिना किसी आम्नायवाद या पंथवाद के हम सब मिलकर कुछ ऐसा प्रयत्न करें जिससे जैन धर्म को बचायें और आगे बढ़ाये। जैन धर्म को बचाये रखने के लिये सबसे पहले कुछ कदम उठाना आवश्यक है, उसके लिये मैं सभी जैन बंधुओं से निम्न निवेदन करना चाहता हूँ।

1. जहाँ कहीं जैन तीर्थों पर श्वेताम्बर-दिगंबर या तेराहपंथ-बीसपंथ के मुकदमें चल रहे हैं उन्हें अविलंब वापस लिया जाये, मिल बैठकर कोई हल निकालें।

2. सभी लोग यह शपथ लें कि भविष्य में वे कभी आपस में कोई मुकदमा नहीं करेंगे। यहद कोई समस्या हुई तो मिल बैठकर उसका हल निकालेंगे।

3. सार्वजनिक प्रवचनों और भाषणों में आपस में एक-दूसरे की टीका टिप्पणी से बचें।

4. सभी सम्प्रदाय ओर आम्नाय के लोग मिलकर अहिंसा और जैन धर्म का प्रचार करें।

5. हम हर उस नेता या विचारधारा का विरोध करें जो अल्पसंख्यक जैन धर्म का शुभ चिंतक न हो बल्कि बहुसंख्यकवाद या हिन्दू-राष्ट्रवाद का समर्थक हो, चाहें वह कोई हो।

6. हमें इस बात का मोह त्यागना होगा कि कार्यक्रमों में कोई ऐसा राष्ट्रीय नेता आयें जिसकी विचारधारा और कार्य जैन धर्म के विरूद्ध हों।

भविष्य में गिरनार जैसी स्थिति की पुनरावृत्ति न हो उसके लिये आवश्यक है कि हम सब संगठित रहें। ध्यान रहें- यदि हम संगठित रहेंगे तभी जैन धर्म सुरक्षित रहेगा, अन्यथा कारवां गुजर जायेगा और हम गुबार देखते रहें जायेंगे।

संयम स्वास्थ्य योग

पेट में दर्द तो इन्हें आजमायें

जामुन- पेट की बीमारियों में जामुन लाभदायक हैं इसमें दस्त बांधने की विशेष शक्ति हे। पेट दर्द, दस्त लगना, अग्निमांघ होने पर जामुन के रस में सेंधा नमक मिलाकर पीना चाहिये।

केला -विभिन्न प्रकार के जठ रान्त्र रोगों में भोजन के रूप में केला खाना रोग निवारण में सहायक है। यह बच्चों और दुर्बल-लोगों के लिये पोषक आहार है बच्चों और बड़ों के हर प्रकार के दस्त, जठरशोथ बृहदान्त्र शोथ और अमाशय व्रण में भोजन के रूप में केला आरोग्यदायक है यह अंतड़ियों की सूजन मिटाता है।

अनार-मेंदा, तिल्ली और यकृत की कमजोरी संग्रहणी, दस्त और कै, पेट-दर्द अनार खाने से ठीक हो जाते हैं। यह कब्ज करती हैं। अनार खट्टा और मीठा होने से पाचन शक्ति बएाता है। मूत्र लाता है इससे भोजन के रस का निर्माण पर्याप्त मात्रा में होता है।

ग्वारपाठा-ग्वारपाठे का ताजा रस 25 ग्राम चासनी 12 ग्राम और आधे नींबू का रस मिलाकर दो बार सुबह शाम पीते रहने से सभी प्रकार के पेट के रोग ठीक हो जाते हैं।

चौलाई- पेट के रोगों में चौलाई की सब्जी खाना लाभदायक हे।

सेव- बच्चो के पेट के रोगों के लिये नित्य सेव खिलाना लाभदायक है। नित्य एक बार में एक से तीन सेव तक जितना खाया जा सके खावें। पेट के रोगों में अतिलाभदायक हैं।

सौंफ- नींबू के रस में भीगी हुई सौंफ को भोजन के बाद खाने से पेट का भारी पन दूर होता है, भूख खूब लगती है, तथा मल भी साफ आता है।

मसूर की दाल- पेट की पाचन क्रिया से संबंधित हर प्रकार के रोगों में मसूर की दाल खाना लाभदायक है।

कविता

जिंदगी की सच्चाई

ये सागर गहराई, पहाड़ की ऊँचाई, चढ़ो रे चढ़ाई, समुंदर की गहराई,
हारता क्यों भाई, होसलें नैय्या करते पार, चाहे हो कितनी तीखी धार
तूफानों से पाओगे पार, नहीं तुम मानो मन में हार,
सफलता के मायने कई होते है, कई सफलता के चक्कर में
जीवन खोते हैं, अच्छा स्वास्थ्य कुशल व्यवहार,
मिलन सारिता ज्ञान, पूर्णता भी सफलता का है पड़ाव,
जीवन में आते उतार और चढ़ाव,
चीटीं मौन रहती है, सतत अपना काम करती है,
विश्राम नहीं लेती, मंजिल पाती नहीं हार मानती,
लक्ष्य पा नहीं इठलाती, सतत प्रयास की,
अनूठी प्रेरणा चींटी, सबको दे जाती, यही तो है जिंदगी की सच्चाई।

नरक गति में चौबीस स्थान विवेचना

✼ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✼

सर्वज्ञ देव ने सृष्टि के मूल दो तत्व माने हैं एक जीव और दूसरा अजीव इन्हीं दोनों का विवेचनात्मक कथन किया है जैनेन्द्र सिद्धांत में -जीव सिद्धांत, लोक सिद्धांत व कर्म सिद्धांत की विवेचना प्रमुखता से की गई है। जीव सिद्धांत की विवेचना करने के चौबीस बिन्दु निर्धारित किये गये हें। वे निम्न हैं

गति इंद्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्तव, संज्ञी, आहारक, गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, उपयोग, ध्यान, आश्रव, कुल जाति, कुल कोटि।

उपर्युक्त चौबीस बिन्दुओं के आधार पर जीव की स्थिति निश्चित की जाती है जिसमें यह देखा जाता है कि जीव के पर्याय और परिणमन इन चौबीस बिन्दुओं में किस प्रकार से हो रहा है इसका ज्ञान कर लेने के बाद यह बोध प्राप्त हो जाता है कि यह आत्मा कैसी-कैसी सम-विषम स्थितियों में भटकता रहा है में देखना यह है कि जब यह जीव गतिनाम कर्म के उदय से नरक अवस्था विशेष को प्राप्त हुआ तो उसकी किसी ने प्रश्नावली बनाकर के किसी नारकी जीव के सामने प्रस्तुत कर दी और उसे सिर्फ टिकमार्क करना था तो हम कल्पना करें कि किसी नारकी ने इस प्रकार उत्तर दिया।

नारकी प्रश्नावली- सामान्य प्रश्नावली

1. आपकी गति कौन सी है?

उत्तर हमारी गति नरक गति है।

2. आप कितने इन्द्रिय जीव हैं?

उत्तर मैं पंचेन्द्रिय जीव हूँ।

3. आप किस काय के जीव हैं?

उत्तर हम त्रस काय के जीव हैं।

4. आपका संबंध किन-किन योगों से हे?

उत्तर हमारा संबंध सत्यमन, असत्यमन, उभयमन, अनुभय, मनोयोग से है तथा सत्य, असत्य, उभय, अनुभय वचन योग से है एवं वैक्रियिक वैक्रियक मिश्र और कार्माण काय योग से हम संबंध रखते हैं। इस तरह हमारे जीवन में 11 योगों से संबंध रहता है।

5. आपके कौन सा वेद होता है?

उत्तर भैया हम लोगों मात्र नंपुसक वेद ही होता है।

6. आप लोगों में कषाय कितनी पाई जाती है?

उत्तर हम लोगों में 23 कषाय पायी जाती है सिर्फ स्त्री और पुरुष वेद नहीं पाया जाता है।

7. नारकी भैया आप लोगों में ज्ञान होता है कि नहीं यदि होता है तो कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर भैया हम लोगों में ज्ञान होता है- कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान, सुमतिज्ञान, सुश्रुतज्ञान, सुअवधिज्ञान। सिर्फ हम नारकियों में मनः पर्ययज्ञान और केवलज्ञान नहीं होता है।

8. अच्छा नारकी भैया ये बताओं आप लोगों में संयम होता है या नहीं?

उत्तर नहीं, हम लोगों में सिर्फ एक असंयम होता है। हम लोगों में संयमासंयम, सामायिक,

छेदोपस्थान, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म साम्पराय यथाख्यात चारित्र रूप संयम नहीं होता है।
9. नारकी भैया आप लोगों में दर्शन कितने होते हैं ?
उत्तर हम लोगों में केवलदर्शन छोड़कर चक्षु, अचक्षु अवधि तीन दर्शन होते हैं।
10. अरे नारकी भैया ये तो बताओं आप लोगों में लेश्या कितनी होती हैं ?
उत्तर हम लोगों में कृष्ण नील कापोत तीन अशुभ लेश्यायें होती हैं।
11 नारकी भैया आप लोग भव्य होते हैं या अभव्य ?
उत्तर हम लोग भव्य, अभव्य दोनों होते हें।
12 आप लोगों के सम्यक्त्व कितने होते हैं?
उत्तर हम लोगों के सभी सम्यक्त्व होते हैं- मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र उपशम, वेदक, क्षायिक।
13. आप लोग सैनी होते हैं या असैनी ?
उत्तर हम लोग सिर्फ (मन सहित) सैनी, संज्ञी जीव होते हैं।
14. आप लोग आहारक होते हैं या अनाहारक होते हैं ?
उत्तर हम लोग आहारक, अनाहारक दोनों होते है।
15. नारकी भैया आप लोगों के गुणस्थान कितने होते है ?
उत्तर हम लोगों में मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, अविरति सम्यग्दृष्टि ये चार गुणस्थान होते हैं।
16. आप लोगों में कौन-कौन से जीव-समास होते हैं ?
उत्तर हम लोगों मात्र सैनी पंचेन्द्रिय जीव समास होते हैं।
17. नारकी भैया आप लोगों में पर्याप्ति कितनी होती है ?
उत्तर हम लोगों में आहार, शरीर, इंद्रिय, खासोच्छवास, भाषा व मन ये छः पर्याप्ति होती हैं।
18. आप लोगों में प्राण कितने होते हैं ?
उत्तर हम लोगों में सभी दसों प्राण होते हैं ?
19. आप लोगों में संज्ञा कितनी होती है ?
उत्तर हम लोगों में आहार, भय, मैथुन, परिग्रह चारों संज्ञायें होती हैं।
20. आप लोगों में उपयोग कितने होते हैं ?
उत्तर हम लोगों में उपयोग नौ होते हैं 6 ज्ञान ज्ञान के और 3 दर्शन के।
21. नारकी भैया आप लोगों में ध्यान कितने होते हैं ?
उत्तर हम लोगों में ध्यान 9 होते हैं 4 आर्त्त के, 4 रौद्र के ओर एक आज्ञा विचय धर्मध्यान भी होता है।
22. अरे नारकी भैया आप लोगों के आश्रव होता है या नहीं होता है ?
उत्तर हाँ हम लोगों के 51 आश्रव होते हैं।
23. नारकी भैया आप लोगों की जातियाँ कितने प्रकार की हैं ?
उत्तर हम लोगों की जातियाँ चार लाख प्रकार की होती है।
24. आपके कुल कितने होते है ?
उत्तर हम लोगों के 25 लाख कुल कोटि होते हैं।

तो आप ओर हम समझ चुके कि नारकी जीवों की स्थान स्थिति और भावों की परिणति किस तरह से होती है ऐसे नरक में जाना क्या कोई पसन्द करेगा यदि नहीं तो आप बहुत और बहुत परिग्रह से बचके रहना ये पाप परिणाम आपको नरक ले जा सकते हैं। ठीक है अगली तिर्यंच गति की चर्चा जब मिलेंगे तब करेंगे तक के लिये जय जिनेन्द्र।

आचार्य एलाचार्य बालाचार्य और पट्टाचार्य

✻ पं. सनतकुमार विनोदकुमार रजवाँस, सागर ✻

जैनदर्शन विश्व का सर्वमान्य प्रमाणिक, प्राचीन एवं मानव कल्याण की भावना से ओतप्रोत वैज्ञानिक दर्शन है। जिसके सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने पहले थे। इन सिद्धांतों का कथन शास्त्रों में है औन उनका अनुसरण करने वाले साधु प्रायोगिक धर्माचरण करते हैं। जो श्रमण संस्कृति, जैन दर्शन, धर्म सिद्धांत का उद्योतक है। जैन श्रमणाचार को पालन करने वाले मुनिराज साधु परमेष्ठी और पालन कराने वाले आचार्य परमेष्ठी होते हैं।

आचार्य- साधुओं को दीक्षा, शिक्षा देने वाले, उनके दोष निवारक, दर्शनाचार, ज्ञानाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार का निरतिचार स्वयं पालन करते हैं एवं दूसरों को भी प्रवृत्त कराते हैं और शिष्यों को इन पंचाचारों का उपदेश देते हैं तथा अनेक गुणों से सहित संघ नायक साधु को आचार्य कहते हैं।

अतः आचार्य एकल विहारी नहीं अपितु संध सहित ही होता है। जो परमात्मा के परिपूर्ण अभ्यास और अनुभव से जिनकी बुद्धि निर्मल हो गई है, जो निर्दोष रीति से छह आवश्यकतों का पालन करते हैं, मेरु के समान निष्कम्प हैं, शूरवीर हैं, सिंह के समान निर्भीक हैं, श्रेष्ठ हैं, देश कुल, जाति से शुद्ध हैं और सौम्यमूर्ति हैं। अंतरंग और बहिरंग परिग्रह से रहित हैं आकाश के समान निर्दोष हैं ऐसे आचार्य परमेष्ठी होते हैं। जो दीक्षा, शिक्षा और प्रायश्चित देने में कुशल हैं। जो परमागम के अर्थ में विशारद हैं जिनकी कीर्ति सब जगह फैली रही है, जो आचरण, निषेध और व्रतों की रक्षा क्रियाओं में निरन्तर उद्यत हैं, वे आचार्य परमेष्ठी हैं।

आचार्य के गुणः आचार्य आचारवान, आधारवान, व्यवहारवान, कर्ता, आयापाय, दर्शनोद्योत और उत्पीलक होता है। आचार्य अपरिस्रावी, निर्वापक, प्रसिद्ध, कीर्तिवान और निर्यापक के गुणों से परिपूर्ण होते हैं। आचार्य आचारवान, श्रुताधार, प्रायश्चित, आसनादिदः आयापाय, कथी, दोषभाषक, अश्रावक, संतोषकारी, निर्यापक इन आठ गुणों से सहित अनुदिष्ट भोजी, शय्याशन और आरोगभुक, क्रियायुक्त, व्रतवान, ज्येष्ठ, सदगुण प्रतिक्रमी, षण्मासयोगी, दो-निषधक, बारह-तप, छह- आवश्यक सहित छत्तीस गुण वाले आचार्य होते हैं।

एलाचार्य- गुरु के पश्चात जो मुनि चारित्र का क्रम मुनि और आर्यिकाओं को कहता है उसे अनुदिश अर्थात् एलाचार्य कहते हैं। अर्थात् आचार्य के पश्चात् संघस्थ साधुओं को चारित्र, व्रतादिपालन कराने वाला एलाचार्य होता है। वह छोटा आचार्य भी कहा जा सकता है। आचार्य योग्यता, वरिष्ठता के आधार पर एलाचार्य के पद से विभूषित करते हैं ।

बालाचार्य- अपनी आयु अभी कितनी शेष है, इसका विचार कर, अपने शिष्य समुदाय को अपने स्थान में जिसकी स्थापना की है, ऐसे बालाचार्य को बुलाकर, सौम्य तिथि, करण, नक्षत्र और लग्न के समय शुभ प्रदेश में अपने गुण के समान जिसके गुण हैं । ऐसे बालाचार्य अपने गच्छ का पालन करने के योग्य हैं । ऐसा विचार कर उस पर अपने गण को विसर्जित करते हैं। अर्थात् अपना पद छोड़कर सम्पूर्ण गण को बालाचार्य के लिये छोड़ देते हैं अर्थात् बालाचार्य ही यहाँ से उस गण का

आचार्य समझा जाता है। उस समय पूर्व आचार्य उस बालाचार्य को थोड़ा उपदेश देते हैं।

आचार्य अपने जीवन काल में अपने योग्य शिष्य को उत्तराधिकारी के रूप में चयन कर उसे बालाचार्य नियुक्त कर संघ संचालन, शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित आदि की विधि से निष्णात कर देते हैं। अपनी अल्प आयु का बोध होते ही अपना आचार्य पद बालाचार्य को प्रदान कर देते हैं। बालाचार्य, एलाचार्य और आचार्यकल्प की क्रिया विधि लगभग समान होती है। बालाचार्य की नियुक्ति होने पर संघ को आगामी आचार्य के विषम में निश्चिन्तता हो जाती है। संघ के साथ, आचार्य की आज्ञानुरूप बालाचार्य या एलाचार्य को अपना भावी आचार्य स्वीकार कर लेते हैं।

उत्तराधिकारी के निर्धारण होने से पूर्व यदि आचार्य की समाधि हो जाती है, तो संघस्थ साधुओं की सम्मति पूर्वक संघ के वरिष्ठ, अनुभवी, ज्ञानवान एवं कीर्तिवान साधु को आचार्य पद प्रदान कर देना चाहिये, क्यों कि संघस्थ साधुओं की शिक्षा, दीक्षा एवं प्रायश्चित आदि का दायित्व करना होता है। संघस्थ साधुओं की सहभागिता ही है। आचार्य पद प्रतिष्ठापन क्रिया में कहा भी है कि-

सिद्धाचार्यस्तुति कृत्वा सुलग्ने गुर्वनुज्ञया।
लात्वाचार्यपदं शान्तिं स्तुयात्साधुः स्फुरदगुणः ।।

अर्थात् जिसके गुण संघ के चित्त में स्फुरायमान हो रहे हैं ऐसा साधु लग्न में सिद्धभक्ति और आचार्य भक्ति करके गुरु की आज्ञा से आचार्यपद ग्रहण कर भक्ति करें।

क्रियासार गाथा 78 में आचार्य भद्रबाहु स्वामी लिखते हैं कि आचार्य को एकल विहारी नहीं होना चाहिये। यथा-

संघ वइहु सीसो अर्थात् संघपतिः सह शिष्यः।

अर्थात् संघपति आचार्य शिष्यों के साथ विहार करता है। क्या समाज या संस्थायें आचार्य पद प्रदान करें- ऐसा समय भी आया जब साधु परम्परा क्षीण होने लगी थी तब साधु की योग्यता देखकर समाज ने भी आचार्य पद निर्धारित किये हैं। वे आचार्य सर्वमान्य भी हुये। ऐसे अनेक प्रसंग देखे गये हैं। किन्तु इन्हें सर्वथा न मानकर प्रसंगानुसार या समय की व्यवस्थानुरुप मान्य कहा जा सकता है। किन्तु अनेक आचार्य, साधु, संघ के सद्भाव में आचार्य पद प्रदान करने का कार्य उस परम्परा के आचार्य, साधु, संघ आदि को करना श्रेष्ठ है। समाज और संस्थायें अनुमोदना करें।

पट्टाचार्य का स्वरूप- पट्ट आसन, सिंहासन, जिम्मेदारी, प्रमुख प्रधान आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। पट्ट वह अधिकार है जो पूर्व अधिकारी के द्वारा प्राप्त होने पर निर्धारित संहिता का पालन करना और कराना अनिवार्य होता है। आचार संहिता का निर्धारण दो प्रकार से किया जा सकता है।

1. सैद्धांतिक आगम आचार संहिता
2. द्रव्य, क्षेत्र, काल की अपेक्षा पट्ट परम्परा के आचार्यों द्वारा निर्धारित आचार संहिता।

पट्ट-अर्थात् अधिकार प्राप्त होने पर उसे उस पट्ट की परम्पराओं का निर्वहन करना होता है। चाहे वह आचार्य परम्परा हो , राज्य परम्परा या जातिगत व्यवस्थायें हों। पट्ट का अधिकार भी योग्यता के आधार पर पट्ट का अधिकारी ही प्रदान करता है।

परम्परा- जो क्रम पूर्वक निमित्त कारण होता है वह परम्परा का द्योतक है। परम श्रेष्ठ के अर्थ में जाना जाता है। जो श्रेष्ठता पूर्वक पिछला अगले के लिये या पहला दूसरे के लिये निमित्त कारण बनता है वह परम्परा है। पर शब्द के अनेक अर्थ हैं । जैसे- 1. व्यवस्था अर्थ में वर्तता है, जैसे पहला, पिछला। 2. भिन्न अर्थ में वर्तता है, जैसे पर पुत्र आदि। 3. उत्कृष्ट अर्थ में वर्तता है, जैसे श्रेष्ठ आचार्य संघ संचालन के लिये एवं जैनागम, दर्शन और सिद्धांतों की रक्षा के लिये। समस्त शिष्यों के आचार पालन कराने की समस्त जिम्मेदारी सौपते हैं। वह शिष्य जो अपने आचार्य के अधिकारों को प्राप्त करता है, वह पट्ट कहलाता है।

पट्टाचार्य परम्परा के अधिकार और जिम्मेदारियाँ - काल का परिवर्तन उतार-चढ़ाव, अनुकूलता-प्रतिकूलता आदि के रूप में श्रावकों के आचार को सरल एवं कठिन बनाता रहता है। समय की अनुकूलता-प्रतिकूलता एवं द्रव्य, क्षेत्र और काल की उपेक्षा आचार्यों ने आचार संहिता में आगम सम्मत कुछ परिवर्तन किये हैं। इसी कारण अष्टमूलगुणों, अणुव्रतों, गुणव्रतों और शिक्षाव्रतों में एकरूपता नहीं देखती जाती है। पट्टाचार्य को अपने संघ की परम्पराओं के अनुरूप व्यक्ति समय और क्षेत्र की अपेक्षा आचार परिपालना में परिवर्तन करने का अधिकार होता है। समाधि के समय, प्रायश्चित काल में एवं पृथक बिहार के अवसर पर, आगम के परिप्रेक्ष्य में पट्टाचार्य का निर्णय अन्तिम और सर्वमान्य होता है। पट्टाचार्य आचार परिपालना में साधक को मोक्षमार्ग में लगाने की जिम्मेदारी पूर्ण निष्ठा से निभाते हैं।

पट्टाचार्य का बहुमान- अल्पकाल के दीक्षित पट्टाचार्य होने पर भी दीर्घकाल के दीक्षित साधु भी उनकी विनय करते हैं । उनके आदेश का पालन पूर्व आचार्य के आदेश की तरह ही करते हैं। प्रायश्चित, प्रतिक्रमण, छह आवश्यक आदि सभी क्रियायें इन्हीं की सन्निधि में करते हैं और पूर्ण बहुमान देते हैं।

पट्ट परंपरा का उद्भव और विकास- जैन धर्म भगवान महावीर स्वामी के बाद से अविरल रूप से गतिमान है। धर्म ध्वजा निरन्तर फहराती है। मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविकायें जैन धर्म की यशोगाथा के पात्र बने रहे। किन्तु समय की अनुकूलता प्रतिकूलता में धर्म का प्रभाव कभी ज्यादा तो कभी कम होता रहा। जिसका मुख्य कारण तत्कालीन राज्य व्यवस्था या सामाजिक अस्त व्यस्तता रही है।

आचार्य पद- आचार्य अपने योग्य शिष्य को अपना आचार्य पद देकर सल्लेखना ग्रहण करते थे। इस प्रकार की परम्परा निरन्तर चलती रही। किन्तु पट्ट आचार्य लिखने की परम्परा का उल्लेख प्राप्त नहीं हुआ। इसकी आवश्यकता तब हुई तक श्रमण संस्कृति का ह्रास और शिथिलाचार का प्रादुर्भाव हुआ। ऐसे समय में जिन-जिन आचार्यों ने शिथिलाचार का निरसन करके आगमानुसार चर्या का निर्धारण कर आगे आने वाले आचार्यों का मार्ग प्रशस्त किया, उनके निर्देशों की परिपालना करते हुये उनकी परम्परा के आचार्यों ने पूर्ण निष्ठा से उसका निर्वाहन किया, जो पट्टपरम्परा के रूप में आज भी गतिमान है।

संदर्भ- 1. भगवती अराधना मूल 419। 2. धवला पुस्तक 1,1,1। 3. भगवती अराधना 417, 418। 4. बोध पाहुड़ टीका 1, 72। 5. भगवती अराधना 177, 389। 6. भगवती अराधना 273,274। 7. क्रियासार गाथा 78। 8. राजवार्तिक 3,6,7।

चलो देखें यात्रा

मलखेड़ (मान्यखेट)

क्षेत्र का महत्व- क्षेत्र पर मन्दिरों की संख्या - 01

क्षेत्र पर पहाड़- नहीं

ऐतिहासिकता- यह 9वीं शताब्दी में जैन पीठ था यह मलखेड़ ग्राम मान्यखेट राजधानी के नाम से प्रसिद्ध था। परम पूज्य 108 आचार्य श्रुत सागर मुनिमहाराज जी के अथक प्रयास से यह पुरातन पीठ आज अपनी पुरानी छवि को पुनः प्राप्त किया है। यहाँ जीर्णोद्धार कार्य होना बाकी है।

विशेष जानकारी- पुरातत्त्व विभाग अब इसके जीर्णोद्धार के लिये आगे आया है। प्रति वर्ष जून में वार्षिकोत्सव मनाया जाता है।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र- हरसूर तालुका जि. गुलबर्गा- 40 किमी., हुणसी हडगिल तालुका जि. गुलबर्गा- 80 किमी. भू भंकूर तालुका चितापूर जि. गुलबर्गा- 25 किमी. कामठाण तालुका जि. बीदर- 110 किमी. जेवर्गी तालुका यादगीर जि. गुलबर्गा- 90 किमी।

निकटतम प्रमुख नगर- गुलबर्गा - 25 किमी.

प्रबंध व्यवस्था- संस्था श्री 1008 मल्लिनाथ भगवान दिगम्बर जैन मंदिर (ट्रस्ट)

अध्यक्ष- डॉ. पवन कुमार शहा (08441276055, 9972450551)

आवागमन के साधन- रेल्वे स्टेशन- सेड़म रेल्वे स्टेशन क्षेत्र से 10 किमी.

बस स्टैण्ड- है

पहुँचने का मार्ग - गुलबर्गा से 50 किमी. की दूरी पर यह क्षेत्र है।

सरलतम मार्ग- गुलबर्गा से हर 30 मिनट पर बस की सुविधा है।

क्षेत्र पर उपलब्ध- आवास नहीं

सुविधायें- जीर्णोद्धार का काम चल रहा है। अभी काम होना बाकी है।

भोजनशला - है, प्रवचनहॉल- नहीं, पुस्तकालय- हैं, औषधालय- हैं, विद्यालय-नहीं।

टेलीफोन- 08441-280382, 09902991725

नाम एवं पता- श्री 1008 मल्लिनाथ भगवान दिगम्बर जैन मंदिर (ट्रस्ट) पुरातन जैन पीठ मठखेड़ (मान्यखेट) ता. सेडम, जिला गुलबर्गा (कर्नाटक) 585317

भगवज्जिनसेनाचार्य एवं उनका पार्श्वाभ्युदयम्

❊ सुरेश जैन (आई.ए.एस), भोपाल ❊

बहुश्रुत आचार्य जिनसेन आचार्य वीरसेन के शिष्य थे। उन्होंने बाल्यकाल में ही ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिये थे। जिनसेन के उपदेश से सम्राट अमोघवर्ष (814 से 878 ईस्वी) जैन धर्म में दीक्षित हो गये थे। जिनसेन अमोघ वर्ष के समकालीन थे। उन्हें पूरा राज्याश्रय प्राप्त था। उन्होंने संस्कृत मिश्रित प्राकृत भाषा में अपने गुरु वीरसेन की शेष रही षटखण्डागम् की अपूर्ण जयधवला टीका को फाल्गुन शुक्ल दशमी एक संवत् 759 विक्रम संवत् 894 (तद्नुसार 13 मार्च, सन् 833 दिन शनिवार) के पूर्वान्ह पुष्य नक्षत्र के सर्वोत्तम मुहुर्त में पूर्ण किया। आदिपुराण उनकी बहुचर्चित महत्वपूर्ण रचना है। आदिपुराण, महापुराण का प्रथम भाग है। जिनसेन के शिष्य गुणभद्र ने महापुराण के द्वितीय भाग उत्तरपुरण की रचना की।

हमारे ओर हमारी पत्नी न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन के गुरु पण्डित (डॉ.) पन्नालाल जी साहित्याचार्य, सागर ने महापुराण का हिन्दी अनुवाद किया है। यह अनुवाद तीन विशाल खण्डों में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित किया गया है।

पूरे विश्व की विद्वत समाज में अग्रणी महाकवि आचार्य जिनसेन ज्ञानपिण्ड हैं। हिमालय पर्वत के समान समुन्नत और प्रशांत महासागर की भॉति गहन और गंभीर हैं। उनके पाण्डित्य का चूडान्त निदर्शक आदिपुराण, विश्व साहित्य का अग्रगण्य ग्रन्थ है। सरस्वती के मुख की भॉति सराहनीय है। रस और सौष्ठवयुक्त मौलिक ग्रंथ है। पद विन्यास की दृष्टि से रमणीय है। स्पष्ट अर्थ से उद्‌भासित है। महापुरुषों के चारित्र से ओतप्रोत प्राचीन एवं ऐतिहासिक है। इसकी उच्च और मनोहर शब्दों की राशि अपरिमेय है।

जिनसेनाचार्य द्वारा विरचित पार्श्वाभ्युदयम् विश्व के समस्त काव्यों में अद्वितीय है। संस्कृत साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना है। पार्श्वाभ्युदयम् एवं मेघदूत में दो स्वतंत्र कथाओं का वर्णन किया गया है। किन्तु आचार्य जिनसेन ने अपने असाधारण काव्य कौशल से पार्श्वाभ्युदयम् में पूरे मेघदूत को ही समाहित कर लिया है और उसे भगवान पार्श्वनाथ की कथा का सौरभ प्रदान कर दिया है।

महाकवि जिनसेन और कालिदास की मौलिक प्रतिभा के मिश्रण के कारण पार्श्वाभ्युदयम् ने सर्वोत्तम संस्कृत पद्यरचना का स्वरूप ग्रहण कर लिया है। पार्श्वाभ्युदम् काव्य रचना की दृष्टि से कवि कालिदास के मेघदूत से भी बढ़कर है। इस काव्य का प्रकृति चित्रण पूर्णतः सजीव और सरस है। इस काव्य में अपार प्राकृतिक एवं साहित्यिक सौन्दर्य के साथ-साथ सर्वत्र जैन दार्शनिक सिद्धांत उपलब्ध होते हैं। यह काव्य संयोग ओर वियोग श्रृंगार रस से ओतप्रोत है। शांत रस में आकण्ठ डूबे जिनसेन की लेखनी से इस काव्य में श्रृंगार के उत्कृष्ट उदाहरणों ने जन्म लिया है। सामान्यतः जैनाचार्य वीर रस और शांत रस प्रधान रचनायें ही करते हैं। पार्श्वाभ्युदयम् में पार्श्वनाथ तीर्थंकर की कथा में आचार्य जिनसेन श्रृंगार रस उड़ेल देते हैं। श्रृंगार रस की पृष्ठभूमि में शांतरस बिखेर देते हैं। श्रृंगार की काव्य परंपरा को अपनी सद्बुद्धि में शांति रस की ओर मोड़ देते हैं। श्रृंगार रस प्रधान रचना करने के लिये पूर्णतः समर्थ महाव्रती की क्षमता प्रदर्शित करते हैं।

इस काव्य के संबंध में प्रो. के.वी पाठक का मत है कि पार्श्वाभ्युीदम् संस्कृत साहित्य की एक अदभुत रचना है। वह अपने युग की साहित्यिक रूचि का प्रतिफल और आदर्श है। भारतीय

कवियों में सर्वोच्च स्थान सर्वसम्मति से कालिदास को मिला है तथापि कालिदास की अपेक्षा जिनसेन अधिक प्रतिभाशाली कवि माने जाने योग्य हैं।

महाकवि कालिदास द्वारा विरचित सुप्रसिद्ध ग्रंथ मेघदूत और पार्श्वाभ्युदयम् के अनुक्रम में भारत में संस्कृत भाषा में संदेश काव्यों की बहुत लंबी प्राचीन परंपरा रही है। संस्कृत भाषा साहित्य में कालिदास से प्रभावित 50 से अधिक संदेश या दूत काव्य उपलब्ध हैं। जैन दूत परंपरा के निम्नांकित प्रमुख काव्य है :- विक्रम का नेमिदूत, मेरूतुंग का जैन मेघदूत, चरित्र सुन्दर गणिका शीलदूत, वारिचन्द्रसूरि का पवनदूत, विनय विजय गणिका इन्द्रदूत, मेघ विजय का मेघदूत समस्यालेख एवं किसी अनाम लेखक का चेतोदूत काव्य।

पण्डिताचार्य का निम्नांकित कथन सराहनीय है कि पार्श्वाभ्युदयम् के महानायक श्री पार्श्वनाथ से बढ़कर कोई साधु, खलनायक कमठ से बढ़कर कोई खल और पार्श्वाभ्युदयम् से बढ़कर कोई काव्य नहीं है-

श्री पार्श्वात्साधुतः साधुः कमठात्खलतः खलः।
पार्श्वभ्युदयतः काव्यं न क्वचिदपीष्यते।।

श्रवण बेलगोल जैन मठ के मध्यकालीन भट्टारक गुरु योगिराज पण्डिताचार्य ने चौदहवीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध में पार्श्वाभ्युदयम् की संस्कृत टीका मल्लिनाथ का अनुसरण करते हुये की है। इसमें योगिराट् पण्डिताचार्य का उपोद्योत तथा श्री पन्नालाल कासलीवाल की प्रस्तावना अध्ययन- मनन के लिये उपयोगी है। यह टीका उत्तर प्रदेश के नजीबावाद नगर के जैन मंदिर में उपलब्ध है।

श्री जिनसेनाचार्य विरचित पार्श्वाभ्युदयम् का अंग्रेजी में संपादन भाण्डारकर पारितोषक विजेता श्री एम.जी. कोठारी, एम.ए. द्वारा एवं प्रकाशन श्री गुलाबचन्द्र हीराचन्द्र, मुम्बई द्वारा वर्ष 1965 में किया गया। अपने संक्षिप्त प्राक्कथन (प्रिफेस) अगस्त 1965 में श्री कोठारी ने उल्लेख किया है कि उन्होने श्लोक के साथ अपनी व्याख्या लिखी है। इसके बाद अंत में अपना अंग्रेजी अनुवाद लिखा है। सबसे अंत में अंग्रेजी में विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ अंकित की हैं। यह व्याख्या अधिक विस्तृत है। सहज है। पढ़ने और समझने में सरल और सुबोध है। संपादक श्री कोठारी ने स्वतंत्रता पूर्वक अपनी भावनायें अभिव्यक्त की हैं।

पार्श्वाभ्युदम् चार सर्गो में विभक्त है। प्रथम सर्ग में 118 श्लोक, द्वितीय में 118 तृतीय में 57 एवं चतुर्थ सर्ग में 71 श्लोक हैं। इस प्रकार इस ग्रंथ में कुल 364 मंदाक्रांता वृत्त हैं। इसकी विस्तृत प्रस्तावना अंग्रेजी में 107 पृष्ठों (पृष्ठ 1 से 107) में लिखी है। श्री कोठारी ने विस्तृत आंतरिक और बाह्य साक्ष्य का उल्लेख करते हुये आचार्य जिनसेन के काल का निर्धारण किया है। अपने निष्कर्ष की पुष्टि हेतु उन्होंने शक संवत् 793 में उत्कीण्र ताम्रपत्रों का उद्धरण (पृष्ठ 112) दिया है। ताम्रपत्र में उत्कीर्ण लेखों का तुलनात्मक अध्ययन (पृष्ठ 113-115) किया है। यह ग्रंथ श्री दिगंबर जैन मंदिर चौक, भोपाल के सरस्वती भंडार में उपलब्ध है।

डॉ. रमेशचंद्र जैन के अभिमत के योगिराट् पण्डिताचार्य से प्रभावित श्री कोठारी की टीका अधिक विशद और सुबोध है। अपनी व्याख्या में डॉ. कोठारी ने स्वतंत्रता पूर्वक अपने भाव व्यक्त किये है और हर प्रकार से इसे अधिक उपयोगी बनाया है।

आचार्य विमलसागर जी की हीरक जयंति के अवसर पर भारतवर्षीय अनेकांत विद्वत परिषद

द्वारा योगिराज पण्डिताचार्य संस्कृत व्याख्या एवं डॉ. रमेशचन्द्र जैन के श्लोकों के हिन्दी अनुवाद, अर्थ एवं व्याख्या के साथ सन् 1991 मे पार्श्वाभ्युदम् पुनः प्रकाशित किया गया है। डॉ. रमेश जी द्वारा 35 पृष्ठों में लिखित विस्तृत प्रस्तावना हमें पार्श्वाभ्युदयम् के महत्व में संबंध में अपरिमित जानकारी प्रदान करती है। इस प्रकार पार्श्वाभ्युदयम् की संस्कृत अंग्रेजी एवं हिन्दी टीकायें इसके पठन-पाठन को सरल बना देती है। पाठक अपनी अपनी भाषा में इस महान ग्रंथ का अध्ययन कर सकता है।

पार्श्वाभ्युदयम् के निम्नांकित दो श्लोक पार्श्वाभ्युदयम् एवं संस्कृत साहित्य के महत्वपूण्र श्लोक हैं। महाकवि ने इन दोनों श्लोकों में लोकोत्तम पार्श्वनाथ और अधमतम कमठ की तुलना क्रमशः हिमालय पर्वत ओर छोटे से पर्वत की छोटी सी चट्टान से करने का अनुपम आनंद और आल्हाद प्राप्त किया है। आचार्य जिनसेन ने पार्श्वाभ्युदयम् में बड़े सुन्दर आकर्षक और प्रभावी शब्दों में कमठ की मूर्खता का परिहास करते हुये लिखा हे कि-

क्वाऽयं योगी भुवनमहितो दुर्विलङ्घ्यस्वशक्तिः,
क्वाऽसौ क्षुद्रः कमठदनुजः क्वेभराजः क्व दंशः।
क्वाऽऽसद् ध्यानं चिरपरिचितध्येयमाकालिकोऽ सौ,
धूमज्योति, सलिलमरूतां सन्निपातः क्व मेघः।। पार्श्वा1/17

अर्थ- जिसकी आत्म शक्ति का उल्लंघन करना कठिन है ऐसा यह योगी कहाँ ? और अधम कमठ का जीव दैत्य कहाँ ? कहॉ तो गजराज ? और कहॉ वन मक्खी ? जिसका ध्येय (आत्म तत्व) चिरंपरिचित है और पूर्ण रूप से जिसका ध्यान शोभन है ऐसा वह योगी कहॉ ? और धुआँ, अग्नि, जल तथा वायु का समुदाय और शीघ्र नष्ट हो जाने वाला यह मेघ कहॉ ?

इसका अंग्रेजी अनुवाद नीचे अंकित हैं

Where this sage, worshipped by all the worlds, possessing soul power exceedingly difficult to surpass, (and) where this wretched KAMATHA, the devil (or atrociously cruel like a devil) ; where the lord of elephants (and) where the gnat; where the excellent meditation with the object of which He was familiarized since very long (and) where the transitory, a compound (or combination) of vapor, fire, water and wind ?

भगवज्जिनसेन ने आगे लिखा है कि-

क्वायं देवो विलसदणिमाघष्टभेदस्थितिर्धिः,
क्वाल्पर्धित्वाद् गुरुसुरपशुः क्वाद्रिराट् क्वोपलौघः।
क्वास्योद्योगः क्व नु मुनिगुणा दुर्विभेदाः क्व मूकः,
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।। पार्श्व 1/18

अर्थ- शोभायमान अणिमादि आठ प्रकार के ऋद्धि से जो युक्त है ऐसा यह देव (भगवान पार्श्व) कहाँ ? और अल्पऋद्धि वाला होने से महापशु के समान यह दैत्य कहॉ ? कहॉ तो सुमेरू ? और कहाँ पत्थरों (ओलों) का समूह ? इसका उद्योग कहॉ और कष्ट से भेदन करने योग्य मुनियों के गुण कहाँ ? कहॉ तो मौनी और कहा समर्थ इन्द्रियों वाले प्राणियों द्वारा प्राप्त करने योग्य संदेश के वचन ?

इसका अंग्रेजी अनुवाद भी नीचे अंकित है-

Where this adorable soul whose supernatural power divided into eight parts like

minuteness (अणिमादि) etc, is manifest (and) where that (god) turned into a violent brute on account of possessing super human power only partially? Where the lord of mountains (and) where the heap of stones? Where the exertions of this (KAMATHA) and where indeed the invincible virtues of the sage? Where th silent (or mute) and where the message capable of being carried by living beings possessing organs of sense capable of fulfilling their functions.

आचार्य जिनसेन ने इन दोनों श्लोकों के चतुर्थ पाद महाकवि कालिदान के मेघदूत से उद्धृत कर पार्श्वाभ्युदयम् में एकीकृत कर दिये हैं। पार्श्वाभ्युदयम् ने उन्हें पूर्णतः आत्मसात कर अपने व्यक्तित्व में विलीन कर लिया है। यह समेकित भारतीय संस्कृत साहित्य और सांझी संस्कृति का अनुपम उदाहरण है।

आचार्य जिनसेन द्वारा विरचित इस पार्श्वाभ्युदयम् के चतुर्थ सर्ग के 54वें श्लोक का निम्नांकित द्वितीय पाद इस पूरे पार्श्वाभ्युदयम् काव्य की कुन्जी है :-

श्रेयस्सूते भवति भगवन्भक्तिरल्पाप्यनल्पम्।

अर्थ- भगवान पार्श्वनाथ की अत्यल्प भक्ति अनल्प पुण्य और फल प्रदान करती है।

इसका अंग्रेजी अनुवाद नीचे अंकित है-

Oh Lord ! devotion to you, though insignificant, produces bliss in abundance.

इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि जैन तीर्थ नैनागिरि में भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कर हमने और हमारे उच्च न्यायालय के न्यायाधिपतियों , साथी वरिष्ठ अधिकारियों तथा अनुभवी विद्वानों ने व्यक्तिगत रूप से स्वयं अनुभव किया है कि उनकी अल्पतम भक्ति विपुल पुण्य और प्रचुर फल प्रदान करती है। वे मौन रहते हुये भी तुरंत ही हमें सब कुछ दे देते हैं ।

अंत में यह लिखना उपयुक्त प्रतीत होता है कि मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में स्थिति प्राचीनतम जैन तीर्थ नैनागिरि के गहनवन में पार्श्वाभ्युदयम् के महानायक भगवान पार्श्वनाथ के द्वितीय भव का जीव गजराज बज्रघोष तपस्या करता था। चिरकाल तक शांतिपूर्वक विचरण और तपश्चरण करते हुये एक दिन बज्रघोष सेमरा पठार नदी में पानी पी रहा था। इसी काव्य के खलनायक कमठ के जीव कुक्कुट सर्प ने उसे काट लिया। धर्मध्यान पूर्वक शांति भव से उसने अपने प्राणों का परित्याग कर दिया। बज्रघोष ने स्वर्ग में देव के रूप में जन्म लेकर तीर्थंकर पद की अपनी यात्रा चालू रखी और आत्मोन्नति करते-करते तीर्थंकर का परमोच्च पद प्राप्त कर लिया गजराज बज्रघोष की पुण्यदाय स्मृति में नैनागिरि के इस पावन स्थल पर प्रकृति ने भारतीय पुरातत्त्वविदों के अनुसार चालीस हजार से अधिक वर्ष पूर्व उनकी विशाल, अनोखी एवं अप्रतिम प्रतिमा का निर्माण किया है। नैनागिरि में यह महत्वपूर्ण पौराणिक एवं प्राकृतिक दर्शनीय स्थल है।

अहिच्छत्र पार्श्वनाथ रामनगर किला जिला बरेली, उ.प्र. में वर्तमान ईसवी सन् 2020 से 2885 वर्ष पहले ईसा पूर्व 865 वर्ष के पूर्वार्द्ध में भगवान पार्श्वनाथ को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। केवलज्ञान प्राप्त होते ही उन्हें अपने गजराज बज्रघोष के भव का स्मरण आया। अपने ज्ञान में उन्होंने भगवान नेमिनाथ कालीन आचार्य वरदत्तादि की सिद्धभूमि की झलक देखी। अतः अर्हंत पार्श्वनाथ इसी वर्ष के उत्तरार्द्ध में नैनागिरि पधारे और ईसा पूर्व वर्ष 865 में नैनागिरि में उनका सर्वप्रथम समवशरण रचित किया गया। पार्श्वाभ्युदयम् के महानायक भगवान पार्श्वनाथ के नैनागिरि में समारोहित इस समवसरण से उद्घोषित जय पारस के प्रभावी संदेश की अनुगूंज विश्व के कोने-कोने में आज भी सुनाई देती है।

आगम दर्शन

दार्शनिक कृति युक्त्यनुशासनालङ्कार

आचार्य विद्यानंदी वेदांती विद्वान से श्रमण संस्कृति में आये हुये प्रतिभाशाली श्रेष्ठ जैनाचार्य हुये हैं उन्होंने आचार्य समन्तभद्र देव के युक्त्नुशासन अलंकार पर टीका लिखकर महान उपकार किया है।

स्वामी समन्तभद्र के 64 कारिकात्मक दार्शनिक युक्तनुशासनस्तोत्र पर विद्यानंद ने मध्यम परिमाण की यह युक्त्यनुशासनालङ्कार टीका लिखी है। टीका सरल एवं विराद है।

वस्तुतः समंतभद्र ने मूल कारिकाओं में जिन प्रमेयों की स्थापना की है, उन पर विस्तारपूर्वक इसमें विचार किया है । अद्वैतवाद, द्वैतवाद, शाश्वतवाद, अशाखतवाद वक्तव्यवाद, अवक्तव्यवाद, अन्यतावाद, अन्यतावद, अपेक्षावाद, अनपेक्षावाद, हेतुवाद, अहेतुवाद, विज्ञानवाद, बहिर्यवाद, देववाद, पुरुषार्थवाद, पाप-पुण्यवाद, बन्धवाद, मोक्षवाद और बन्ध मोक्षकारणवाद की समीक्षा विभिन्न दर्शनों के पूर्व पक्षों को उपस्थित कर रही है। निश्चयतः समग्र दर्शनों के प्रमेयों का विचार इस ग्रंथ में किया गया है। अतः हमें विद्यानन्द की श्रोतत्याष्टसहस्त्री श्रुतैः किमन्यैः सहस्त्रसंख्यनैः । विज्ञायेत ययैव स्वसमय पर समयसद्भावः । आदि गर्वोत्ति स्वभावोक्ति प्रतीत होता है।

प्रस्तुत ग्रंथ की भाषा शैली सरल सुबोध और ग्राह्य है किन्तु विषय की गंभीरता अत्यन्त गूढ़ होने से पाठक सरलता से प्रवेश नहीं कर पाता है परन्तु अचूक तर्क शैली के माध्मय से कई दार्शनिक विचारों का अनूठा विमर्श प्रस्तुत किया है। जिससे साधक को अपने साध्य सिद्ध करने में अत्यन्त सुविधा का अनुभव होगा। खरी-खरी समीक्षा करने के कारण यह ग्रंथ तत्कालीन दार्शकों के लिये नयन पथ गामी बना। प्रस्तुत ग्रंथ का स्वाध्याय करके परमात्मा के यथार्थ स्वरूप को समझकर कोई भी व्यक्ति मोक्षपथ का सच्चा रही बन सकता है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जनवरी 2022
ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे

प्रथम-

आगम अध्यात्म की गुत्थी
बातों बातों सुलझाते
भाषा की परिभाषा देकर
संस्कृति के जो गीत सुनाते
धर्म देशना चलते चलते
कल कल करती सरिता जैसे
ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे

श्रीमति रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

बोध मिले नव शोध खिले
ये जीवन का अवसर जैसे
गुरु श्री मुख से तत्त्व देशना
ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे

श्रीमति अनिता जैन, इंदौर

तृतीय-

बहुत काल की तीव्र प्रतिक्षा
पुण्योदय से कल भूत रहे
गुरु चरणों के चिन्हों पर चल
जीवन सफलीभूत रहे
दिव्य देशना धर्म देशना
सुनकर मुक्ति मिले कैसे
स्वर्ग मुक्ति का पथ दिखलाते
ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे
श्रीमति पल्लवी जैन, सागर

वर्ग पहेली क्र. 265
दिसम्बर 2021 के विजेता

प्रथम : श्रीमति इन्द्रा जैन, इंदौर
द्वितीय : श्रीमति राखी जैन, सांवरमति अहमदाबाद
तृतीय : श्रीमति रजनी जैन, दिल्ली

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ म् इ न् य् अ
2. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई भ अ व् र् ष् अ
3. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ न् इ अ् म् न् अ न् द् अ
4. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ प् र् अ व् ओ द्य्
5. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई उ स् आ प् श् व् र् अ

परिणाम :
जनवरी 2022: (1) मुनि श्री निशंकसागर जी (2) मुनि श्री निर्भान्तसागर जी (3) मुनि श्री निरालससागर जी (4) मुनि श्री निराकरसागर जी (5) मुनि श्री निर्मानसागर जी

पुराण प्रेरणा

पाण्डव पुराण में अशरण भावना

निः शरण्ये वने सिहैरा क्रान्तो मृगशावकः।
न रक्ष्यते यथा जन्तुराक्रान्तो रामकिङ्करै ।।
सायुधैः सुभटैर्वीरैतिदन्तिभिः।
यमराड् जन्तुं गृहात्याखुमिवां खुभुक ।।
आत्मनः शरणं नैव मन्त्र यन्त्रा दयोडखिला।
सत्येव किं तु पुण्यै हि तै स्थिताश्चं न के भुवि ।।
पक्षिणो नष्टयानस्य पयोधाविवि चायुषः।
शरणं सत्यपाये न स्वास्थ्यं तस्मिन्सति ध्रुवम् ।।
समर्थोऽपि सुरेन्द्रो न निजदेवी परिक्षये।
क्षमो हि रक्षितुं सोडन्याकथं रक्षति कालतः ।।
विनैकं शुद्ध चिद्रूपं कालागम्यमनश्वरम्।
शरणं देहिनाम नेव किं चिन्मोहतिचेतसां ।।

जिस तरह कि अशरण वन में सिंहों के द्वारा घेर लिये गये मृग के बच्चे को कोई भी बचाने वाला नहीं होता उसी तरह तब इस जीव को यम के नौकर घेर लेते हैं तब इसे कोई भी बचा नहीं सकता। यह यमराज ऐसा बली है कि जीव को चाहे शस्त्रधारी सुभट, भाई-बन्धु और हाथी घोड़े वगैरह क्यो न घेरे रहें पर वह कभी छोड़ता नहीं, जैसे बिल्ली चूहे को नहीं छोड़ती लपक कर झट से पकड़ लेती है। अतः कहना चाहिये की मंत्र, यंत्र आदिक आत्मा के लिये कोई भी शरण नहीं है। एक मात्र शरण है अपना किया हुआ पुण्य। जिस तरह समुद्र के बीच जाकर जिस पक्षी ने नौका का सहारा छोड़ दिया उसके लिये कोई भी शरण नहीं होता उसी तरह आयु पूर्ण हो जाने पर इस प्राणी के लिये शरण नहीं होता जबकि सुरेन्द्र भी अपनी देवियों की काल के चाल से रक्षा करने के समर्थ नहीं होता तब दूसरा कौन है जो उससे आत्मन् तेरी रक्षा कर सके। तात्पर्य यह है कि चिद्रूप काल द्वारा अगम्य अविनश्वर और शुद्धात्मा के बिना मोहित, चित्त प्राणियों के लिये और कोई भी शरण नहीं है- एक आत्मा ही शरण है।

केरियर

खेल में केरियर

खेल के क्षेत्र में मिलने वाले धन और सम्मान के कारण प्रत्येक खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर भाग लेना चाहता है, परन्तु उस स्तर पर पहुंचने के लिये आपको बहुत मेंहनत और लगन के साथ अपने प्रदर्शन में सुधार करना होगा, भारत सरकार की **खेलो इण्डिया** योजना के माध्यम से लोगों की रूचि खेल की तरफ बढ़ी है, खेल के क्षेत्र में सिर्फ खिलाड़ी के रूप में ही नहीं बल्कि इससे सम्बंधित अन्य क्षेत्रों में अपना बेहतर करियर बनाया जा सकता है।

स्पोर्टस मैनेजमेंट: आज के समय में बहुत बड़े-बड़े खेलों का आयोजन किया जाता है, जिसको सही से संचालित करने के लिये एक मैनेजमेंट टीम की आवश्यकता होती है, आप इस क्षेत्र में एक मैनेजमेंन्ट टीम का हिस्सा बन कर अपना करियर बना सकते हैं। स्पोर्ट्स मैनेजमेंट में विज्ञापन, बाजार, दर्शक, सुरक्षा आदि शामिल होती है।

स्पोर्ट्स पत्रकारिता में करियर: आज कल टीवी में खेल समाचार को अलग से दिखाया जाता है और प्रतियोगी परीक्षा में इससे सम्बंधित प्रश्न जरूर पूछे जाते हैं, इसलिये खेल से सम्बंधित सभी गतिविधियों से अपडेट होना अनिवार्य हो गया है यदि आप खेल की जानकारी रखते हैं तो आप आसानी से इसकी रिर्पोटिंग कर पायें और एक आप एक खेल पत्रकार के रूप में करियर बना सकते हैं।

स्पोर्ट्स मार्केटिंग: प्रत्येक खेल प्रतियोगिता की सफलता उसके दर्शकों पर होती है, मार्केट में खेल को लोकप्रिय बनाना ही स्पोर्ट्स मार्केटिंग कहलाता है, इस कला को समझना आसान नहीं होता है, खेलों की मार्केटिंग करके आप पैसा व पद दोनों को प्राप्त कर सकते हैं।

स्पोर्ट्स डाइटिशियन: प्रत्येक खिलाड़ी पर उसके खान-पान का विशेष प्रभाव पड़ता है खिलाड़ी का प्रदर्शन खान-पान पर ही निर्भर करता है, किसी भी चीज की कमी या अधिकता उनके स्टेमिना को प्रभावित कर सकती है, अतः स्पोर्ट्स डाइटीशियन के रूप में कार्य करके आप अपना करियर बना सकते हैं।

खेल अध्यापक: भारत सरकार खेल को बढ़ावा देने के लिये सभी विद्यालयों में खेल अध्यापक की नियुक्ति करती हैं, आप स्नातक के पश्चात बीपीएड करने के उपरांत आप किसी विद्यालय में खेल टीचर के रूप नियुक्त हो सकते हैं , इन दिनों अच्छे स्पोर्ट्स टीचर की खूब डिमांड हो रही है, स्पोर्ट्स में रूचि रखने वालों के लिये स्पोर्ट्स टीचर एक अच्छा करियर आप्शन साबित हो सकता है।

साइकोलॉजिस्ट के रूप में करियर: प्रत्येक खेल में हार जीत होती है जिसका प्रभाव खिलाड़ी के स्वास्थ्य पर बहुत पड़ता है किसी भी हार के बाद खिलाड़ी को प्रोत्साहित करनें और उसको मानसिक रूप से मजबूत करने के लिये एक साइकोलॉजिस्ट की जरूरत पड़ती है अतः आप एक साइकोलॉजिस्ट के रूप में अपना करियर बना सकते हैं।

योग्यता: 12वीं / स्नातक , पाठ्यक्रम: क्षेत्र के अनुसार

■ 1 दिसम्बर

- पुलवामा: एक भीषण मुठभेड़ में जैश ए मुहम्मद जिला कमांडर यासिर पर्रे ढेर हुआ उसका पाकिस्तानी साथी फुरकान उर्फ अली भाई मारा।

- मुलताई: शहर के 10 किमी दूर बस ट्रक की भिड़त से 6 लोगों को मौत हुई 15 यात्री गंभीर रूप में घायल हुये।

- म.प्र. राज्यशासन ने एक महिला आरक्षक को लिंग परिवर्तन की अनुमति दी।

■ 2 दिसम्बर

- ओमिक्रॉन वैरियंट ने भारत में दस्तक दी दो मामले कर्नाटक में मिले।

- रायसेन: फिल्म कलाकार ब्रह्म स्वरूप मिश्र का निधन हुआ वे 32 वर्ष के थे।

- सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार से कहा 24 घंटे में बतायें वे कैसे प्रदूषण पर काबू करेंगे।

■ 3 दिसम्बर

- जगदीश ठाकुर गुजरात कॉंग्रेस के अध्यक्ष बने।

- पंजाबी गायक सिद्धू मूसेबाला कॉंग्रेस में शामिल हुये।

- गुरुग्राम: शुक्रवार को जुमा की नमाज का विरोध हुआ एक समूह के लोगों ने जय श्री राम के नारे लगाये।

■ 4 दिसम्बर

- भोपाल: राज्य निर्वाचन आयोग ने तीन चरण में पंचायत चुनाव की घोषणा की।

-लाहौर: पाकिस्तान में श्रीलंकाई नागरिक की लीचिंग मामले में 118 लोग गिरफ्तार हुये।

- पहली भारत ने विदेशी नीति से रक्षा नीति को अलग किया।

■ 5 दिसम्बर

-नागालैण्ड के मोना जिले में स्थित ओटिंग के तिरूमें सैन्यशिविर हमले के बाद गोली बार में 13 लोगों की मौत हुई भड़की हिंसा में 5 लोगों की मौत हुई। 1 जवान शहीद हुआ।

- दुनिया के 50 देशों में ओमिक्रॉन फैला परन्तु 1 की भी मौत नहीं हुई।

- अभिनेत्री जैकलीन फर्नाडीज को एयरपोर्ट पर विदेश जाने से रोका।

■ 6 दिसम्बर

- रूस के राष्ट्रपति बालिदमीर पुजिन भारत आये 5000 करोड़ का करार हुआ।

- म्यांमार की अपदस्थ नेता आंगसानं को 4 साल की कैद सजा सुनाई।

- यू.पी. शिया वक्फ बोर्ड के पूर्व चेयरमेन सैयद बसीम रिजवी ने इस्लाम छोड सनातम धर्म अपनाया अब उनका नाम जितेन्द्र नारायण त्यागी हुआ।

■ 7 दिसम्बर

- इम्फाल: म्यांमार सीमा के पास मणीपुर के मोरेह कस्बा में सुरक्षा बल ने 500 करोड़

का ड्रग्स जब्त किया।

- आसमिया साहित्यकार नीलमणि फूकन को एवं कोकणी साहित्यकार दामोदर मौउजी को 2021 एवं 2022 का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार देने की घोषणा हुई।

- सिख विरोधी दंगों के दौरान दोहरे हत्याकांड में कॉंग्रेस से पूर्व सांसद सज्जन कुमार पर राउज एवन्यू कोर्ट ने आरोप तय किया।

■ 8 दिसम्बर

- भारत के प्रथम सीडीएस सैन्य अधिकारी विपिन रावत सपत्नि हैलीकॉप्टर हादसा में निधन हुआ। उनके अन्य 13 सैन्याधिकारियों की मौत हुई।

- जर्मनी के नये चांसलर ओलाफ शोल्ज बने 16 वर्ष बाद अंगीला मार्कल का कार्यकाल समाप्त हुआ।

- भारत ने ब्रह्मोस सुपर सैनिक क्रूल मिसाइल के एयन वर्जन का सफल परीक्षण बालेश्वर (उड़िसा) में हुआ।

■ 9 दिसम्बर

- इंदौर और भोपाल में पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू हुई। गृह विभाग ने अधिसूचना जारी की।

- संयुक्त किसान मोर्चा ने किसान आंदोलन समाप्त करने की घोषणा की।

- जबलपुरः म.प्र. उच्च न्यायालय ने पंचायत चुनाव में हस्तक्षेप करने से इंकार किया।

■ 10 दिसम्बर

-104 हिंदुओं व सिखों का जत्था अफगानिस्तान से भारत आया इसमें 10 भारतीय नागरिक शेष अफगानी थे।

- सी.डी.एस विपिन रावत व उनकी पत्नी सर्वोच्च सैन्य सम्मान पूर्वक अंतिम संस्कार हुआ।

-शहडोलः थाना परिसर में तम्बाकू थूकने पर 4 पुलिसकर्मी लाइन अटैच हुये।

■ 11 दिसम्बर

- सउदी अरब ने सुन्नी मुसलमान की तबलीगी जमात पर प्रतिबंध लगाया जमात को आतंक का द्वार कहा।

- भारतवंशी गौतम राघवन अमेरिकी राष्ट्रपति कार्यालय कर्मिकों के प्रमुख बने।

- गुडगांव में खुले में नमाज पढ़ने पर हरियाणा सरकार ने रोक लगाई।

■ 12 दिसम्बर

- भारत-अफगानिस्तान संबंध को अफगान के राजदूत फरीद मामुंदजाय ने बेहद महत्वपूर्ण माना।

- अमेरिकी के 6 राज्यो में 200 मील प्रतिघंटा की गति से तबाही तूफान आया जिसमें सैकड़ों कारें उड़ी।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्रमोदी का ट्विटर अकाउंट हैक हुआ।

■ 13 दिसम्बर

- चंडीगढ की हरनाज संधू ने मिस यूनिवर्स का खिताब जीता।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नव्य दिव्य भव्य श्री काशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण किया।

- बड़ोदराः मिशनरीज ऑफ चैरिटी की तरफ से संचालित बाल गृह के निर्देशक खिलाफ मंतातरण के प्रयास के मामलों में मुकदमा दर्ज किया गया।

■ 14 दिसम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय सुरक्षा की आवश्यकताओं के ध्यान में रखते हुये उत्तराखंड में चारधाम परियोजना में चीन से सीमा जोड़ने की इजाजत दी।

- 19 महिने बाद भारत में कोरोना के सबसे कम 5784 मामले मिले तथा 252 मरीजों की जान गई।

- इंडोनेशिया के फ्लोरेंस द्वीप के पास समुद्र में 1.3 की तीव्रता से भूकम्प आया।

■ 15 दिसम्बर

-कन्नूर हेलीकॉप्टर हादसे में एक मात्र जीवित बचे ग्रुप कैप्टन प्रतापसिंह का निधन हुआ।

- भाजपा शासित प्रदेशों के आठ मुख्यमंत्रियों ने अयोध्या में रामलला के दर्शन किये।

-कोलकाताः यूनेस्क ने दुर्गा पूजा उत्सव को विरासत सूची में डाला।

■ 16 दिसम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राज्य सरकारों प्राकृतिक खेती को जन आंदोलन बनाने की अपील की।

- दक्षिण कश्मीर में कुलग्राम के रेडवनी में नौ घंटे चली मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने द रजिस्टेंस फ्रंट (टी.आर. एफ.) के दो आतंकी मार गिराये।

- मासूम से दुष्कर्म और नृशंस हत्या के मामले में सूरत की जिला अदालत ने 10 दिन के भीतर एक और दोषी को फांसी की सजा सुनाई।

■ 17 दिसम्बर

- मध्यप्रदेश में पंचायत चुनाव में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) आरक्षण प्रक्रिया पर सुप्रीम कोर्ट ने स्टे लगा दिया है।

- नई दिल्लीः पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह पंजाब विधानसभा चुनाव भाजपा के साथ मिलकर लड़ेगे।

- रेप को लेकर कर्नाटक विधानसभा में कॉंग्रेस विधायक के.आर. रमेश कुमार द्वारा की गई अभद्र टिप्पणी पर सियासी बवाल खड़ा हो गया।

■ 18 दिसम्बर

- 2002 में गोधरा में ट्रेन आगजनी और 1984 के सिख दंगों की जांच करने वाले सुप्रीम कोट्र के जज रहे जीटी नानावली का निधन हो गया वह 86 साल के थे।

- पाकिस्तान के प्रमुख शहर करांची में हुये बम धमाके में 14 लोगों की मौत हो गई जबकि 15 लोग घायल हो गये।

■ 19 दिसम्बर

- प्रदेश में सबसे कम दो (1.8) डिग्री सेल्सियसम तापमान ग्वालियर उमरिया एवं नौगांव में दर्ज किया गया।

- मध्य फिलीपींस में एक द्वीप प्रांत के विनाशकारी तूफान से कम से कम 72 लोगों की मौत हो गई।

- पाकिस्तान से छटे राजस्थान के जैसलमेर जिले में स्थित किशनगढ़ फील्ड फायरिंग रेंज में मोर्टार का गोला फटने से (बीएसएफ) के एक जवान की मौत हो गई।

■ 20 दिसम्बर

- मतदाता पहचान पत्र को आधार से जोड़ने सहित चुनाव सुधारों से जुड़ा चुनाव कानून संशोधन विधेयक 2021 विपक्ष के

भारी हंगामें के बीच लोकसभा से ध्वनिमत से पारित हो गया।

- भारत ने पहली बार ऐसे 20 यू ट्यूब चैनल की पहचान कर उसे ब्लॉक करने के आदेश जारी किया है जिसके जरिये पाकिस्तान भारत में झूठी अफवायें फैलाता रहता था।

- हांगकांग में लोकतंत्र समर्थकों की आवाज को दबाने के लिये चली गई चीनी चाल कामयाब हुई।

■ 21 दिसम्बर

- प्रदेश में त्रि स्तरीय पंचायत चुनाव ओबीसी आरक्षण के साथ ही होंगे सी.एम. शिवराज सिंह चौहान ने विधानसभा में ऐलान किया।

- लोकसभा में केन्द्रिय महिला और बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने लड़कियों की शादी की उम्र 18 से बढ़ाकर 21 साल कराने के लिये बाल विवाह प्रतिषेध बिल 2021 पेश किया।

- बाम्बे हाईकोर्ट ने अहम फैसला सुनाया कोर्ट ने कहा लंबी रिलेशनशिप में शारीरिक संबंध के बाद शादी से इंकार को धोखाधड़ी नहीं कह सकते।

■ 22 दिसम्बर

- लखनऊ- सनराइज ओवर अयोध्या नामक पुस्तक में हिन्दुत्व की तुलना बोको हराम और इस्लामिक स्टेट से करने के मामले में अदालत ने पूर्व विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने का आदेश दिया है।

-केरल के अलाप्पुणा में भारतीय जनता पार्टी के ओ.बी.सी मोर्चा के राज्य सचिव रंजीत श्री निवासन की हत्या के मामले में पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

- किसान आंदोलन को लेकर एक अलगांववादी संगठन की कथित पोस्ट के मामले में दर्ज एफ.आई.आर के सिलसिलें में कंगना रनोट पुलिस के सामने पेश नहीं हो सकी।

■ 23 दिसम्बर

- भोपालः देश में ओमिक्रॉन के खतरे के कारण राज्य सरकार ने फिर सख्त कदम उठा लिये हैं नाइट कर्फ्यू लागू किया है।

- भोपालः विधानसभा में सर्वसम्मति से सकल्प पारित किया गया कि पंचायत चुनाव ओबीसी आरक्षण के बिना नहीं कराये जायें।

- लुधियाना में जिला अदालत परिसर के अंदर हुये विस्फोट में एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि चार अन्य गंभीर घायल हो गये।

■ 24 दिसम्बर

- श्रीनगरः अनंतनाग और कुलगाम में भाजपा के पांच कार्यकर्त्ताओं और एक पुलिस इंस्पेक्टर के लिये हत्या में शामिल हिजबुल मुजाहिदीन के कुख्यात आतंकी शहजाद अहमद सेह को सुरक्षाबलो ने मार गिराया।

- कानपुरः में इत्र कारोबारी पीयूष जैन के यहाँ 150 करोड़ की नकदी मिली।

- दक्षिणी बांग्लादेश की सुगंधा नदी में एक तीन मंजिला फेरी में आग लगने से कम से कम 40 लोगों की मौत हो गई और 150 से अधिक लोग जख्मी हो गये।

■ 25 दिसम्बर

- भारतीय मूल के नारंद्रन जोड़ी कोल्लापन का दक्षिण अफ्रीका की सर्वोच्च न्यायिक पीठ संवैधानिक अदालत में नियुक्त किया।

- भारत की 2011 वर्ल्ड कप विजेता टीम का साइन किया बल्ला दुबई में करीब 19 लाख रूपये में नीलाम हुआ।

-बैग्लुरुः यूपी योद्धा ने प्रो. कबड्डी लीग के 8वें सीजन में जीत का खाता खोल दिया।

■ 26 दिसम्बर

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने सेरोगेसी (विनियमन) अधिनियम 2021 को मंजूरी दे दी है।

- मथुराः म्यूजिक एल्बम में भजन पर अभिनेत्री सनी लियोनी के अश्लील नृत्य पर हिन्दुत्ववादियों में रोष है।

- नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कार्यकर्ता डेसमंड टूटू का निधन हो गया।

■ 27 दिसम्बर

- तेलंगाना और छत्तीसगढ़ सीमा पर मुठभेड़ में छह माओवादी मारे गये।

- पटनाः जदयू के राज्यसभा सदस्य महेन्द्र प्रसाद उर्फ किंग महेन्द्र 81 का निधन हो गया।

- सामोलिया के राष्ट्रपति मोहम्म्द फरमाजो ने भ्रष्टाचार को लेकर प्रधानमंत्री मोहम्मद हुसैन रोबल को पद से हटा दिया है।

■ 28 दिसम्बर

- मध्यप्रदेश में 6 जनवरी से तीन चरणों मे होने जा रहे पंचायत चुनाव फिलहाल निरस्त हो गये।

- अबुधाबीः संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने पहली बार एक गैर मुस्लिम जोड़े को नागरिक विवाह लायसेंस जारी किया है।

- महाराष्ट्र सरकार ने राज्य विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव टाल दिया।

■ 29 दिसम्बर

- प्रवर्तन निदेशालय (ई डी) ने मनीलॉड्रिंग के मामले में महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख के खिलाफ पूरक अरोप पत्र दाखिल किया।

- लखनऊः झांसी रेल्वे स्टेशन का नाम अब वीरांगना लक्ष्मी बाई रेल्वे स्टेशन जक्शन कर दिया।

- रक्षा मंत्रालय ने 351 रक्षा उपकरणों के आयात पर लगाया प्रतिबंध।

■ 30 दिसम्बर

- साहित्य अकादमी ने हिन्दी के लिये दया प्रकाश सिन्हा और अंग्रेजी के लिये नमिता गोखले समेत 20 भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों को अकादमी पुरुस्कार देने की घोषण की।

- अर्जेटीन के पेटागोनिया क्षेत्र में जंगल की आग लग गई है। आग ने 300 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को अपनी चपेट में लिया।

- सूड़ान में फंसे 62 भारतीय पासपोर्ट छीना मरने की नौबत का सामना करना पड़ रहा।

■ 31 दिसम्बर

- अमरीका के डेनवर में कोलोराडो के जंगल में लगी आग के फैलने से 580 घर एक होटल व एक शॉपिंग सेंटर जलकर खाक हो गई।

-बी.के. त्रिपाठी को रेल्वे बोर्ड का नया चेयरमेन नियुक्ति किया गया है।

- श्रीनगर के पथा चौक में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में तीन आतंकी मारे गये।

इसे भी जानिये

राष्ट्रीय आंदोलन की महत्वपूर्ण तिथियाँ

1. भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 10 मई 1857
2. ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन का अन्त विक्टोरिया भारत की साम्राज्ञी घोषित 1858
3. इंडियन काउसिंल एक्ट- 1861
4. स्वामी विवेकानन्द का जन्म- 1863
5. प्रार्थना समाज की स्थापना-1867
6. महात्मा गांधी का जन्म- 2 अक्टूबर 1869
7. कूका विद्रोह- 1872
8. थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना 1875
9. आर्य समाज की स्थापना 1875
10. लार्ड लिटन द्वारा दिल्ली दरबार का आयोजन 1877
11. प्रथम फैक्टरी अधिनियम 1881
12. हंटर कमीशन, स्थानीय स्वशासन का आरम्भ 1882
13. थियोसोफिकल सोसाइटी केन्द्र अडयार 1882
14. इल्बर्ट बिल 1883
15. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885
16. इंडियन काउंसिल एक्ट 1892
17. रेड एवं आपरस्ट हत्याकाण्ड 1893
18. भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित 1904
19. बंगाल का विभाजन 1905
20. मुस्लिम लीग की स्थापना 1906

कविता

आदीश्वर के द्वारे

झूम झूम के नाचें सुर नर आदीश्वर के द्वारे
गोलाकोट के तीर्थधाम की महिमा अपरंपार
इस तीरथ के अतिशय भारी है इतिहास विशाल
प्रकृति गोद में गूँजे हर दम भक्ति की सुर ताल
बड़े पुण्य से मिला हमें यह पुरखों का उपहार
शीतल पवन चले जब मनहर हरे खेत जब लहराये
फूल तरूँ की ताल गुलाबी नाचें शाखा इठलायें
प्रभु भक्ति में लीन भक्तगण गायें मंचलाचार

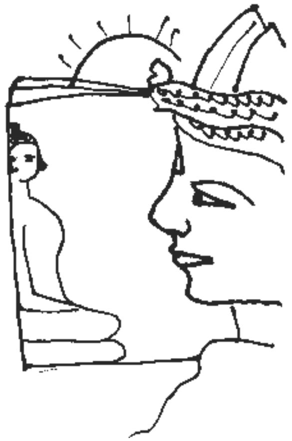

दिशा बोध

व्यर्थ भाषण

1. निरर्थक शब्दों से जो अपने श्रोताओं में उद्वेग पैदा करता है, वह सबके तिरस्कार का पात्र होता है।
2. अपने मित्रों को दुःख देने की अपेक्षा अनेक लोगों के आगे व्यर्थ की बकवास करना बहुत बुरा है।
3. जो निरर्थक शब्दों का आडम्बर फैलाता है, वह अपनी अयोग्यता को ऊँचे स्वर से घोषित करता है।
4. सभा में जो व्यर्थ की बकवास करता है, उस मनुष्य को देखो; उसे और कुछ लाभ होने का नहीं , पर जो कुछ उसके पास अच्छी बातें होंगी, वे भी छोड़कर चली जावेंगी।
5. यदि व्यर्थ की बकवास अच्छे लोग भी करने लगें, तो वे भी अपने सम्मान और आदर को खो बैठेंगे।
6. जिसे निरर्थक बातों को करने की अभिरूचि है, उसे मनुष्य ही नहीं मानना चाहिए। कदाचित् उससे भी कोई काम आ पड़े, तो समझदार आदमी उससे कचरे के समान ही काम लेवें ।
7. यदि समझदार को योग्य मालूम पड़े, तो मुख से कठोर शब्द (बोल ले)कर ले; क्योंकि यह निरर्थक भाषण से कहीं अच्छा है।
8. जिनके विचार बड़े-बड़े प्रश्नों को हल करने में लगे रहते हैं, ऐसे लोग विकथा के शब्द अपने मुख से निकालते ही नहीं।
9. जिनकी दृष्टि विस्तृत है, वे भूलकर भी निरर्थक शब्दों का उच्चारण नहीं करते।
10. मुख से निकालने-योग्य शब्दों का ही तू उच्चारण कर, परन्तु निरर्थक शब्द मुख से मत निकाल।

तपस्वी आचार्य वर्धमान सागर

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

भारतीय संस्कृति के उन्नयन में श्रमण संस्कृति का महनीय योगदान है। श्रमण संस्कृति के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती है। इस गौरवमयी परंपरा में परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज का अहम योगदान है। उन्होंने जो भी बीड़ा उठाया वह अपने आप में एक बेमिसाल कदम हैं। भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर तक सिद्धांतों-शिक्षाओं का जन-जन तक पहुंचा कर इस दीक्षा को सार्थक किया। उन्होंने भगवान महावीर सर्वोदय तीर्थ को पढ़ा चिंतन से उसकी युगानुरूप छटा भी बिखेरी। भगवान महावीर की तरह अध्ययन को चिंतन की कसौटी पर कस कर आचरण में उसका अनुवाद करना अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने जीवन को जो दिशा खोजी वह ऐतिहासिक थी और उस पर चलकर भी एक ऐतिहासिक उपलब्धि प्राप्त की।

परम पूज्य आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज का गृहस्थ अवस्था का नाम यशवंत कुमार था। श्री यशवंत कुमार का जन्म मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के सनावद ग्राम में हुआ। श्रीमति मनोरमा देवी एवं पिता श्री कमलचंद्र जैन पंचोलिया के जीवन में इस पुत्र रत्न का आगमन दिनांक 18 सितम्बर सन् 1950 को हुआ। आपने बी.ए. तक लौकिक शिक्षा ग्रहण की, सांसारिक कार्यों में आपका मन नहीं लगता था। संयोगवश परम पूज्य ज्ञानमती माताजी का सनावद में चातुर्मास हुआ जिसमें आपने अपने वैराग्य सम्बंधी विचारों को और अधिक दृढ़तर बनाया आपने आचार्य श्री विमलसागर जी महाराजे से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। 18 वर्ष की अवस्था में आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज से आपने मुनि दीक्षा ग्रहण की। श्री शांतिवीर नगर, श्री महावीर जी में मुनि दीक्षा आपको मुनि श्री वर्धमान सागर नाम मिला। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज की परम्परा के पंचम पट्टादीश होने को आपको गौरव प्राप्त है, इस पंचम काल में कठोर तपश्चर्या धारी मुनि परम्परा को पुनः स्थापित करने का जिन आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज को गौरव हासिल हुआ है। उसी परम्परा के पंचम पट्टाधीश के रूप निर्दोष चर्या का पालन करते हुये पूरे देश में धर्म की गंगा गहाने का पुण्य मिलना निश्चित इस जन्म के अलावा पूर्व जनम की साधनाओं का ही सुफल है।

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी अत्यंत सरल स्वभावी होकर महान क्षमा मूर्ति शिखर पुरुष हैं, वर्तमान वातावरण में चल रही सभी विसंगताओं एवं विपरीतताओं से बहुत दूर हैं, उनकी निर्दोष आहार चर्या से लेकर सभी धार्मिक क्रियाओं में हम आज भी चतुर्थ काल के मुनियों के दर्शन का दिग्दर्शन कर सकते हैं।

नमस्कार से चमत्कारः चमत्कार से नमस्कार नहीं, बल्कि नमस्कार में छुपा हुआ होता है अगर भक्ति निष्काम हो तो। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज जब मुनि अवस्था में थे तब दीक्षा के उपरांत महाराज की नेत्र ज्योति चले गई थी, जब उन्होंने जयपुर (खानिया जी) के चन्द्रप्रभु मंदिर में शांति भक्ति का पाठ किया था तब 52 घंटों के बाद नेत्र ज्योति वापस आई थी।

चारित्र चक्रवती प्रथमचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण पट्टपरम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य श्री 108 अजितसागर जी महाराज पत्र के माध्यम से लिखित आदेश अनुसार पारसोला राजस्थान में 24 जून 1990 आषाढ़ सुदी दूज को आचार्य पद गुरु आदेश अनुसार दिया गया।

दीक्षायेंः आचार्य श्री वर्धमानसागर जी गुरुदेव ने अभी तक 87 दीक्षायें दी हैं। मुनि दीक्षा 30, आर्यिका दीक्षा 33, ऐलक दीक्षा 01, क्षुल्लक दीक्षा 13, क्षुल्लिक दीक्षा 10, कुल 87

सल्लेखना समाधिः वात्सल्य वारिधि यथा नाम गुण यह पंक्ति आप पर चरितार्थ होती हैं आप साधुओं की संल्लेखना इतने वात्सल्य भाव मनोयोग करूणा भाव से कराते हैं कि हर श्रावक श्राविका साधु की यही कामना होती है कि उनका उत्कृष्ट समाधिमरण आपके सान्निध्य में हो। विगत वर्ष में बेलगांव में 8 समाधिमरण संल्लेखना हुई। सन् 1987 से वर्तमान 2021 तक संघस्थ साधुओं दीक्षित साधुओं, श्रावक- श्राविकाओं की बहुत की वात्सल्य भाव से समाधि संल्लेखना कराई है। विशेष रूप से वर्ष 2020 मे दीक्षित 7 साधुओं की बेलगांव में तथा एक साधु की संल्लेखना बस्तवाद में कराई।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा- आचार्य पद के बाद 58 पंच कल्याणक प्रतिष्ठा संपन्न कराई।

चातुर्मासः वर्ष 1969 से 2020 तक 52 चातुर्मास विभिन्न नगर, राजधानी अतिशय क्षेत्रों पर किया।

चातुर्मास सूची -01.1969जयपुर, 02. 1970 टोंक, 03. 1971 अजमेर, 04. 1972 पहाड़ी धीरज, 05. 1973 नजफगढ़, 06. 1974 दिल्ली, 07. 1975 सरधना, 08. 1976 मेरठ, 09. 1977 किशनगढ़, 10. 1978 आनंदपुर कालू, 11. 1979 निवाई, 12. 1980 पदमपुरा, 13. 1981 भीलवाड़ा, 14. 1982 लोहारिया, 15. 1983 प्रतापगढ़, 16. 1984 अजमेर, 1985 लूणवा नागौर, 18. 1986 सुजानगढ़ 19. 1987 किशनगढ़, 20. 1988 भींडर, 21. 1989लोहारिया।

24. जून 1990 आचार्य पद प्रदान किया गया। आचार्य अवस्था में किये गये चातुर्मास इस प्रकार हें। 22. 1990 पारसोला, 23. 1991 अणिदापार्श्वनाथ, 24. 1992 तारंगा जी गुजरात, 25. 1993 श्री श्रवणबेलगोला, 26. 1994 श्रवणबेलगोला 27. 1995 कुम्भोज बाहुबली, 28. 1996 गिंगला, 29. 1997 पारसोला, 30. 1998 किशनगढ़, 31. 1995 जयपुर, 32. 2000 टौडराय सिंह, 33. 2001 धरियावद, 34. 2002 उदयपुर, 35. 2003 भींडर, 36. 2004 सलूम्बर 37. 2005 श्रवणबेलगोला, 38. 2006 पौन्नूर मले, 39. 2007 श्रवणबेलगोला, 40. 2008 सम्मेदशिखर जी, 41. 2009 चंपापुर, 42. 2010 कोलकत्ता, 43. 2011 सम्मेद शिखर जी, 44. 2012 पपौरा जी जिला टीकमगढ़, 45. 2013 कुण्डलपुर जिला दमोह, 46. 2014 किशनगढ़, 47. 2015 निवाई, 48. 2016 सिद्धवरकूट, 49. 2017 श्रवणबेलगोला, 50. 2018 श्रवणबेलगोला, 51. 2019 यरनाल, कर्नाटक, 52. 2020 बेलगांव, 53. 2021 कोथली संभावित।

आचार्य श्री ने 12 राज्यों राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु, झारखंड, बिहार, बंगाल व मध्यप्रदेश में ये मंगल प्रभावनामयी चातुर्मास किये हैं। उल्लेखनीय है कि श्रवणबेलगोला कर्नाटक में बाहुबली भगवान के सुप्रसिद्ध महामस्तकाभिषेक में वर्ष 1993, 2006 एवं वष्र 2018 में प्रमुख नेतृत्व दिया गया। श्री श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिशेक में भारत के राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री जी, मुख्यमंत्री जी, राज्यपाल सहित अनेक वरिष्ठ राजनेताओं ने आशीर्वाद प्राप्त कर जीवन को धन्य बनाया।

आचार्य श्री से जुड़े विशेष उल्लेखनीय तथ्यः

1. पानी की व्यवस्था गुजरात में आहार के लिये पानी कुए का पानी लबालब हुआ।
2. श्रवणबेलगोला में 1993 में मूसलाधार वर्षा से पानी की समस्या दूर।
3. कोथली में प्रवेश के पूर्व नदी-नाले, कूप पानी से लबालब।

4. कमंडल के पानी से श्रावक बालक को नया जीवन मिला।

5. **13 का अशुभ अंक बना शुभ-** आपके जन्म के पूर्व 8 भाई और चार बहनों ने जन्म लिया जो काल के ग्रास बने। 13वीं संतान का अंक आपके जन्म से शुभ बना और आज जगत के तारणहार हो गये। मानव से महामानव हो गये। आप के बाद चौदहवीं संतान भी बाद में जीवित नहीं रही। आप माता-पिता की एकमात्र जीवित संतान हैं।

6. **पैर में चक्र:** कनक गिरि में आपके पैर में कष्ट होने पर भट्टारक स्वामी जी ने देखा कि आपके पैर में चक्र है जो कि इस बात का सूचक है कि आचार्य श्री वर्धमानसागर जी के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार और बहुत प्रभावना होगी।

7. **अद्भुत संयोग:** बारह संतानों के निधन के कारण माता-पिता ने श्री महावीर में उल्टा स्वस्तिक बनाकर उनके लंबे जीवन की कामना की थी, यह संकल्प किया था कि इनके जन्म के बाद इनके बाल उतारेंगे इनके बाल निकालेंगे। संयोग कहें कि इनकी मुनि दीक्षा वही श्री महावीर जी में हुई और उनके केशलोंच हुये।

8. पद के प्रति उदासीनता। उपाध्याय पद लेने से इनकार।

9. आचार्य श्री का प्रमुख संदेश समाज में कैंची नहीं सुई बनकर रहो। जहाँ जो परंपरा चल रही है उससे छेड़छाड़ न करें।

10. इचलकरंजी सहित अनेक नगरों की समाज को एक किया। अपूर्व वात्सल्य बीतार श्रावक को दर्शन देने स्वयं चलकर गये। टोडरायसिंह में दिगंबर श्वेतांबर समाज को एक किया।

11. कोई प्रोजेक्ट नहीं। पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमानसागर जी के नाम पर कोई क्षेत्र या गिरि नहीं है। श्रावक के दान का सदुपयोग हो यही उनकी मंगल प्रेरणा रहती है।

12. **पूर्वाभास:** पूर्वाभास के कारण एक स्थान पर रात्रि विश्राम नहीं किया। मैरिज गार्डन के कारण कुछ श्रावकों ने वहां विश्राम किया। उस गांव के बारूद फैक्ट्री में अचानक आग लगती हे और सभी श्रावक रात्रि में आचार्य श्री के पास पहुंचते हैं। जब पता लगता है कि रात्रि को गांव में आग लगाई थी और जान माल का खतरा हो गया था। आचार्य श्री वर्तमान के वर्धमान के समान साधना और प्रभावना कर रहे हैं। उनके जीवन की बहुत विशेषतायें हैं। वे परिस्थितियों के मसाने झुके नहीं, उपसर्गों व परीषहों से वे डरे नहीं और रूके न हीं, निरंतर गतिमान उनका जीवन रहा है और आदर्शमय चारित्र के द्वारा जहां एक ओर धर्म की प्रभावना की उसके साथ ही उन्होंने आदर्श जीवन को रखकर हम सब का मार्गदर्शन कर रहे हैं। उनका मार्ग आगम सम्मत ही होता है। हमारी संस्कृति की सुरक्षा में उनका अविस्मरणीय अवदान है।

विचार ओर आचार की क्रिया विधि रूप जीवन शैली में अद्भुत सहजता है आचार्य श्री वर्धमान सागर जी में, इसीलिये वे वात्सल्य वारिधि हैं एवं विचार और आचार परिशुद्धि में निरंतर वर्धमान। आचार्य श्री कहा कहना है कि मैं अपनी क्रिया छोडूंगा नहीं और आपको अपनी क्रिया करने के लिये बाध्य भी नहीं करूंगा। यह समन्वय का सूत्र उन्होंने दिया है। आचार्य श्री वर्धमानसागर जी श्रमण परम्परा व धर्म और संस्कृति की ध्वजा निरंतर लहरा रहे हैं।

मेरा सौभाग्य रहा है कि पूज्य आचार्य श्री का मंगल आशीर्वाद मुझे अनेकों अवसरों पर मिला है तथा उनके सान्निध्य में आयोजित विद्वत संगोष्ठियों का संयोजन करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा पुरस्कार समर्पण समारोह में भी संयोजन करने का सुअवसर मिला है।

आचार्य श्री के 32वें आचार्य पदारोहण दिवस पर उनके चरणों में कोटिशः नमन।

आओ सीखे : जैन न्याय

जैन न्याय परम्परा के संवाहक आचार्य

जैन न्याय परम्परा के ऐतिहासिक महापुरुष भगवान पार्श्वनाथ ईसा से पूर्व 800 वर्ष में हुए थे। उन्होंने जैन धर्म का अभूतपूर्व प्रवर्तन किया था। उनके 250 वर्ष बाद भगवान महावीर स्वामी हुए, भगवान महावीर के उपदेशों में बारह अंग उपलब्ध होतेहैं उनमें ग्यारह अंगों में स्वमत का प्रतिपाद है। किन्तु बारहवें अंग में 363 मतों का निराकरण किया हैं किन्तु कालक्रम के कारण यह विवेचना आज अनुपलब्ध है। इसी तीर्थंकर परम्परा के उपरान्त जैन आचार्य कुंदकुंद देव नेइस न्याय परंपरा को आगे बढ़ाते हुए साहित्य का सृजिन किया। दार्शनिकों के बीच में यह विवाद रहा कि ज्ञान को स्व प्रकाशक माना जाये अथवा पर प्रकाशक माना जायेगा स्व पर प्रकाशक माना जाये। आचार्य कुंदकुंद देव नेज्ञान को स्व पर प्रकाशक मानते हुए जैन न्याय का प्रथम सूत्रपात किया, उनके ग्रन्थ प्रवचन सार में प्रत्यक्ष परोक्ष ज्ञान की व्याख्या अत्यंत गंभीर रूप से उपलब्ध होती है। इसी परम्परा में आचार्य उमास्वामी प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं जिनके ग्रन्थ तत्वार्थ सूत्र में **'प्रमाणनयैरधिगमः'** सूत्र के माध्यम से न्याय का बीज रोपित किया गया, इसी ग्रन्थ में **'मतिः स्मृतिः'** संज्ञा **'चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम्'** इस सूत्र के माध्यम से परोक्ष प्रमाणों के विशद विवेचन का आधार प्रस्तुत किया गया।

आचार्य कुंदकुंद और उमास्वामी के पश्चात् जैन न्याय परम्परा को व्यवस्थित और तार्किक रूप में प्रस्तुत करने वाले आचार्य समंतभद्र देव हुए हैं। जिनके साहित्य में न्याय और तर्क की स्थापना पूर्ण रूपेण प्रबंधित हुई हैं। इन आचार्य नेआप्तमीमांसा युक्तयनुशासन स्वयंभू स्तोत्र इन तीन ग्रंथों के माध्यम से जैन न्याय की स्थापना करके छह सूत्र दिये हैं -

1. अनेकांत और सप्तभंगीवाद की प्रक्रिया को प्रदर्शित करके दर्शन शास्त्र की प्रत्येक दिशा में उनका व्यवहारिक प्रयोग करने की पद्धति प्रचलित की है।

2. अनेकांत में भी अनेकांत की योजना करनेकी प्रक्रिया बतलाई है।

3. प्रमाण का दार्शनिक लक्षण और फल बताया है।

4. स्याद्वाद की परिभाषा स्थिर की है।

5. श्रुत प्रमाण को स्याद्वाद और विकलित अंशों को नय बतलाया है।

6. सुनय और दुर्नय की व्यवस्था दी है।

इसी क्रम में आचार्य समन्तभद्र के बाद आचार्य सिद्धसेन दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों परम्परा में मान्य हैं। इन्होंने एकमात्र सन्मति तर्क सूत्र ग्रन्थ की रचना की है तथा आपके नाम पर बाईस बत्तीसियों की कृतियां भी मानी जाती हैं। यद्यपि इस मत में विवाद है, इन्हीं का एक न्याय अवतार ग्रन्थ भी न्याय की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

आचार्य श्रीदत्त जल्पनिर्णय के रचियता हुए हैं जिन्हें तिरेसठ वादियों का विजेता भी कहा

जाता है, अतः वे वादशास्त्र के पूर्ण पीड़ित थे। जैन न्याय के निर्माण में उनकी भूमिका अहम् रही है। इसी श्रृंखला में आचार्य पात्र केसरी हुए हैं इनका पात्र केसरी स्तोत्र एवं त्रिलक्षण कदर्थन नामक ग्रंथ जैन न्याय को प्रगति प्रदान करने में सक्षम रहा है। मल्लवादी और सुमित आचार्य का नाम भी नयचक ग्रन्थ में उपलब्ध होता है।

जैन न्याय के पितामह या जनक आचार्य अकलंक देव हुए हैं, जिन अकलंक देव को वादकला में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है इन आचार्य ने न्याय शास्त्र का दूसरा नाम प्रमाण शास्त्र दिया है इन्होंने न्याय विनिश्चय सिद्धि विनिश्चय प्रमाण संग्रह लघीयस्त्रीय और अष्टशती तथा तत्वार्थ राजवर्तिक जैसे ग्रंथों की रचना करके जैन न्याय की ध्वजा को गगनचुम्बी बनाया था। इन्हीं आचार्य परम्परा में आचार्य हरिभद्र जिनका षड् दर्शन समुच्चय जैसा ग्रन्थ उपलब्ध होता है। तदुपरान्त कुमारनंदी न्याय को गतिप्रदान की। आचार्य अनंतवीर्य ने सिद्धि विनिश्चय की टीका लिखकर जैन न्याय को ऊंचाईयां दी। जैन न्याय के अमोघ तार्किक आचार्य विद्यानंद 9 वीं शताब्दी में हुए हैं। उन्होंने अष्ट सहस्री तत्वार्थ श्लोक वार्तिक विद्यानंद महोदय युक्तयनुशासन टीका, आप्तपरीक्षा, प्रमाण परीक्षा, पत्र परीक्षा और सत्यशासन परीक्षा जैसे ग्रन्थों को सृजित करके जैन न्याय को भारतीय दर्शनों में श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया। आचार्य अनंतकीर्ति ने जीव सिद्धि टीका, वृहत, सर्वज्ञ सिद्धि, लघु सर्वज्ञ सिद्धि जैसे ग्रन्थों की रचना की। आचार्य वसुनंदी ने आप्तमीमांसा वृत्ति लिखकर सिद्ध ऋषि ने न्याय अवतार वृत्ति माणिक्य नंदी ने परीक्षामुख वादीराजसूरि ने न्याय विनिश्चय विवरण और प्रमाण निर्णय जैसे वृहतकाय न्याय ग्रंथों की रचना की। आचार्य वादीभसिंह ने स्याद्वाद सिद्धि नव पदार्थ निश्चिय ग्रंथ का सृजन किया। अभयदेव सूरी ने सन्मति सूत्र टीका लिखी। आचार्य प्रभाचंदजी ने प्रेमयकमलमार्तण्ड, न्याय कुमुदचंद्र जैसे विशालकाय वाङमय का सृजन किया। अनंतवीर्य ने प्रमेय रत्नमाला, शांतिसूरि ने न्याय अवतार वार्तिक, वादीदेवसूरि ने प्रमाणनय तत्वालोकालंकार और स्यादवाद रत्नाकर ग्रंथों का सृजन किया। आचार्य हेमचंद ने प्रमाण मीमांसा भावसेन त्रिवेदी ने विश्वतत्त्व प्रकाश ग्रंथ को रचा। लघुसमंत भद्र ने अष्ट सहस्री टिप्पण, पं. आशाधर ने प्रमेय रत्नाकर, शांतिषेण ने प्रमेय रत्नसार, नरेन्द्र सेन ने प्रमाण प्रमेय कलिका, विमलदास ने सप्तभंगी तरंगिनी ग्रंथ की रचना करके जैन न्याय को अभियुत्थान प्रदान किया। आचार्य धर्मभूषण ने न्यायदीपिका ग्रंथ की रचना करके जैन न्याय को सरल बना दिया। आचार्य अजित सेन ने न्यायमणि दीपिका, शांतिवर्णी ने प्रमेय कंठिका, चारूकीर्ति पण्डिताचार्य ने प्रमेय रत्नालंकार तथा नेमीचंद नेप्रवचन परीक्षा, मणिकण्ठ ने न्याय रत्न, शुभ प्रकाश आचार्य नेन्याय मकरन्द विवेचन, अभयचंद्र सूरि ने लघीयस्त्रय तात्पर्यवृत्ति, रत्नप्रभासूरि ने स्याद्वाद रत्नाकरा-वतारिका जैसी रचनाऐं जैन न्याय कोदी। आचार्य मल्लिषेण ने स्याद्वाद मंजिरी तथा यशोविजयजी ने अनेकांत व्यवस्था एवं अष्टसहस्री विवरण जैसे ग्रंथों को सृजित करके जैन न्याय को ठोस आधार प्रदान किया।

अतः उक्त आचार्य परम्परा के लगभग बीस आचार्यों ने ईसवी की अठारहवीं शताब्दी तक सतत प्रयास करते हुए जैन न्याय को धारावाहिक रूप से हम तक पहुंचाया। हम ऐसे उपकारी आचार्यों के प्रति सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

सुरेश जैन

क्रमांक- 12 वरिष्ठ नागरिक

मृत्यु का इंतजार करना मूर्खता है

मृत्यु पूर्व की तैयारियाँ- जी हाँ, जीवन में दुर्घटनायें कभी हो सकती हैं। यदि ऐसी दुर्घटना में कोई अचानक नहीं रहें तो परिवार या मित्रों को जो कष्ट भोगना होगा उस पर विचार करने की आवश्यकता है। हम कुछ चिंतन करें और उपायों की खोज करें। यदि आप शादीशुदा हैं तो कभी भी इस बात को पत्नी से न छिपायें कि आप के पास क्या सम्पत्ति है तथा बीमा कितने का है या कार्यालय से आपको क्या सुविधायें प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त यदि कोई उधारी आपको देनी है तो उस के विषय में भी अवश्य बतायें। किसी सामान कि किस्ते देनी हैं वह भी बता दें। अपने महत्वपूर्ण दस्तावेज कहां रखे हैं, लॉकर में या बैंक लॉकर में तो उसकी जानकारी अवश्य दें। यदि किसी को रूपये उधार दिये हैं तो उसके लिखित दस्तावेज भी पत्नी को बतलायें। यदि किसी को सहयोग राशि का चंदा भेजते हों तो उसकी भी जानकारी अवश्य दें, इसके अतिरिक्त मकान, सम्पत्ति के पेपर्स को हमेशा सुरक्षित स्थान पर रखें क्योंकि मनुष्य के न रहने पर यही दस्तावेज परिवार की मदद कर पायेंगे।

यदि कोई अविवाहित है तो परिवार के सदस्य या अपने घनिष्ठ मित्र से अपने बीमें, उधारी या किसी भी तरह सम्पत्ति की बातों को शेयर करें। यह सब दस्तावेज में हो तो अच्छा रहेगा, केवल मित्र के पास नहीं उसकी एक प्रति परिवार के किसी सदस्य के भी पास होनी चाहिये ताकि सबूत या दस्तावेज नष्ट होने की स्थिति में पुनः प्राप्त किये जा सके।

वसीयत लिखवाना या लिखना एक अच्छी आदत हैं, लेकिन हमारे देश में यह प्रचलन कम है, जिसके चलते मृत्यु उपरांत झगड़े एवं कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने होते हैं। इससे बचने के लिये वकील के पास भी वसीयत पंजीकृत कराई जा सकती है, मनुष्य को हमेशा याद रखना चाहिये कि उसके जीवन में अगले पल क्या होगा किसी को मालूम नहीं है। अगला पल होगा भी या नहीं इसकी क्या तैयारियों की हुई हैं। इसके लिये हमेशा अपने हिसाब-किताब को प्रतिदिन न साफ रखना चाहिये ताकि कोई भी घटना घट जाने के बाद परिवार या मित्र कोई विवाद में न पड़ सके।

अपने मैडिकल बीमें की बात भी शेयर करें ताकि आप से संबंधित व्यक्ति तुरंत आप को भर्ती करवा कर वह उच्च तकनीक से तथा अधिक राशि से इलाज करवा सकें। यह बातें

आप को हमेशा सुरक्षित रखती हैं। इसलिये हमें चाहिये कि हम मित्रों को भी सलाह दें ताकि उनका परिवार भी परेशान न हो।

पत्नी ने भी यदि गुप्त रूप से किसी को उधार दिया है या बीमा करवाया है तो उसका लिखित दस्तावेज अवश्य रखे ताकि पति को परेशानियों न उठानी पड़े। इसे हमें हमेशा पॉजीटिव तरीके से सोचकर ही आत्मसात् करें।

ऐसी सलाह को कभी हंसी में न उडाए क्योंकि महाभारत में भी एक स्थान पर उल्लेख आता है कि मनुष्य किस चीज को भूला रहता है ? उत्तर मिलता है मृत्यु को जो जीवन से जुड़ती है और कभी भी आप उस अंधेरी सुरंग में प्रवेश कर सकते हैं। इसलिये मृत्यु पूर्व की पूरी तैयारी रखें ताकि परिवार, मित्र, रिश्तेदार, परेशान न हों।

कविता

हे महासंत विद्यासागर

हे महासन्त विद्यासागर, तेरा ही हमें सहारा हैं।
पापों से निवृत्ति पाने को, प्रभु मैंने तुम्हें पुकारा है।
हे महासन्त विद्यासागर, तेरा ही हमें सहारा हैं।

जीवन की नैया डोल रही, तूफाँ के गहन थपेडों में।
तुम नाविक बनकर आ जाओ, डगमग करते मेरे बेड़ो में।
तुम मानतुंग सम दिखलाते, भक्ति का हमें किनारा है।
पापों से निवृत्ति पाने को, प्रभु ने तुम्हें पुकारा हैं।
हे महासन्त विद्यासागर, तेरा ही हमें सहारा हैं।

मान विरत हो मेरा यह मन, और झूठ का त्याग करूँ।
क्षमा सत्य को पाऊँ गुरुवर, जीवन का संताप हरूँ।
तेरे गुण आलोकित करते, देते हमें सहारा है।
पापों से निवृत्ति पाने को, प्रभु मैंने तुम्हें पुकारा है।
हे महासन्त विद्यासागर, तेरा ही हमें सहारा हैं।

लोभ विरत हो मेरा यह मन, वासनाओं का त्याग करूँ।
शुचिता को धार करके मैं, जीवन का उद्धार करूँ।
वाणी तेरी राह दिखाती, बनकर उज्जवल धारा हैं।
पापों से निवृत्ति पाने को, प्रभु मैने तुम्हें पुकारा है
हे महासन्त विद्यासागर, तेरा ही हमें सहारा हैं।

मैं राग द्वेष से दूर रहूँ, और परिग्रह प्रमाण करूँ।
संयम को धारण करके मैं, वीर प्रभु यश गान करूँ।
तुम कुन्द-कुन्द सम दिखलाते,
रत्नत्रय की निर्मल धारा है।
पापों से निवृत्ति पाने को, प्रभु मैंने तुम्हें पुकारा है।
हे महासन्त विद्यासागर, तेरा ही हमें सहारा हैं।

तन की पीड़ा हर लेती तेरी वाणी।
आतम का आभास कराती, जग जननी कल्याणी।
महावीर सा नेह लुटाती, तेरी अमृत धारा है।
पापों से निवृत्ति पाने को, प्रभु मैंने तुम्हें पुकारा है।
हे महासन्त विद्यासागर, तेरा ही हमें सहारा हैं।

कहानी

सोने की बाली

लेखक: ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

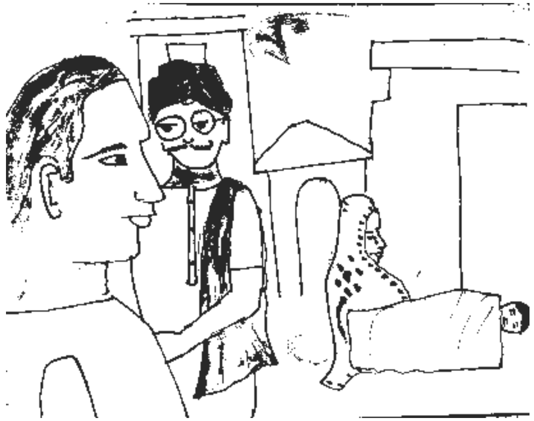

भारतीय परिवेश में ग्रामीण अचलों का आकर्षण कुछ अलग ही होता हैं। हर गांव में चौपालो पर किसानों की और गांव के पटेलों की गप्प गोष्ठी प्रेमवार्ता निरंतर चलती रहती है भारत माता की माटी के लाल जिन्होंने आजादी का बिगुल बजाया तथा आजादी की बलि वेदी पर जिन्होंने सबसे ज्यादा बलिदान दिया ऐसे स्वतंत्रता के परवाने गांव में अधिक रहा करते थे। अंग्रेजों का अत्याचार गांव में अधिक होता था और गांव से आजादी की हुंकार भी उठी महात्मा गांधी ने शहरों की अपेक्षा गांवों को प्राथमिकता दी थी और गांव गांव के रहवासियों को सगज किया था इसी तरह मध्यप्रदेश के चंदेरी के पास ललोई एक सुन्दर सा गांव है जिस गांव में खपरेल के मकान ऊँचे हरे झाड़ तथा हरे-भरे खेत ललोई के आकर्षण को सदैव बढ़ाकर के रखते हैं आज भी आधुनिकता ललोई को छू नहीं पाई है आपस में प्रेम करना जिस ललोई की विशेषता थी उस सौहर्दता के आंचल में हर व्यक्ति अपने गांव पर गर्व करता था करूणा के छतरी की छांव में पशु पक्षी निर्भय होकर विचरण करते थे ललोई के हर व्यक्ति को रिस्ता निभाना खूब अच्छे से आता था झगड़े भी होते थे पर गांव में ही निपट जाते थे।

आज की घटना ने सभी ललोई वासियों को सख्ते में ला दिया। घटना निर्दयता से भरी शक की जमीन से उत्पन्न हुआ हिंसा का विषैला वृक्ष ललोई के वातावरण को विषाक्त बना गया। सोच यही है सबका कि कही ये विष का बीज बैर विरोध में बदलकर विषैले कटीले झाड़ में परिवर्तित होकर, अधिक रंजसो के कड़वे फल न दे इसके लिये सभी चिंतत थे। गांव के बरगद के वृक्ष के नीचे बहुत सारे ग्रामीण खड़े थे। गांव का चप्पा-चप्पा पुलिस की नजरों में कैद था लोग आपस में चर्चा कर रहे थे और पुलिस फरार रानी की तलाश कर रही थी यादव मुहल्ले में पुलिस का जमघट था अभिनन्दन का परिवार विलख रहा था

और अभिनन्दन का शव घर के आंगन में रखा था मृतक अभिनन्दन की माँ पछाड़ खाकर अचेत थी उसे लोग संभाल रहे थे। हर तरफ शोक का साया था हर। आंखों में आंसू थे गांव का प्रत्येक व्यक्ति अभिनंदन का बखान कर रहा था।

सब कह रहे थे कि अभिनंदन अच्छा होशियार विनयशील लड़का था अभिनंदन के शिक्षक बीच में खड़े थे और उनके चारों तरफ दर्जनों लोग खड़े थे चन्द्रकान्त दुबे कह रहे थे जब से इस बालक ने मेरे स्कूल में दाखला लिया तब से इसने अपनी प्रतिभा का ऐसा परिचय दिया कि सब इसके कायल हो गये। हम सब लोगों ने बालक को खूब निकट से देखा है अभिनंदन ही हर विशेषता अभिनन्दनीय थी। समय पर स्कूल आना अनुशासन में रहना कमजोर बच्चों की सहायता करना और खेलकूद में जहां यह बालक आगे रहता था वही पढ़ने में भी कीर्तिमान स्थापित करता था अच्छे अंक प्राप्त करना तो सबके लिये संभव होता है पर बहुमुखी प्रतिभा बनाना सिर्फ अभिनन्दन के लिये संभव था। दुबला-पतला हँस मुख बालक सबके मन को भा जाता था। कई बार मैने यह देखा कि कोई कितने भी गुस्से में हो परन्तु अभिनंदन को देखकर गुस्सा अपने आप शांति हो जाता था व्यवहार कुशल अभिनंदन बहुत ईमानदार था मुझे तो यह विश्वास ही नहीं होता है कि वह कभी किसी की चोरी कर सकता था एक बार मैने अपनी अंगूठी साफ की और टेबिल पर रखकर बैठा इतने में छुट्टी की घंटी बज गई और मैं किसी काम से जल्द ही घर आ गया लेकिन अभिनंदन ने वह अंगूठी देखी और वह लेकर मेरे घर आया और कहने लगा सर आपका कुछ स्कूल में छूटा तो नहीं है और मैंने लापरवाही से कह दिया कि नहीं तो बेटा मेरा कुछ नहीं छूटा। तब उसे कहा सर याद करलो तब मेरी नजर मेरे हाथ कि उंगली पर गई तो मैने देखा उंगली से अंगूठी गायब है। तब मैंने कहा अरे मेरी अंगूठी गायब है। तब मैंने कहा अरे मेरी अंगूठी कहां गयी तब वह बड़ी जोर से हंसा और उसने अपने पेन्ट की जेब से अंगूठी निकाली और बोला सर ये है आपकी अंगूठी। मैने अपनी कीमती अंगूठी पाकर उसे ईनाम देने का सोचा तब तक वह मेरे घर से बाहर निकल चुका था मैंने कई बार उसे ईनाम देने का सोचा परन्तु उसने कभी कुछ नहीं लिया अपितु विनम्रता पूर्वक अस्वीकार किया।

अभिनंदन इतना ईमानदार था कि वह क्लास में कभी किसी की पेन्सिल भी मिल जाती थी तो भी वह मेरे पास लाता था खुद कभी उपयोग नहीं करता था ऐसे बालक का चले जाना और वह भी एक घटिया आरोप में बच्चे की जानलेना बिना किसी सबूत के किसी को चोर घोषित कर देना अन्याय तो है ही है साथ में दानवता भी है और कानून अपने हाथ में लेना भी है। ठीक है माना कि उसने सोने की बाली चुराई भी थी परन्तु किसी एक व्यक्ति को मौत की सजा देने का अधिकार किसको है ? क्या ककड़ी की चोरी में कटार मारना उचित है।

बुजुर्ग गुलाबसिंह ने भी पूरी बात सुनने के बाद कहा मास्टर साहब एक बात बता दूँ

दुनिया में सारे विवादों की जड़ औरतें ही तो होती है। गुलाबसिंह ने यह बात कहते हुये अपनी जेब में से चश्मा निकाला और लगा लिया तथा अपनी पगढ़ी संभालते हुये कहा- माट साहब मेरी पचत्तर साल की उम्र है मैने सारी दुनिया देखी जितने भी हत्या के मामले होते हैं उन सबकी तह में जाया जाये तो एक औरत जरूर मिलेगी औरतों को सबसे ज्यादा प्रिय अपने गहने और साड़ी होती है, साड़ी और गहनों के पीछे वे किसी से भी झगड़ा कर सकती हैं। किसी को भी मार सकती हैं किसी को भी मरबा सकती है और अपने सगे संबधियों से भी गहनों के लोभ में अथवा गहनों के विवाद में महिलायें संबंध तोड़ने में भी देर नहीं लगाती हैं। पर रानी ने जो कुछ किया है वह महिला व्यवहार से बहुत आगे कर दिया है हाँ यह कर सकती थी कि पुलिस में रिपोर्ट कर देती पुलिस अपने स्तर से पूछताछ करती अभिनंदन को मारती पीटती और सोने की बाली का पता लगा लेती परन्तु उसका गला दबाकर मारना बहुत ही दुस्साहस पूर्ण कार्य है रानी आखिर उसकी थी तो चाची ही उसके दिल में ममता तो होगी परन्तु सोने की बाली के लोभ में अपना इतना बड़ा ममता पर पर्दा डाल दिया कि रानी किसी के खून की प्यासी हो गई और वह लोभी चंडी बन गई।

शिक्षक चन्द्रकांत दुबे ने सभी ग्रामवासियों की तरफ अपना रूख करते हुये कहा कि ठाकुर साहब ने जो ममता जी बात कही है कि ममता कहां चली गई तो मैं इनके सामने एक बात कहना चाहता हूँ कि देखो माता केकयी रानी सबसे ज्यादा राम से अनुराग रखती थी उनकी ममता राम के प्रति सर्वोत्कृष्ट थी अपने पुत्र भरत की अपेक्षा वे राम पर ज्यादा ध्यान देती थी लेकिन जब उनके अंदर मंथरा ने भरत को राज्य दिलवाकर राजमाता बनने का लोभ जागृत कर दिया तो उस लोभ के प्रभाव में आकर माता केकयी ने राम को वनवास और भरत को राज्य मांग लिया। अपने लाड़ले राम को चौदह वर्ष वनवास की सजा दशरथ से आज्ञा दिलवादी यह सब उनके सत्ता लोभ का अंधेरा था जिस सत्ता लोभ के अंधेरे में केकई ऐसी भटकी कि उसने समृद्ध खुशहाल अयोध्या को शोक के सागर में डुबो दिया तथा राम के सम्पूर्ण परिवार को तितर बितर कर दिया। बिखरे परिवार को देखकर भरत ने अपनी माँ से पूछा कि माँ तूने यह सब अनर्थ क्यों किया तब केकई ने कहा यह तो कुछ भी हुआ है वह सब तेरे लिया किया गया है।

मैंने भरत तुझे राजसत्ता दिलाने के लोभ में मैंने यह सब रचना रची तब भरत ने अपनी माता केकई से कहा बस माँ सारे पापों की जड़ लोभ ही तो है जिसने आपकी मति कुमति में बदलदी और भैयराम के प्रति आपके अगाध प्रेम की धारा को बाधित कर दिया।

गुलाबसिंह ने कहा- मार्ट साहब अपने बहुत अच्छा रामायण का प्रसंग सुना दिया मेरी बात भी पक्की हो गई कि लोभ लालच और छल की खरपतवार के आगे प्रेम और ममता का नन्हों से अंकुर कभी भी सूख सकता है वह कभी आगे नहीं बढ़ सकता है क्योंकि लोभ और छल कपट प्रेम के अंकुर के रस को स्वयं चूस लेते हैं।

जब सभी ग्रामवासी गुलाबसिंह और चन्द्रकांत दुबे की वार्ता सुन रहे थे तभी लच्छू भोई दौड़ कर आया ओर बोला मार्ट साहब -मार्ट साहब मैं नदी में नहाने गया था तभी मैं एक पत्थर से फिसला और वह पत्थर उल्टा हो गया मैंने उस पत्थर को सीधा करने का प्रयास किया और उसे सही जमाने के लिये उसके लिये कुछ रेत उठाकर के लाया तभी उस रेत में मुझे एक सोने की बाली मिल गई और लच्छू भोई ने सब गांव वालों के सामने गुलाबसिंह के हाथ पर सोने की बाली रख दी जैसे ही सोने की बाली को गांव वालों ने देखा तो वे लच्छू भोई से बार-बार पूछने लगे कि सच बता तुझे ये सोने की बाली मिली कहां है तब लच्छू भोई ने कहा परमात्मा की कसम मैं अपने दोनों बच्चों की कसम खाकर कह रहा हूँ कि मुझे ये बाली नदी की रेत में मिली है। तभी चन्द्रकांत दुबे बोले - हो न हो यदि यह बाली रानी के बेटे की हो सकती है परन्तु यह अभी निश्चित नहीं कहा जा सकता है इस बाली को कोई पहचान करने वाला भी तो हो रानी तो फरारा हो गई। तब गुलाबसिंह ने कहा हम ऐसा करते है उस रानी के बेटे को ही बुला लेते हैं और पहचान करा लेते हैं तब चन्द्रकांत दुबे ने कहा दाऊ साहब हम गलत रास्ते पर जा रहे हैं जब पूरे गांव में पुलिस चप्पे-चप्पे पर बैठी है और यदि हम ये फैसला करने के लिये आगे आते हैं कि सोने की बाली किसकी की है तो यह एक हत्या का मामला है यह मामला गैर जमानती कहलाता है इस मामले में हम लोगों को बीच में आना अपने आपको उलझाना है इसलिये हम सब गांव के लोग एक काम करते हें कि हम सीधे सरपंच रामलाल यादव के पास चलते हैं और सरपंच जैसी सलाह देगा अपन वेसा कर लेंगे। तो सब लोगों ने कहा हाँ मार्ट साहब सही कह रहे हैं सब लोगों ने सरपंच के पास जाना ही उचित समझा।

सरपंच साहब थाना प्रभारी के साथ बैठे-बैठे कुछ विचार विमर्श कर रहे थे तभी सरपंच ने देखा कि सब गांव के लोग इकट्ठे होकर आ रहे हैं तब सरपंच सोचने लगा कि ऐसा तो नहीं कि गांव के लोग यहाँ आकर कोई नारे बाजी न करने लगे। तो सरपंच रामलाल यादव दौड़कर गांव वालों के पास पहुँच गया और गांव वालों से बोला आप लोग यहां क्यों आ रहे हैं तो गुलाबसिंह ने कहा भैया हम तुमसे ही मिलने आ रहे थे और सारी घटना सुना करके गुलाबसिंह ने सरपंच साहब के हाथ में बाली रख दी और कहा- कि ये सोने की बाली नदी की रेत में लच्छू भोई को मिली है। सरपंच लपक करके सोने की बाली रख दी और कहा हमारे एक ईमानदार गामवासी लच्छू भोई को यह बाली नदी की रेत में मिली है थाना प्रभारी कमल सिंह दांगी ने कहा कि बाली तो मिल गई पर बालक तो चला गया अब क्या हो सकता है सिर्फ रानी जेल में और ऐसी सैकड़ों बालियों की कीमत लग जायेगी तो भी इस मामले को सुलझाना संभव नहीं होगा। एक लम्हे का क्रोध जिन्दगी भर रूलाने को काफी होता है अब बस कुछ नहीं अब तो दोनों परिवार रोयेंगे अब क्या।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागरजी की प्रथम सम्मेदशिखर यात्रा

❊ डॉ. सुशीला सालगिया, इंदौर ❊

माणक चौक सदर बाजार प्रतापगढ़ राजस्थान में बनी उस शानदार हवेली को देखकर मन मस्तिष्क में एक साथ कई विचार कौंधने लगे। सबसे पहले याद आया कि इस हवेली की तल मंजिल में सेठ पूनमचंद घासीलाल के नाम से एक धमार्थ अस्पताल था जहाँ वर्षों तक रोगी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते थे, किन्तु अब कुछ वर्षो से वह बंद पड़ा है। फिर याद आया, यह वही हवेली है, जिसे सदर बाजार से गुजरते हुये साथ में चल रहे किसी के द्वारा अनायास यह पूछने पर कि क्या यह आपकी हवेली थी ? मुनिश्री सुबुद्धिसागर जी (गृहस्थ नाम जौहरी मोतीलाल जी है) ने कहा हाँ ! हमारी थी। कहते हुये आगे बढ़ गये। किन्तु उसी दिन यह बात उनके गुरु आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के कानों तक पहुँच गई। तुरंत उन्होंने मुनि श्री सुबुद्धिसागर जी महाराज को बुलाकर कहा कि आपके मन से हवेली के प्रतिमोह अभी तक छूटा नहीं है। अब प्रायश्चित स्वरूप आपको आजीवन नमक का त्याग करना है। मुनि श्री ने गुरु आज्ञा स्वीकार कर प्रायश्चित स्वरूप आजीवन का त्याग कर नियम पालन किया। इत्तफाक से इस घटना के समय मैं आचार्य श्री एवं संघ के दर्शनार्थ प्रतापगढ़ आई थी।

एक ऐतिहासिक पहल- तीसरी और ऐतिहासिक पहल जो इस हवेली के मालिकों द्वारा की गई वो थी चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की ससंघ सम्मेद शिखरजी की यात्रा करवाना। इसके पीछे एक बड़ा मकसद था, वह यह कि दिगम्बर मुनियों के चरण उत्तर भारत की भूमि पर भी पड़े वैसे दक्षिण भारत में कोई पाबन्दी नहीं होने और क्षेत्र सुरक्षित होने से वहाँ मुनि विहार करते थे।

दिगंबर संतों को उत्तर भारत में विहार करने का भाव- दान देने से धन की कमी होती नहीं। यह सोचकर इन्होंने शांतिसागर जी महाराज को ससंघ दक्षिण से लाकर उत्तर भारत में विहार करवाते हुये सम्मेद शिखर जी तक की यात्रा करवाने के भाव किये। यह विचार मन में आते ही आचार्य महाराज के पास कुंभोज बाहुबली पहुँच गये। अपनी भावना व्यक्ति करते हुये यात्रा हेतु निवेदन किया। 20 तीर्थं करों की निर्वाण भूमि के दर्शन की भावना महाराज के मन में थी और उत्तर भारत में धर्म प्रभावना भी होगी यह सोचकर आचार्य महाराज ने स्वीकृति प्रदान की दी। सन् 1927 का चातुर्मास समाप्त होते ही यात्रा प्रारंभ हो जायेगी यह तय हो गया। अंधा क्या चाहे दो आँख। जौहरी परिवार के मन की मुराद पूरी होने का अवसर मिलते ही उन्होंने संपूर्ण जैन समाज के लिये तुरंत अखबारों में विज्ञप्ति निकलवा दी की अष्टान्हिा पर्व समाप्त होते ही आचार्य श्री शांतिसागर जी सहित चतुर्विध संघ की निशुल्क भोजन आदि समस्त व्यवस्थाओं सहित कुंभोज से श्री सम्मेद शिखर जी तक पदयात्रा ले जाना चाहते हैं। यात्रा में जिनेन्द्र भगवान का समवशरण भी साथ होगा धर्मोपदेश हेतु विद्वान पंडित और चिकित्सा हेतु वैद्य भी साथ होगें। जो भी यात्रा का लाभ लेना चाहे संघ में शामिल हां ऐसी हमारी प्रार्थना हैं। ऐसी संपूर्ण जानकारी सहित विस्तृत विज्ञप्ति प्रकाशित करवाई।

ओम नमः सिद्धेभ्यः का जाप करते हुये मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा सन् 1927 को आचार्य महाराज श्री शांतिसागर जी तीन मुनिराज नेमीसागर जी, वीरसागर जी, अनंतकीर्तिजी, ऐलक

पायसागरजी, एक क्षुल्लक जी, तीन क्षुल्लिका जी, ब्रह्मचारिणी के साथ 200 श्रावक श्राविकाओं वाले चतुर्विध संघ की ऐतिहासिक पदयात्रा अत्यंत उत्साहपूर्वक शुरु हुई। यह संघ जहाँ भी पहुँचता हजारों जैन अजैन नर नारियों की भीड़ जमा हो जाती है। आचार्य महाराज के उपदेशों से प्रभावित होकर कई अजैन लोग माँस मदिरा का त्याग करते तो जेने श्रावक व्रतों को अंगीकार करते। प्रतिदिन सवेरे जल्दी यात्रा प्रारंभ हो जाती। कुछ श्रावक मोटर गाडियों से आगे पहुँच कर चैके एवं श्रावको के भोजन की व्यवस्थायें करवाते। संघपति का उत्साह तो देखते ही बनता था। संघपति के बड़े पुत्र श्री गेंदमल जी ट्रंक से निकालकर बिना गिने नोटों के बंडल व्यवस्थापकों को देते फिर हिसाब भी नहीं पूछते। बस यही भावना रहती की व्यवस्था में कोई कमी ना रह जाये।

सांगली और नागपुर में संघपति का सम्मानः यात्रा करते हुये संघ जब सांगरली महाराष्ट्र पहुँचा तब वहाँ के नरेश आचार्य महाराज के प्रवचन सुनकर बहुत प्रभावित हुये। श्रावकों ने संघपति को रजत मंजूषा में रखकर सम्मान पत्र भेंट किया और संघ का स्वागत किया। संघपति स्वयं को संघपति को नहीं मानते हुये आचार्य महाराज को संघपति मानते थे। यह उनकी विनयशीलता थी। फिर निजाम राज्य में प्रवेश की अनुमति लेकर संघ ने वहाँ होते हुये आगे विहार किया। राज्य के मुस्लिम अधिकारियों ने सुरक्षा हेतु 3 सिपाही साथ में भेजे, पर पुण्योदय ऐसा रहा कि पूरी यात्रा में कहीं कोइ्र वारदात या दुखद घटना नहीं हुई। आगे संघ लातूर होते हुये नागपुर पहुँचा जहाँ खूब धर्म प्रभावना हुई। तीन दिन तक कई बाजार बंद रहे। यहाँ संघपति को एक शुभ समाचार मिला कि मुंबई व्यापार में उन्हें एक लाख रूपये का मुनाफा हुआ है। जिसे श्री सम्मेद शिखर में पंचकल्याणक कराने में खर्च करने की तुरंत ही योजना बना ली। नागपुर में आचार्य महाराज के असाधारण व्यक्तित्त्व के प्रभाव से बहुत ही धर्म प्रभावना हुई। संघपति को भी चांदी के पत्र में संस्कृत में अंकित मान पत्र भेंटकर उनका सम्मान किया गया।

आचार्य श्री शांतिसागर जी का संघ पहुंचा सम्मेदशिखर जी- सदियों से उत्तर भारत की भूमि दिगंबर मुनि के चरण जल के लिये वैसा ही प्यासी थी जैसे चातक मेघों से बरसते जल का प्यासा हो। कई प्राचीन कवियों ने अपनी व्यथा को पदों में व्यक्त किया था। फिर नागपुर से भंडारा होते हुये संघ साकोली पहुँचा। **साकोली में कई जैन कलार भाई जो जैन धर्म भूल चुके थे पुनः धर्म में प्रवृत्त हुये और व्रत नियम लिये।** कई जगह कुप्रथाओं को भी हटाने का जैनियों ने निश्चय किया। आगे राजनांदगांव दुर्ग रायपुर होते हुये संघ रांची और वहाँ से हजारबाग पहुंचा।

शिखर जी वंदना एवं भव्य पंचकल्याणक फाल्गुन सुदी तीज को संघ अपने गंतव्य श्री सम्मेदशिखर जी पहुँच गया। सभी इतने आनंदित थे कि वर्णन के लिये शब्द भी कम पड़ गये।

सम्मेदशिखर जी में उस समय अपार जनसमूह पहुँच गया था। दिगंबर मुनियों के दर्शन, पंचकल्याणक और सम्मेदशिखर जी वंदना एक साथ तीन-तीनप लोभ को कौन छोड़ना चाहेगा। वहाँ कि टिकट बाबू के अनुसार एक लाख बीस हजार टिकट उनके हाथ में आई। बस गाड़ी या अन्य साधनों से लोगों की संख्या अलग। करीब डेढ़ लाख लोग पहुँच गये थे। कई स्पेशल ट्रेनें चली। हर ट्रेन शिखरजी स्टेशन रूक रही थी। पंचकल्याणक और वंदना सभी का बहुत ही आनंद और लाभ लोगों ने लिया। वहाँ उस समय जैसे धर्म नगरी ही बस गई थी। सारी व्यवस्थाओं और भोजन आदि का जिम्म संघपति ने उठाया वैसे और भी दानदाता लाभ ले रहे थे। इस यात्रा संघ का

पूर्ण विवरण संस्कृत में शिलापट्ट पर लिखवाया गया तो वर्तमान में भी शिखर जी विद्यमान होगा।

शिखर जी से प्रस्थान और पंचतीर्थ यात्रा- अष्टमी का पर्व सम्मेदाचल में मना कर संघ का चैत्रवदी एकम को आसपास के तीर्थ वंदना हेतु प्रस्थान हो गया। मंदारगिरि 3 दिन रूक कर चंपापुरी दर्शन किये। फिर राजगृही में पंच पहाड़ी की यात्रा करते हुये विपुलाचल पर्वत की वंदना की जहाँ भगवान महावीर की दिव्य ध्वनि खिरी थी। अब संघ वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर की निर्वाण भूमि पावापुरी पहुँचा। वहाँ से पारसनाथ और सुपार्श्वनाथ की जन्मभूमि बनारस आया। आगे भगवान आदिनाथ की दीक्षाभूमि प्रयाग की ओर प्रयाण किया। मार्ग में रीवा और मेहर राज्य होते हुये कटनी पहुँच गये। कटनी में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के साथ आश्चर्यजनक घटनायें हुई जो चारित्र चक्रवर्ती ग्रंथ में निबद्ध हैं।

कविता

संयम स्वर्ण महोत्सव

संयम स्वर्ण महोत्सव अनुपम, प्रमुदित भाव मनाया है
जन जन के प्रमुदित अन्तर में, आनंद उत्सव छाया है
नगर-नगर और ग्राम में, तोरणद्वार सजे हैं
श्री जिनवर के पादमूल में, कलशा खूब सजे हैं
पंच दशाक गुरुवर के तप का, फल हम सबने पाया है
संयम स्वर्ण महोत्सव अनुपम, प्रमुदित भाव मनाया है
भक्त है लाखों शिष्य हजारों, जिनके दर्शन मात्र को आतुर
पर वह गमन है जिन आतम में, नहीं किसी से मिलने आतुर
रिद्धि-सिद्ध गुरुवर चरणों में, विनय भाव से डोल रहीं
धर्म पताका दिग दिगन्त में, गुरुवर की महिमा बोल रहीं
परम तपस्वी गुरुवर पाकर, मेरा मन हर्षाया है
संयम स्वर्ण महोत्सव अनुपम, प्रमुदित भाव मनाया है
जीवदया को लक्ष्य बनाकर, अहिंसा का झण्डा लहराया
सृजन नव तीर्थों का कर कर, जैनतत्व पताका को फहराया
सन्त शिरोमणि, महासंत तुम, नहीं आपको कोई सानी
वही ध्वनि होता श्री मुख से, जिसको कहती है जिनवाणी
मूकमाटी के रचयिता का, आशीष सदा ही पाया है
संयम स्वर्ण महोत्सव अनुपम, प्रमुदित भाव मनाया है
प्रतिभा स्थली और भाग्योदय है, जैन समाज के प्रतिभा स्थल
युगों युगों तक जीवन्त रहेंगे, सामाजिक संरचना के स्थल
सिद्धोदय और ज्ञानोदय भी, धर्म क्षेत्र की शान बनेंगे
तीर्थंकर वाणी श्रुत संरक्षक, जैनत्व का सम्मान बनेंगें
हम नहीं इडिया, भारत बोलो,राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाया है
संयम स्वर्ण महोत्सव अनुपम, प्रमुदित भाव मनाया है

हमारे गौरव

अमर शहीद चौथमल भंडारी

1942 के भारत छोड़ो आंदोलनप में जेल में ही अपना जीवन भारत माता के चरणों में समर्पित करने वाले अमर शहीद चौथमल भंडारी का जन्म 3 जुलाई 1926 को ग्राम कायथा जिला उज्जैन (म.प्र.) में हुआ। इनके पिता का नाम श्री केशरीमल भंडारी था, जो आसपास की जनता में अत्यन्त लोकप्रिय थे। माता धार्मिक स्वभाव वाली समाज सेविका महिला थी। किशोरावस्था में ही भंडारी जी जुलूसों और सभाओं में जाने लगे थे। सिर पर सफेद टोपी, धोती और कुर्ता यही वेषभूशा थी चौथमल भंडारी की।

भंडारी जी ने महिदपुर क्रांति में भाग लिया था। श्री विनायक राव व्यास इनके क्रांतिकारी साथी थे 1942 के आंदोलन में भंडारी जी को 20 अगस्त 1942 को बन्दी बना लिया गया। 22 जुलाई 1942 को इंदौर जेल में ही उनकी किसी कारणवश मृत्यु हो गई। शवयात्रा इंदौर में निकाली गई थी जिसमें अनेक काँग्रेसी नेता सम्मिलित हुये थे।

इंदौर मध्यप्रदेश से प्रकाशित होने वाले जैन प्रतीक (मासिक) ने अपने जुलाई 1996 के अंक में जैन समाज का गौरव, अमर शहीद चौथमल भंडारी शीर्षक से एक सचित्र लेख प्रकाशित किया है जिसके अनुसार इंदौर का सराफा बाजार प्रति गुरुवार को अमर शहीद के सम्मान में बन्द रहता था इनके पिता को अल्प समय के लिये पें शन भी मिली थी। लेख में इंदौर में शहीद चौथमल उद्यान (जो आज नहीं) तथा कायथा इनकी जन्मस्थली पर शासकीय आयुर्वेदिक औषधालय बनाया था, किन्तु आज इस आयुर्वेदिक औषधालय पर इनके नाम का स्मृति पटल नहीं है।

इंदौर उद्यान के बाद एक मार्ग का नाम शहीद चौथमल भंडारी रखा था। (पृश्ठ 4) मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक सूची के अनुसार भंडारी जी ने दिसम्बर 3 जून 1942 से 24 सितम्बर 1942 तक कारावास भोगा था। नई दुनिया इंदौर में प्रकाशित एक संक्षिप्त परिचय में भी चौथमल भंडारी को शहीद लिखा गया है।

गागर में सागर का आभास कराती- बड़े भैया की पाती

✻ डॉ. प्रेम भारती, भोपाल ✻

साहित्यकार और शिक्षाविद डॉ. प्रेम भारती से जुड़े ऐसे रचनाकार है, जिनकी संख्या बहुत नहीं होती। उनका लेखन, साहित्य, पत्रकारिता, वेदांत, ज्योतिष, योग, बालसाहित्य जैसे विविध विषयों की रोचक प्रस्तुति पर आधारित है। आपकी रचनायें विद्यालयीन पाठ्यक्रम से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की पाठ्यक्रमों में सम्मिलित है। साथ ही, इन्हीं स्तर के पाठ्यक्रम निर्माण तथा पाठ्यपुस्तकों के सृजन, संपादन में आपकी महती भूमिका रही है। आपकी रचनाओं को लेकर चौदह शोध विभिन्न विश्वविद्यालयों में हो चुके हैं। माध्यमिक शिक्षा तथा विश्वविद्यालय की अनेक समितियों में आपकी प्रशासनिक भूमिका रही है। राष्ट्रीय एवं प्रांतीय अनेक पुरस्कारों से विभूषित डॉ. भारतीय की वेशभूषा और ऋषिकल्प व्यक्तित्व के साथ सहज ही उनमें भारतीयता के दर्शन हो जाते हैं। संपादक

एक समय था जब अच्छी पुस्तकें पढ़कर जीवन को सही प्रकार से जीने की दिशा मिलती थी। धीरे-धीरे देख रहा हूँ कि महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिये लिखी गई पुस्तकों को लोग पढ़ना अधिक पसंद कर रहे हैं। ऐसे में नैतिक शिक्षा देने वाली पुस्तकों की कमी बहुत अखरती है। मुझे प्रसन्नता है कि श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) ने **बड़े भैया की पाती** लिखकर इस कमी को दूर किया है।

प्रकाशक की ओर से लिखे गये इन वाक्यों को पढ़कर और भी अधिक प्रसन्नता हुई कि इनमें से कुछ पंक्तियाँ विभिन्न धार्मिक और सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में पूर्व प्रकाशित हो चुकी हैं। अधिकांश पातियाँ पुस्तकाकार के रूप में छापकर हजारों की संख्या में वितरित हो चुकी हैं। अर्थात श्री जैन यह काम नियमित रूप से कर रहे है। इस पुस्तक के प्रकाशित करने के दो उद्देश्य है- एक ओर इसमें प्रबंधन के गुरु मंत्र हैं तो दूसरी ओर युवाओं के व्यक्तित्व विकास हेतु महत्वपूर्ण मार्गदर्शन भी है।

लेखन ने आमुख में स्पष्ट किया है कि हमने पाती के प्रत्येक शब्द को अहसास की सांसों में जिया है। अतः हमें विश्वास है कि यह पाती जितनी जीवन में जुड़ेगी, जीवन को उतनी ही सार्थकता सिद्ध होगी। पाती की भाशा सहजतम, और पूर्णतः बोधगम्य है तथा नवनीत की भांति सुस्वादु एवं सुपाच्य भी।

पाती में शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास के लिये आवश्यक टिप्स भी दिये गये है। साथ शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिये मार्गदर्शक बिन्दु भी दिये गये हैं। जिससे पाठक को प्राचीन और आधुनिक जीवन मूल्यों की व्यवहारिक समझ पैदा हो सके। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व विकास के अनेक पक्षों पर केन्द्रित ये पातियाँ जीने का सही तरीका बताती हैं। अच्छा जीवन जीने का पाठ पढ़ाती हैं। श्रेष्ठ व्यक्ति- श्रेष्ठ राष्ट्र का संदेश देती हैं। नये-नये कौशल, विकास के मार्ग पर ले जाने की युक्ति बताती हैं। एकाकीपन की भावना को कम करती हैं।

पुस्तक में कुल 80 पातियाँ शामिल हैं, जिसमें परिवार की दृष्टि से युवा, वृद्ध, शिक्षा, योग, आर्थिक स्वावलंबन तथा कार्य-संस्कृति के विकास पर अधिक चर्चा की गई है। राष्ट्रीयता को लेकर भी तथा आधुनिक संदर्भ में कोरोना को लेकर भी चर्चा की गई है।

राष्ट्रीयता की दृष्टि से **प्रथम आवश्यकता है-** राष्ट्र को मातृभूमि के रूप में देखने की। **दूसरी आवश्यकता है-** धर्म निरपेक्षता की भावना को धर्म विशेष के रूप में देखने की। **तृतीय आवश्यकता है- स**मान कानून तथा राष्ट्रभाषा को महत्व देने की। **चौथी आवश्यकता है-** राष्ट्रीय चरित्र के क्षरण को रोकने की। आपसी संबंधों को नये सिरे से विकसित करने की। **पांचवी आवश्यकता है-** युवा पीढ़ी में संस्कार को लेकर विशेष रूप से तर्कयुक्त शैली में समझ पैदा करने की। मुझे प्रसन्नता है कि इस पुस्तक में इन सभी पहलुओं पर चर्चा की गई है।

मैं श्री जैन साहब को बधाई देता हूँ कि भारत में विदेशी प्रभाव के बढ़ते विचारों पर अंकुश लगाने हेतु जो सोच उन्होंने इस पुस्तक के द्वारा पाठको के समक्ष रखी है, वह श्लाघनीय है। यदि नैतिकता में गिरावट को रोका नहीं गया, तो आने वाले कल में पछताने के सिवा कुछ भी नहीं बचेगा/मानवता शर्मसार होगी।

पुस्तक पढ़कर यह विचार स्वतः जागते हैं कि पश्चिम के धनी और संपन्न लोग जिसे उन्नति कहते हैं, भौतिक सुख-सुविधाओं से ऊबकर सुख-शांति की खोज में भारत में आकर वही लोग शांति का अनुभव क्यों कर रहे हैं ? योग और आयुर्वेद को क्यों अपना रहे हैं ? उनकी जिज्ञासा है कि विभिन्न धर्म, संप्रदाय, मान्यता और विश्वास में जीकर भारत के लोग प्रेम के साथ कैसे कह रहे हैं। उत्तर भी इस पुस्तक को पढ़कर मिल जाते हैं कि पश्चिम की भोगवादी प्रवृत्ति के स्थान पर भारतीय संस्कृति ने आत्मीय संबंधों को अधिक महत्व दिया है। जैसे पश्चिम में यौन संबंधों की उन्मुक्ता देखने को मिलती है, जिसमें विवाह करना आवश्यक नहीं है कि भारत ने इसे चरित्र हीनता माना है। पश्चिम में परिवार तथा वृद्धों के रिश्तों को गौण माना जाता है, जबकि भारत में इसे सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। कहने का आशय यह कि भरत का हर नागरिक नैतिक भावों को लेकर जीता है। नैतिकता यहाँ के समाज की पहली प्राथमिकता है। गृहस्थ जीवन जीते हुये भी व्यक्ति संत-भाव को महत्व देता है। विषय परिस्थितियों में भी विवेक को जागृत रखता है।

इस पुसतक के कुछ अंश मैं यहाँ पाठकों के समक्ष इस दृष्टि से रख रहा हूँ जिस से उन्हें लगेगा कि भाव-सारिणी की दृष्टि से यह पुस्तक कितनी उपयोगी है।

1. सफलता का पथ असफलता के ऊबड़ -खाबड़ रास्ते पर ही निर्मित होता है।
2. ईश्वर में आस्था रखने का कोई विकल्प नहीं।
3. धार्मिक अंध-विश्वास से बचें।
4. अपनी वाणी को संयमित करें।
5. अपने सहयोगी को स्नेह, पुत्र को प्यार तथा पिता को सम्मान दें।
6. अपने परिवेश को अच्छा बनायें।
7. अपना आंतरिक संदर्भ विकसित करें।

8. वृद्धावस्था में स्वस्थ और प्रसन्न रहें।
9. भारत में बनी वस्तुओं से प्रेम करें।

अंत में यही कहूँगा कि इन पंक्तियों के माध्यम से सुरेश जैन ने सजग रहते हुये जीवन के चिंतन के प्रवाह को सुरक्षित करने की एक कला पाठकों के हाथों में सौंपी है। इसे पढ़कर विषम परिस्थितियों में कैसे मनोबल बनायें रखना, चित्त वृत्तियों का परिष्कार कैसे करना तथा चारित्रिक दुर्बलता कैसे दूर करना आदि का विश्लेषण करने की कला पाठक को हासिल होती है। पन्ना पलटते जाइये, पढ़ते जाइये। लगता है किसी धारा में मौनालाप करते हुये बहते जा रहे हैं। पुस्तक की एक विशेषता यह है कि परंपरागत दृष्टांत को पकड़ कर इसकी सामग्री नहीं दी गई है। दैनिक जीवन पर आधारित है, ताकि पाठकों को विषय की गहराई तक जाने में सुगमता हो। एक पंक्ति में कहे तो।

एक ऐसा मोड़ आता है, जीवन में जब
मानव भूल जाता है कि दिन है या रात।
तब तब नैतिकता की बात आप नहीं समझेंगे,
जब तक खाली न हो जायें दानों हाथ।

आज के ऐसे दौर में ऐसी पुस्तक का प्रकाशन स्वागत योग्य है। इस पुसतक को हर पाठक को पढ़ना चाहिये। सम-सामयिक संदर्भों से जुड़ी यह पाती समय का एक जीवंत दस्तावेज है। इसके लिये लेखक को बहुत-बहुत बधाई। आगे भी वे लिखते रहेंगे, ऐसी आशा है।

कविता

जीवन का सार

✻ डॉ. राजेन्द्र मलैया, नमन ✻

काय दद्दी क्या सोच रये, हो का आज बीमार ।
हा रे भैया मोरी आखरी, नाती नतरों को कर लूं प्यार ॥
दद्दी तुम उल्टो सोच रये, छोड़ो जे माया संसार ।
अपनी तो सगी आत्मा अब तो करने उससे अब तो लाड़ ॥
तुम न छोड़ो, अबढारी छूट जै है, जा जमीन, जोरू घरबार ।
आखरी समय में भाव बना लो, मिल जै नये जन्म नव दरबार ॥
एक समय में अच्छों कर लो, मोह माया का एक तरफ धर लो।
करें दोष निवारण कर लो, छूटने सबको एक दिन जो चौरसी संसार ॥
काय रद्दी क्या सोच रये, हो का आज बीमार ।
जो शरीर बस इतई रै जाने, आतम राम खो करम ले जाने,
हिसाब को पोथा सब खुल जाने ॥
होय समाधि फिर इते न आने, जोई है दद्दी मनुष जमन को सार।
काय दद्दी काया सोच रये, हो का आज बीमार ॥

जैन समाज में तालिबानी कौन ?

❊ कर्मयोगी (डॉ.) सुरेन्द्रकुमार जैन, बुरहानपुर ❊

विगत दिनो सोशल मीडिया पर अशोकनगर जैन मंदिर का एक वीडियो वायरल हुआ। उसमें दिखाया गया कि धोती, दुपट्टा पहने हुये (पूजक) तथा कुछ सामान्य वस्त्रधारी एक-दूसरे को मारते-पीठते तथा अभ्रद गाली देते हुये दिखाई दिये। बाद में इसका जो कारण बताया गया वह यह था कि शांतिधारा के पश्चात् आचार्यों की जय बोलने पर विवाद हुआ। इस घटना के दो-तीन दिन बाद दोनों पक्षों में सुलह का भी वीड़ियों आया और यह भी बताया गया कि यह तय हुआ कि किस क्रम में जयकारा लगाया जायेगा। **इस घटनाचक्र ने पूरे देश को सोचने के लिये विवश किया और व्हाट्सएप वीरों तथा कुछ संस्थानों ने, पत्रकारों ने आग में घी डालने की लिये अपनी आदत के अनुसार बयानबाजी की। किसी ने तालिबानी गुरु के तालिबानी शिष्य, तो किसी ने वजू के बाद लहू जैसे शब्दों का प्रयोग किया और कहीं पर तीर, कहीं पर निशाना की तर्ज पर एक विशेष संघ को लांछित करने का पुरजोर प्रयास किया।** महासभा तुरंत सक्रिय हो गयी और अपील जारी हो गयी। पक्ष-विपक्ष में लेख जाने लगे और जग हँसाई की परवाह किये बिना हम अपनी-अपनी जांघें उघाड़कर दिखने लगे। यहाँ मैं इन बिन्दुओं पर समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

जो घटना अशोकनगर के जैन मंदिर परिसर में घटित हुई उसे अशोकनगर के ही व्यक्ति ने वीडिया बनाकर सम्पूर्ण देश को दिखाने का कार्य किस उद्देश्य से किया ? क्या यह राष्ट्रीय महत्त्व की घटना थी ?

यद्यपि किसी की निंदा या अप्रशंसा के पक्ष में नहीं रहता फिर भी मेरा मानना है कि जिन्होंने भी जैन मंदिर परिसर में पूजन के वस्त्रों में मारपीट की, गाली-गलौज की उनमें चाहे वे किसी भी आचार्य के समर्थक या मानने वाले हों उन्हें उन्हीं-उन्हीं आचार्यों के समक्ष जाकर अपने इस कृत्य के लिये क्षमा याचना करना चाहिये और अपने लिये प्रायश्चित की मांग करना चाहिये और स्वयं भी इस बात के लिये समाज को आश्वस्त करना चाहिये कि वे यह भूल फिर कभी नहीं करेंगे।

जैन समाज ने कभी अपनी शब्दावली में तालिबानी, वजू लहू आतंकवादही जैसे शब्दों का कभी प्रयोग नहीं किया। आचनाक यह अलगाववादी शब्दावली कहाँ से और क्यों आ गयी ? क्या निन्दा के लिये हमारे पास शब्द कम पड़ गये थे ? एक ओर हम जैनों की भाषा प्राकृत को राष्ट्रीय महत्व दिलाने के लिये प्रयासरत हैं वही दूसरी ओर यह विधर्मी शब्दावली क्यों ? **क्या हमारे यहाँ कोई भी आचार्य तालिबानी हैं या हो सकता है ? जब हमारे यहाँ स्नान का महत्त्व है फिर यह वजू कहाँ से आ गया जिसमें प्रार्थना से पहले उल्टे हाथ धाये जाते हैं ?** मुझे तो लगता है कि जिन्होंने वह शब्दावली जैन संतों या समाजजन के लिये लिखी या कही उन्हें भी प्रायश्चित की आवश्यकता है। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो कहा जायेगा कि-

दोष देना उनकी आदत, गलती करना उनकी फितरत।
कितने शातिर कितने ढोंगी, नहीं सुधरना उनकी फितरत।।

हम क्या है, क्या कर पायेंगे, उनकी जिद उनका चिन्तन।
डूब मरेगे चुल्लूभर में, पानी-पानी का क्रन्दन।

महासभा दिल्ली प्रदेश की ओर से एक अपील जारी हुई जिसमें महासभा अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी और धर्मचन्द्र जैन के नाम थे। उन्होंने एक महान सन्त की ओर संकेत करते हुये इस घटना के विषय में अपने विचार रखे। **महासभा सबसे पुरानी संस्था है क्या उसका लक्ष्य एक महान् सन्त या उनके शिष्यों को टारगेट बनाकर निन्दा अभियान चलाना ही उद्देश्य रह गया है ? मैं लगभग 40-45 वर्षों से जैन गजट पढ़ रहा हूँ। जैन जैन गजट और उसकी प्रकाशक-महासभा से पूछना चाहता हूँ कि उसने क्या कभी अपने गजट में इन महान् सन्त को उपयुक्त स्थान दिया।** मुझे तो यह पता है कि पहले प्रथम पृष्ठ पर इन सन्त का विज्ञापन के रूप में चित्र प्रकाशित होता था तो इसे जान बूझकर बंद करवा दिया गया वह भी महासभा के शीर्ष नेतृत्व के कारण। एक महानुभाव जो जैन गजट के प्रकाशन में अहम भूमिका निभा रहे थे, उन्होंने इन आचार्य श्री के विषय में दो लेख जैन गजट में छपवा दिये तो उनहें तुरंत जैन गजट से, महासभा के पद से तत्काल अलग कर दिया गया। **ऐसे अनेक प्रसंग है जब महासभा ने आलोचना का एक भी अवसर नहीं छोड़ा और अभद्र भाषा तक में टिप्पणियां की। यहाँ तक कि प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन एवं श्री कपूरचन्द पाटनी के बाद जो सम्पादक आये वे हर दूसरे, तीसरे सम्पादकीय में अपनी लेखनी का विषय इस संघ के विरूद्ध वमन करते रहते हैं।** जैन गजट यह बतायें कि उसने कब मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज के द्वारा 30 से अधिक तीर्थक्षेत्रों के विकास के विषय में सकारात्मक जानकारी दी। यहाँ तक कि जिस श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर को आज पूरा भारत मान देता है, उसके विषय में कब सकारात्मक लेखन किया ? यहाँ तक कि महासभा अध्यक्ष ने शास्त्रि परिषद के शास्त्रीय चिन्तन में कहा कि - हमें सांगानेरी ब्रांड नहीं बनाना चाहिये। इसका तुरंत खण्डन कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. जयकुमार जैन ने किया। शेष शास्त्रि परिषद् मौन रही। यह विचारणीय है।

मेरा महासभा से स्पष्ट निवेदन है कि वह अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करें और सभी परम्पराओं के सभी आचार्यों और संतों पर सकारात्मक दृष्टि रखे। शिथिलाचार पर उसे भी अपनी नीति स्पष्ट करना चाहिये।

आज जैन समाज के लिये जैनम् जयतु शासनम् अथवा जैन शासन को मजबूत करने की आवश्यकता है। जो साधु संत नयी-नयी टोपी लगवाकर नये-नये पंथ एवं नये-नये शासन जबरन मनवाने का प्रयास कर रहे हैं उन्हें अपने यह पंथ और शासन वापस लेना चाहिये। जैन शासन में सभी शासनों का समाहार हो जाता है।

हमारा चरित्र जीवन में शासन करने वाला तत्त्व है। यह प्रतिभा से भी श्रेष्ठ माना गया है। एक बार एक संस्थान के विज्ञापन में लिखा था-**यदि आप हमारी सेवाओं से संतुष्ट हैं तो कृपया मुझमें कहें।** हम सबको इसी भाव के साथ सामाजिक क्षेत्र में कार्य करना चाहिये। **हमें उपगूहन अंग का भी पालन करना है और स्थितिकरण का भी।** यदि अशोकनगर के सज्जनों ने इस बात का ध्यान रखा होता तो जैन समाज में यह अप्रिय स्थिति नहीं बनती और जो बाद में हुआ कि दोनों पक्ष गले मिलकर मुस्कुराये यही सामाजिक एकता का आधार बनता। अच्छा सोचने वालों के लिये कोई भी समय गलत नहीं होता।

पित्ताशय पित्त पथरी शूल के नियंत्रण उपाय

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर-9977051810

पित्ताशय एक नाशपाती के आकार की पेशियों तथा झिल्लियों से बनी थैली होती है तो यकृत की भीतरी सतह पर स्थित एक गढ्ढे में स्थित होती है, इसकी लम्बाई तीन से चार इंच तक और 60 मिलीग्राम इसका भाग होता है। इसका एक धड़ तथा गर्दन होती है, यह तीन आवरणों से बनी होती है जिसमें एक बाहरी सिरस पेरिटोनिल तह, एक मध्य धारीविहीन पेशीय उत्तक की तह तथा एक भीतरी श्लेष्मा की तह जो कि पित्त की नलियों के अस्तर तक जाती है। पित्ताशय की गर्द से सिस्टिक नली जो लगभग 1.5 इंच होती है तो जो यकृत नली से मिल जाती है और इस प्रकार सामान्य पित्त नली बनाती है जो पित्ताशय के सिकुड़ने व फैलने की क्रिया से पित्त को डयूओडिनम से छोटी आंत में पहुंचाती है।

पित्ताशय पित्त के लिये गोदाम का कार्य करता है, पित्त एक क्षारीय द्रव है एक सामान्य व्यक्ति में दैनिक रूप में 500 से 1000 मिलीग्राम पित्त यकृत के कोषों से रिसता है व रिसने का कार्य लगातार होता है। पित्त में 86% पानी, पित्त के लवण पित्त के पिंगमेन्टस, कोलेस्टेरोल, म्यूसिन तथा अन्य पदार्थ होते हैं। पित्त के लवण चिकनाई तोडने क्रिया को सुविधाजनक बनाते हैं व चिकनाई को सोखने में सहायता करते हैं व पित्त के पिंगमेन्टस नष्ट हुये लाल रक्त कोषों से विशेषकर तिल्ली तथा अस्थिमज्जा हेमोग्लोबिन के टूटने से बनते हैं जो पित्त के साथ मिलकर छोटी आंत में पहुंचकर कुछ रक्त प्रवाह में सोख लिये जाते हैं व कुछ म ल मूत्र को रंग देते हैं जो व्यक्ति के स्वस्थ होने का संकेत देते हें । पित्त पाचन क्रिया में सहायता करता है यदि पित्त अधिक निकलने से कब्ज, सिरदर्द, भूख न लगना, मुंह का स्वाद कड़वा, खट्टी डकार, दस्त आदि।

पित्ताशय में मौजूद पित्त में अतिरिक्त केलोस्ट्रॉल एंजाइम नहीं घुल पाते हैं। जिससे पित्त रस जमकर ठोस पत्थर का आकार लेकर पित्ताशय की पथरी बन जाता है। पित्त पथरी का प्रकोप 12-15% ही होता है जो महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा अधिक होता है। इस तरह के पत्थर पित्ताशय में 1 से लेकर 1000 तक रह सकते हैं जो बिना किसी हानि किये मल के साथ बाहर निकल जाते है। यदि पथरी बड़ी हो जाती है जो पित्त नली में फस जाती है तो भयानक तकलीफ होती है जिसे पित्तशूल का दर्द या गॉल स्टोन कालिक कहते हैं। इस दर्द में पहले असहनीय दर्द जो प्रायः भोजन के 2-3 घंटे बाद होता है यह सीने के दाहिने और कंधे और हाथ तक दर्द फैल जाता है। यकृत में दर्द, यकृत बड़ा हो जाता है रोगी

छटपटाता है, नाड़ी क्षीण हो जाती है, उल्टी होना, शरीर ठंडा होना सांस लेने में कष्ट, बुखार आना, दर्द की तकलीफ से कभी-कभी बेहोशी आ जाती है, जब तक पथरी छोटी आंत में नही आ जाती है तब तक दर्द होता है जिसका कारण उल्टी होने से पित्त नली ढीली हो जाती है तो पथरी वापिस पित्ताशय में लौट जाती है। यदि पथरी पित्त नली में पड़ी रहती हैं जो पित्त निकलकर आंत में नही जा पाता है और खून मिल जाता है जो कामला या जॉण्डिस रोग पैदा करता है।

पथरी बाहर निकलने के समय अगर पित्त नली फट जाती है तो पेरिटोनाइटिस हो जाता है। जो प्राण घातक रोग होता है। पथरी बाहर न निकले तो उसी जगह पर घाव हो जाता है उसको बिलियरी-फिश्चुला कहते है जो भी बहुत घातक होता है।

कई घंटो से लेकर कई दिनों, कभी-कभी सप्ताह से अधिक दिनों तक तकलीफ रहती है। जब पथरी स्थिर हो जाती है तो आराम पड़ जाता है।

40 वर्ष की आयु में मोटापा, गतिहीन जीवन शैली, अत्याधिक वसा युक्त भोजन मधुमेह, भूखा रहना, अपने वजन को एक दम कम करने से, बाहर का भोजन करना, शराब व अन्य नसा व मांसाहार आदि प्रमुख कारण है।

नियमित व्यायाम करना, कम केलोरी का आहार भोजन में प्रतिदिन 35 ग्राम फाइबर का उपयोग, मेंदा, आलू, पास्ता व बहार का बना नाश्ता भोजन नहीं करना। फेटी एसिड और ओमेगा का उपयोग, विटामिन सी युक्त ताजें फलों का भोजन में समावेश करना, अधिक समय तक भूखा नहीं रहना, ज्यादा काफी, चाय का उपयोग से बचना चाहिये। तेज मसाले, पुराना अचार, ज्यादा खट्टे पदार्थों का उपयोग नही करना।

सभी चिकित्सा पद्धति में नहीं निकले तो समय पर उपचार से नियंत्रण संभव है यदि पथरी उपचार से नहीं निकले तो सर्जन भी सलाह लेकर चिकित्सा करवाना उचित रहता है।

होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में लक्षणों के आधार पर कैलकेरिया कार्ब, बखेरिस बलगेरिस, चाइना,लाइकोपोडियम, मेन्थापिपरेटा 6×, कोलेस्टीनम 2× आदि।

घरेलू प्राथमिक उपचार-दर्द के स्थान पर खूब गरम पानी में फ्लेनेल कपड़ा गीला कर निचोड़ करके पेट पर रखना, व रोगी को गरम पानी अधिक पिलाने से आराम मिलता हे। ओलिव आयल, ग्लिसरिन का उपयोग लाभदायक है। उक्त दवाईयों को उपयोग पूर्व अनुभवी चिकित्सक से सलाह लेकर करना चाहिये।

पथरी की दवा पंचबालयति मंदिर संस्कार सागर कार्यालय से दी जाती है।

हास्य तरंग

1. चुनावी सभा में मंत्री जी भाषण दे रहे थे हमें देश में दलहन फसल लगाना चाहिये। तभी एक विरोधी पार्टी का कार्यकर्ता खड़ा होकर बोला मंत्री जी चारा लगाने के बारे में आपका क्या विचार है। मंत्री जी ने बैठने का ईशारा करते हुये कहा-पहिले इन्सानों की खुराक के बारे में बता दूं फिर तुम्हारे बारे में बताऊँगा।

2. बड़कुल जी-वकील साहब उसने बहुत अपमान किया है, आप मेरी तरफ से मान हानिक का दावा कर दीजिये। वकील- शांति रखिये मुझे सभी बातें शुरु से बताइये। बड़कुल जी उसने मुझे सबके सामने बेहद गंदी गालियाँ दी, झूठे आरोप लगाये और यहाँ तक कह गया कि तुम नरक में जाओगे। वकील-अच्छा, फिर आपने क्या किया। मैं सीधा आपके पास चला आया।

3. दो नई विवाहित सहेलिया आपस में बातें कर रही थी। सुरभि-आशी क्या तुम्हें नही लगता कि घर पर स्वयं भोजन बनाने में काफी बचत होती है। आशी-हाँ-हाँ क्यों नहीं शादी से पूर्व मेरे पति जितना खाते थे, अब तो उससे आधा भी नहीं खाते हैं।

4. डॉक्टर मरीज की आंखों की जांच कर कहता है अब आप हमारे यहाँ से तैयार किये चश्मा को लगाकर पढ़ सकोगे। मरीज डॉक्टर साहब अरे वाह, यह तो एक बड़ा अचम्भा होगा क्योंकि मुझे पड़ना भी नहीं आता था।

5. जज- (चोर से) तुम्हें एक ही फ्लेट में तीन बार चोरी करने के आरोप में सजा मिली है। चोर क्या करू जज साहब फ्लेट के बाहर लिखा था पुनः पधारे।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✻ बिच्छू युद्ध

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- खेल क्र. 111 की तरह बने बिच्छू टक्कर मार कर एक-दूसरे को बाहर करेंगे। जो बिच्छू गिर जायेगा तथा उसकी पूंछ जमीन से लग जायेगी। वह भी बाहर हो जायेगा।

✻ मेंढक छू

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- पूर्व खेल की तरह छूने वाला (अ) मेंढक बनकर सबको छुएगा। मेंढक की टाँग जिस खिलाड़ी के घुटने से नीचे लग जायेगी वह बाहर हो जायेगा।

✻ कारगिल युद्ध

खिलाड़ियों की संख्या- 8-10

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- दो दल एक मंडल के अंदर तथा एक बाहर रहेगा। सीटी बजने पर बाहर वाले खिलाड़ी वालों को खींचकर बाहर लाने का प्रयास करेंगे। जो बाहर आ जायेगा। वह खेल से बाहर हो जायेगा। अन्दर वाले खिलाड़ी बाहर वालों को अन्दर खींचकर उनकी पीठ धरती पर लगायेंगे। जिसकी पीठ लग जायेगी। वह भी खले से बाहर हो जायेगा। जिस दल के सब खिलाड़ी आऊट हो जायेंगे। वह पराजित होगा।

बाल कहानी

भूल स्वीकार करो और लौट चलों

बात 1982 कि हैं 1 दिसम्बर की दोपहर को मैंने ग्यारसपुर से बिहार किया था, सुनेहरी धूप ठण्डे में सबको अच्छी लग रही थी चलते-चलते शाम के 5 बजे चुके थे, तेंदा गांव जाना था तेंदा की ऊँची पहाड़ी बहुत दूर से पास दिख रही थी। शोरकट का लोभ मन में छा चुका था, जल्दी पहुँचाने की ललक थी, उसी समय सीधा रास्ता दिखा, कच्चा रास्ता अच्छा था। हैदरगढ़ का पप्पू साथ में चल रहा था, पप्पू ने कहा ब्रह्मचारी जी ये, रास्ता तेंदा पहुचेगा इसमें हमें संदेह दिखा रहा हैं तब तक पक्के रास्ते से 2 किलोमीटर दूर निकल चुके थे मैंने कहा घबराओ नहीं जो ये दो आदमी पीछे आ रहे हैं उनसे रास्ता समझा लेते हैं फिर आगे बढ़ते हैं पाँच मिनिट तक इंतजार किया, तब तक वे दोनों राहगीर भी पास में आ गये थे तब उनसे पूछा कि ये मार्ग तेंदा जा रहा हैं। नहीं ये रास्ता तो पिपरीया जा रहा हैं तब पप्पू ने कहा तेंदा तो सीधा दिख रहा है। तब बुर्जग राहगीर ने कहाँ रास्ता सीधा तो दिख रहा है मगर तेंदा नहीं जायेगा, पप्पू ने कहा कोई न कोई रास्ता होगा, तब बुर्जग व्यक्ति ने कहाँ यहाँ से तेंदा तो आप कैसे भी नहीं जा सकते हो चक्कर में जरूर पड़ सकते हो। या फिर हेलीकॉप्टर से जरूर तेंदा जा सकते हो और यहाँ से लौटना और अपनी लौटना भूल स्वीकार करना ही जरूरी हैं। भूल स्वीकारो और सही रास्ते पर चलो।

नियमसार में प्रतिपादित जीव तत्व

✻ एलक सिद्धांतसागर जी महाराज ✻

आचार्य कुन्दकुन्द के अनमोल ग्रंथ रत्नों में परमागम ग्रंथ नियमसार 187 गाथाओं में निबद्ध हैं ग्रंथ में बारह अधिकारों के माध्यम से अध्यात्म तत्व का सरल सुबोध निरूपण किया गया है। इन बारह अधिकारों में जीव अधिकार, अजीव अधिकार, शुद्ध भाव अधिकार, व्यवहार चारित्र अधिकार, निश्चय प्रतिक्रमण अधिकार, निश्चय प्रत्याख्यान अधिकार, परमालोचना अधिकार, शुद्ध निश्चय प्रायश्चित अधिकार, परम समाधि अधिकार, परमभक्ति अधिकार, निश्चय परमआवश्यक अधिकार, शुद्धोपयोग अधिकार।

इन सब अधिकारों का वर्गीकरण तीन रूप में किया जाता है सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान के अंतर्गत शुद्धभाव अधिकार को समाहित किया जा सकता है तथा सम्यक्चारित्र के अंतर्गत व्यवहार चारित्र अधिकार को रेखांकित किया गया है तथा निश्चय चारित्र के अंतर्गत परमार्थ प्रतिक्रमण से लेकर शुद्धोपयोग अधिकार तक आठ अधिकारों का समायोजन किया गया है। प्रस्तुत ग्रंथ की रचना के दो आधार हैं।

1. मार्ग 2. मार्ग का फल

मार्ग- मार्ग शब्द का अर्थ उपाय भी होता है अतः मोक्ष के उपाय को मोक्ष को मार्ग कहा जाता है मोक्ष का मार्ग सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र रूप ही है यही रत्नत्रय रूप मार्ग सभी जिनागम में प्रतिपाद्य हैं। इसी रत्नत्रय को प्राप्त करने की भावना जैन साधना विधि का आधार है।

मार्ग फल- सम्पूर्ण साधना का फल रत्नत्रय का फल निर्वाण या मोक्ष सुख ही निश्चित किया गया है यही मोक्ष का स्वरूप आत्मा की शुद्ध अवस्था का नाम है।

नियम शब्द से आशय- नियम शब्द की उत्पत्ति नि+यम= चारों तरफ से जिससे कार्य की सिद्धि निश्चित होती है। उस विधि को नियम कहते हैं अर्थात् मोक्ष के कारण को नियम कहते हैं नियम दो प्रकार के होते हैं- 1. कारण नियम 2. कार्य नियम।

परम पारणामिक भाव से स्थित स्वभाव अनन्त चतुष्टय आत्मक शुद्ध ज्ञान चेतना परिणाम कारण नियम हैं। और सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सक्यक्चारित्र कार्य नियम हैं अतः विपरीतता का परिहार कर देने के कारण से सार शब्द नियम के साथ जुड़ जाता है अतः नियमसार शीर्षक सार्थक सिद्ध हो जाता है।

मोक्ष के उपाय- आचार्य कुन्दकुन्द देव ने सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र को भेद रत्नत्रय के रूप में तथा अभेद रत्नत्रय के रूप में मोक्ष का उपाय नियम से प्रतिपादित किया है तथा इस नियम का फल परम निर्वाण कहते हुये प्रत्येक का वर्णन किया है।

सम्यग्दर्शन- आचार्य कुन्दकुन्द देव ने नियमसार ग्रंथ में सम्यग्दर्शन की परिभाषा सुनिश्चित करते हुये कहा है आप्त आगम और तत्वार्थ की श्रद्धा करने से सम्यग्दर्शन होता हे इस परिभाषा में तपोधन को ग्रहण नहीं किया गया है यह विचारणीय है।

आप्त स्वरूप- आचार्य कुन्दकुन्द देव ने शंका रहित आप्त का स्वरूप सुनिश्चित करते हुये उन्हें अठारह दोषों से रहित वीतरागी मान्य किया है एवं उन अठारह दोषों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है 1. शारिरिक दोष, 2. मानसिक दोष, 3. आध्यात्मिक दोष।

शारिरिक दोष- शारिरिक दोष आठ होते हैं 1. जन्म, 2. जरा, 3. मरण, 4. भूख, 5. प्यास, 6. स्वेद (पसीना), 7. रोग, 8. निद्रा

मानसिकदोष- 1.भय, 2. विस्मय, 3. चिन्ता, 4. खेद, 5. मद, 6. रति, 7. अरति (उद्वेग)

आध्यात्मिक दोष तीन होते हैं- 1. राग, 2. दोष, 3. मोह तथा आप्त को दोष रहित केवल ज्ञान आदि वैभव से युक्त मानते हुये वीतरागी सर्वज्ञ और हितोपदेशी के रूप में मान्य किया है सचेत करते हुये कहा है इनसे विपरीत परमात्मा नहीं होते हें।

आगम स्वरूप- सम्यग्दर्शन का आधार आगम भी है जिसकी व्याख्या करते हुये आचार्य श्री कहते हैं पूर्वा पर विरोध रहित आप्तमुख से निर्गतवाणी को आगम कहा जाता है और उस आगम से ही तत्वार्थ का प्रतिपादन होता है।

तत्वार्थ के रूप- तत्वार्थ शब्द अपने अंतर्गत जीव पुद्गल धर्म, अधर्म, आकाश, और काल का ग्रहण करता है और यही शब्द जीव, अजीव, आश्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष का स्पष्टीकरण करता हे। जीव और पुद्गल की विशेषताओं से सात तत्त्वों का संकलन होता है।

जीवतत्त्व की विवेचना- जीव को आचार्य कुन्दकुन्द देव ने उपयोग मय माना है उपयोग की परिभाषा सुनिश्चित करते हुये कहा है कि चैतन्य संबधी आत्मा के व्यापार को उपयोग कहा जाता है वह उपयोग दो प्रकार का होता है।

1. ज्ञानउपयोग, 2. दर्शन उपयोग

ज्ञान उपयोग ही स्वभाव विभाव के आधार पर दो भागों में विभाजित हो जाता है 1. स्वभाव ज्ञान, 2. विभाव ज्ञान। स्वभाव ज्ञान के अंतर्गत मात्र केवलज्ञान ग्रहण किया गया है। विभाव ज्ञान के अंतर्गत, कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यय आते हैं।

दर्शन उपयोग भी दो प्रकार से प्रतिपादित किया है 1. स्वभाव दर्शन उपयोग 2. विभाव दर्शन उपयोग।

स्वभाव दर्शन उपयोग के अंतर्गत केवलदर्शन आता है और विभाव दर्शन उपयोग के अंतर्गत चक्षुदर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, ये तीन दर्शन आते हैं।

केवलज्ञान- केवलज्ञान को अतीन्द्रिय असहाय और सम्पूर्ण द्रव्य गुण और पर्याय को जानने वाला सिद्ध किया गया है यह ज्ञान साकार उपयोग के अंतर्गत आता है केवलज्ञान सविकल्प होता हे, तथा केवल दर्शन सामान्य सत्ताग्राही निर्विकल्प होता है।

जीव की पर्याय की दृष्टि से भेद- जीव के मुख्य चार पर्यायें सिद्ध की गई हें ये सभी विभाव पर्यायें हैं।

इनके अंतर्गत नरक तिर्यंच, मनुष्य और देव का भेद होता है तथा इन चारों के अंतरभेद भी होते हैं नरक के पृथ्वी की दृष्टि से सात भेद होते हैं। तिर्यंच के जीव समास की दृष्टि से चौदह भेद होते हैं। मनुष्य के भूमि की दृष्टि से दो भेद होते हैं (कर्मभूमि, भोगभूमि) तथा देवों के चार भेद होते हैं, भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिका इन द्रव्यों की स्वभाव पर्यायें अर्थपर्याय के रूप में मान्य की गई हैं।

कर्ता-भोक्ता- जीव को व्यवहार नय से पुद्गल कर्म, नौकर्म का कर्ता-भोक्ता स्वीकार किया गया हैं एवं निश्चय नय से जीव आत्मा को पौद्गलिक कर्म नौकर्म का कर्ता-भोक्ता नहीं माना है। किन्तु निज चेतन परिणाम का ही कर्ता-भोक्ता मान्य किया है अन्त में द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक अर्थात् निश्चय व्यवहार नय को सापेक्ष दृष्टि से देखने पर ही मोक्ष की सिद्धि एवं तीर्थ का प्रवर्तन संभव होता है।

जीव तत्व के इन सब विवेचन को सुनने और समझने के बाद यह परिणाम निकलता है कि जीव तत्व के स्वरूप को समझे बिना सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हो सकती है अतः जीव तत्व का चिंतन ही मोक्ष पुरुषार्थ सिद्ध करने में अनिवार्य होता हैं।

संस्कार गीत

पाठशाला इतनी शक्ति हमें

मन को प्यारी लगे पाठशाला
ज्ञान रत्नों की सुन्दर ये माला
1.
जो भी शिक्षा यहाँ आता पाने
ज्ञान करूणा धरम गीत गाने
ये ही संस्कार शिक्षा की शाला
2.
पुण्य के मोती तो उज्जवल मिलेंगे
जीवन बगिया में सुख तरू लगेंगे
महके खुशियो का पुण्य प्यारा
3.
सीखें आदर्श जीवन के सारे
हम बने अब जमीं के सितारे
जिंदगी भर न हो पाप काला
4.
वीर वाणी पर श्रद्धा करें हम
मोक्ष मारग पर आगे बंदे हम
रोज जायेंगे हम पाठशाला

बाल कविता

भारत अपना स्वच्छ बनाये

आओ बच्चों अलख जगायें
भारत अपना स्वच्छ बनायें
रोगों से हम करें लड़ाई
अपने घर की करें सफाई
अपना मुहल्ला रक्खें साफ
रोग करेंगे हमको माफ
व्यर्थ न जाये पैसा अपना
गांधी का पूरा हो सपना
घर घर में अब कह दो बात
चाहे हो कोई भी जात
नगर स्वच्छ हरा बनायें
आओ बच्चों अलख जगायें।

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

शिखरजी-श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मध्यलोक मधुवन शिखर जी झारखंड में मुनि श्री पुण्यसागर महाराज जी के करकमलों से 21 जनवरी 2022 को क्षुल्लिका उज्जवलामति माताजी तथा अरूणादेवी गुलवाडा आसाम को दीक्षायें दी गई जिनके नाम क्रमशः आर्यिका उज्जवलामति माताजी, क्षुल्लिका उत्तममति माताजी नाम रखा गया।

पुष्पगिरि-आचार्य श्री पुष्पदंतसागर जी महाराज के करकमलों से श्री दिगम्बर अतिशय क्षेत्र पुष्पगिरि सोनकच्छ मध्यप्रदेश में 23 जनवरी 2022 को मुनि श्री प्रज्ञासागर महाराज एवं मुनि श्री अरूणसागर महाराज जी को आचार्य पद सेशोभित किया गया। तथा ब्र. संजू भैया को क्षुल्लक दीक्षा दी गई जिसके संस्कार आचार्य श्री पुष्पदंत सागर महाराज जी ने किये जिनका नाम क्षुल्लक प्रमयसागर महाराज रखा गया।

आगामी दीक्षायें

घाटोल (राजस्थान)- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री शुद्धसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. निर्मल भैया घाटोल राजस्थान को दिनांक 7 फरवरी 2022 को क्षुल्लक दीक्षा दी जावेगी।

समाधिमरण

शिवाड़ (राजस्थान)-क्षुल्लिका सुकौशल मति माताजी का समाधिमरण शिवाड राजस्थान में आर्यिका संगममति माताजी के सान्निध्य में 25 दिसम्बर 2021 को हुआ।

कैकड़ी (राजस्थान)- आचार्य निपुणनंदी महाराज के सान्निध्य में कैकड़ी राजस्थान में आर्यिका मुक्तिश्री माताजी का समाधिमरण 28 दिसम्बर 2021 को हुआ।

कोपरगांव (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री परमानंद सागर महाराज जी का समाधिमरण 14 जनवरी 2022 को दोप. 1.50 मिनिट पर कोपरगांव महाराष्ट्र में हुआ।

गया बिहार- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में आर्यिका श्री विशाश्री माताजी जो विश्रुतश्री माताजी के संघ में थी उनका समाधिमरण गया बिहार में 06 जनवरी 2022 को हुआ।

उदयपुर (राजस्थान)- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य सत्यागसागर महाराज जी का समाधिमरण गीगंला सलुम्बर उदयपुर राजस्थान में 18 जनवरी 2022 को दोप. 2.30 बजे हुआ।

दुर्ग (छत्तीसगढ़)- मुनि श्री विश्वार्जव सागर महाराज जी का समाधिमरण दुर्ग छत्तीसगढ़ में आर्यिका बिवोधश्री माताजी के ससंघ सान्निध्य में 24 जनवरी 2022 को प्रातः 9 बजे हुआ।

कुंथुगिरि (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री कुंथुसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में कुंथुगिरि महाराष्ट्र में उनके ही शिष्य मुनि श्री अभयनंदी महाराज जी का समाधिमरण 25 जनवरी 2022 को प्रातः 4 बजे हुआ।

कुंथुगिरि (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री कुंथुसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में कुंथुगिरि महाराष्ट्र में आचार्य श्री विरागसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री विश्वतीर्थसागर महाराज का समाधिमरण 25 जनवरी 2022 रात्रि 10 बजे हुआ।

सिंगोली (म.प्र.)- आचार्य श्री सन्मतिसागर महाराज दक्षिण के शिष्य मुनि श्री शांतिसागर महाराज जी का समाधिमरण मुनि श्री विद्यासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में सिंगोली (म.प्र.) में 20 जनवरी 2022 को रात्रि 11.45 बजे हुआ।

उदयपुर (राजस्थान)- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका अभेदमति माताजी समाधिमरण श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर प्रांगण उदयपुर राजस्थान में 17 जनवरी 2022 को हुआ।

इंदौर- श्रीमति कंचनदेवी सेठी आनंद भवन तुकोगंज इंदौर का 98 वर्ष की उम्र में 17 जनवरी 2022 को देवलोकगमन हो गया। आप श्री दिगम्बर जैन उदासीन श्राविका आश्रम कंचनबाग इंदौर की परम संरक्षक, समाज सेवी, स्व. श्री माणिकचंद सेठी की धर्मपत्नि एवं श्री दिगम्बर जैन श्राविका आश्रम के सहमंत्री श्री अरूण सेठी, अरविन्द सेठी, अंबरी सेठी, सुशील सेठी, योगेन्द्र सेठी, पूज्य माताजी थी । ये बहुत ही विनयवान, सरलस्वभावी, जनविश्वासी, धार्मिक प्रवृत्ति, दानशीला व धर्म के मार्ग पर पूरे परिवार को साथ लेकर चलने वाली महिला थी। माँ ने अपने कर्त्तव्यों का बहुत ही निष्ठा से पालन करते हुये परिवार के सभी पुत्रों बहुओं, पोते, पतियों व परपोते, पातियों को अच्छे संस्कारों से पल्लवित करते रही। इस उम्र में ही देवदर्शन की प्राथमिकता को खूब बखूबी से निभाया। कोई भी जैन मंदिर हो वहाँ कुछ न कुछ दान राशि भेजने में निसंकोच उदारता का परिचय देती रही। माँ साहब कंचन देवी में आत्म विश्वास, साहस, आत्मबल, कूट कूट कर भरा हुआ था। नित्य प्रति देवदर्शन, पूजन, प्रवचन, स्वाध्याय, पाठ इत्यादि से अपने जीवन को सजाये रखा था। अपितु परिवार में भी उसकी ऊर्जा को फैला रखी थी। वे एक आदर्श प्रेरणा स्तोत्र महिला थी । वे अष्टान्हिका, चातुर्मास, व पर्यूषण के समय संयम नियम का पालन परिवार के साथ प्रतिवर्ष करती थी। अनुकूल स्वास्थ्य के समय माँ साहब ने बहुत से उपवास व एकासन भी किये। अंतिम क्षणों बाल ब्रह्मचारी पंडित श्री रतनलाल जी शास्त्री ने माँ साहब को धार्मिक स्तोत्र णमोकार मंत्र इत्यादि सुनाते रहें व माँ साहब चेतन अवस्था में सुनते हुये उच्चारण करते हुये, सभी का त्याग करते हुये, शांत मन से सभी से क्षमा याचना करते हुये अपनी आत्मा विलीन हो गई। वे अपने पीछे एक भरा पूरा परिवार छोड़ गई उनके निधन पर जैन जैनत्व समाज ने अनेक आत्मीयजनों भावभिनी श्रद्धांजलि अर्पित की। **श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, श्री दिगम्बर युवक संघ, संस्कार**

सागर परिवार उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करता हैं ।

शीला बाई जी का समाधिमरण पंचबालयति इंदौर-

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के प्रिय शिष्य एलक श्री सिद्धांतसागर महाराज जी गृहस्थ अवस्था की माँ श्रीमति शीलाबाई जी का समाधिमरण 24 जनवरी 2022 को रात्रि 8.30 बजे श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में णमोकार मंत्र पढ़ते-पढ़ते ब्र. जिनेश मलैया के सान्निध्य में हुआ। आप आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के पास नेमावर में पहुंचकर घर का त्याग, परिग्रह का त्याग था, दसवीं प्रतिमा के व्रत धारण किये थे। आप श्री गुलझारी लाल जी सप्तम प्रतिमाधारी की धर्मपत्नि थी आपको श्री गुलझारी लाल जी ने पढ़ी लिखी नहीं होने के बाद भी स्वाध्याय के प्रति रूचि जगाकर आत्मदृढ़ कर दिया था । आप बहुत ही विनयवान, सरल स्वाभावी, दृढ़विश्वासी, धार्मिक प्रवृत्ति वाली श्राविका थी । आपने अष्टान्हिका पर्यूषण, सोलहकारण, रत्नत्रय, चौसठ ऋद्धि आदि कई व्रत उपवास एवं एकाशन पूर्वक किये थे। आपकी समाधि के समाचार सुनते ही सभी संघों ने आशीर्वाद भेजा । तथा सभी श्रेष्ठीजनों, विद्वानों अनेक श्रावकों श्राविकाओं ने उनके प्रति ब्र. जिनेश मलैया के व्हाट्सअप के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की । तथा दाह संस्कार के समय विश्व हिन्दु परिषद के अंतराष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हुकुमचंद जी सावला इंदौर, श्री दिगम्बर जैन विद्वत परिषद के महामंत्री श्री महेन्द्र कुमार जी मनुज, श्री अखिल भारतीय पत्रकारिता संघ के अध्यक्ष तथा श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति ट्रस्ट के मंत्री श्रुत सिद्धांत शोधपीठ के मंत्री एवं अनेक संस्थाओं से जुड़े ब्र. जिनेश मलैया, विजयनगर समाज के अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र जी, सुखलिया समाज के अध्यक्ष श्री विनोद जी, महालक्ष्मी समाज के अध्यक्ष श्री राजेश जी (सागर वाले), गोलापूर्व समाज के अध्यक्ष श्री डी.के. जैन साहब (पूर्व डी.एस.पी), पंचबालयति मंदिर के कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द जी, अहिंसा सोशल ग्रुप श्री संजय अहिंसा, श्राविका आश्रम इंदौर से ब्र. संगीता दीदी, ब्र. अनिता दीदी तथा ब्र. संगीता दीदी दमोह, ब्र. डॉ. सीमा दीदी अशोकनगर तथा श्री दिगम्बर जैन नसिया छात्रावास से पंडित भरत शास्त्री इंदौर के साथ-साथ अनेक श्रावकों श्राविकाओं ने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। **श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, श्री दिगम्बर युवक संघ, संस्कार सागर परिवार उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करता हैं ।**

वर्ग पहेली 269

1	2	■	3		■	4	5	
6		■		■	7			■
8		■	■	9			■	10
■	■	11	■	12			■	
13	14		15	■	■	■	16	
17		■	1		■		19	■
	■	20		■	21		■	22
	■	23		24	■	25		
26			■	27		■	28	

बाये से दाये

1. मछली -2
3. दर्शन का भाव -2
4. अच्छी नीति रखने वाला अथवा नासा से जुड़ी हुई एक महिला का नाम -3
6. गर्व, ठसक -2
7. विरक्ति -3
8. दुग्ध, दूध -2
9. बुलउआ -3
12. एक वाद्य यंत्र जिस पर चमड़ा मढ़ा होता -3
13. ओस बूंद -4
16. वचन, वाक्यमाला -2
17. रसन इन्द्रिय का विषय -2
18. राजा महाराजाओं का वाहन -2
19. उम्र आठ कर्म में से एक कर्म -2
20. सीमा वाचक सर्वनाम -2
21. मार्ग -2
23. देश राष्ट्र -3
25. गंध, बू -3
26. बहने वाला पदार्थ प्रवाही पदार्थ -3
27. हाथी, छत्तीस इंच का नाप -2
28. दिन दिवस, युद्ध -2

ऊपर से नीचे

1. मछली जैसी आंख वाली सुंदरी -3
2. दृष्टि -3
3. घमंड, मद -2
4. अप्सरा, देवकन्या -4
5. पॉलिसी, विचारधारा, आचार व्यवहार -2
9. मूर्ति, प्रतिमा -2
10. जल छानने के बाद बचे हुये जल की जीव राशि -3
11. चित्त अंतःकरण -2
13. शरण में आया हुआ -5
14. पर्याप्त -2
15. एकमणी का नाम -4
16. हवा पवन -2
19. जिनवाणी, जिनवचन -3
20. एक हथियार -3
22. मगर, घड़ियाल, एक राशि -3
24. पर्वत या अदद -4

वर्ग पहेली 267 का हल

1 दा	2 मो	3 द	र	4 चा	5 पे	क	6 र	■
7 म	ह	ल	■	8 त	रू	■	9 ज	10 रा
न	■	■	11 शा	क	■	12 स	त	ह
13 दी	14 न	■	म	■	15 क	र	■	त
■	16 ज	17 र	■	18 आ	■	19 प	तं	ग
20 ग	र	ज	■	दि	■	ट	■	ढ़
ण	■	■	21 गु	ना	ह	■	22 मा	■
त	■	23 अ	ना	थ	■	■	24 त	25 प
26 त्र	स	■	■	■	27 मृ	दु	म	ति

नाम ....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

सच्ची शरण ये प्रभु के चरण

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।

२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।

३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.

४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

शीला बाई जी का समाधिमरण

पंचबालयति इंदौर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के प्रिय शिष्य एलक श्री सिद्धांतसागर महाराज जी गृहस्थ अवस्था की माँ श्रीमति शीलाबाई जी का समाधिमरण 24 जनवरी 2022 को रात्रि 8.30 बजे श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में णमोकार मंत्र पढ़ते-पढ़ते ब्र. जिनेश मलैया के सान्निध्य में हुआ। आप आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के पास नेमावर में पहुंचकर घर का त्याग, परिग्रह का त्याग था, दसवीं प्रतिमा के व्रत धारण किये थे। आप श्री गुलझारी लाल जी सप्तम प्रतिमाधारी की धर्मपत्नि थी आपको श्री गुलझारी लाल जी ने पढ़ी लिखी नहीं होने के बाद भी स्वाध्याय के प्रति रूचि जगाकर आत्मदृढ़ कर दिया था। आप बहुत ही विनयवान, सरल स्वाभावी, दृढ़विश्वासी, धार्मिक प्रवृत्ति वाली श्राविका थी। आपने अष्टान्हिका पर्यूषण, सोलहकारण, रत्नत्रय, चौसठ ऋद्धि आदि कई व्रत उपवास एवं एकाशन पूर्वक किये थे। आपकी समाधि के समाचार सुनते ही सभी संघों ने आशीर्वाद भेजा। अनेक श्रावकों श्राविकाओं ने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। **श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, श्री दिगम्बर युवक संघ, संस्कार सागर परिवार उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करता हैं ।**

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

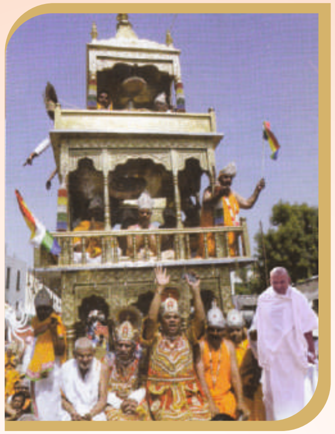

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 31/01/2021, पोस्टिंग दिनांक : 03/02/2022